INTERNATIONAL MAGAZINE
RNI NO. 64884/96

30/-

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीअै एकु एकु वखाणीअै।।
आतम पसारा करण हारा प्रभ बिनां नहीं जाणीअै।।

आतम मार्ग

February 2018

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।

इतु मारगि पैरु धरीजै।।
सिरु दीजै काणि न कीजै।।

आत्म मार्ग

वर्ष तेइसवां - अंक पहला, फरवरी 2018

गुरद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब

संचालक

श्रीमान सन्त बाबा वरियाम सिंह जी महाराज (ब्रह्मलीन)
तथा संत माता (बीजी) रणजीत कौर जी (ब्रह्मलीन)

चेयरमैन
सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

एडिटर-इन-चीफ
सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

प्रबन्ध सम्पादक
भाई सुखविंदर सिंह

मुख्य सम्पादक
डा. जगजीत सिंह (97798 16909)

मासिक पत्रिका न पहुँचने सम्बन्धी पूछताछ

यदि आपको माह की 15 तारीख तक आत्म मार्ग पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती है तो आप कृप्या निम्नलिखित सम्पर्क नम्बरों पर कार्यलय समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक सम्पर्क करने की कृपा करें -

सम्पर्क न. - **84378-12900, 94172-14391, 94172-14379**

Email : atammarg1@yahoo.co.in

Postal Address for any Enquiry, Money Order's :

'ATAM MARG' MAGAJINE
Gurdwara Ishar Parkash, Ratwara Sahib (New Chandigarh) P.O. Mullanpur Garibdas, Teh. Kharar, Distt. S.A.S. Nagar (MOHALI) - 140901, Pb. India

SUBSCRIPTION - शुल्क (देश)

वार्षिक	आजीवन सदस्यता	प्रति कापी
300/-	3000/-	30/-
320/-	3020/-	(For outstation cheques)

SUBSCRIPTION FOREIGN (विदेश)

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 £
Canada	80 Can $	800 Can $
Australia	80 Aus $	800 Aus $

समस्त प्रकाशन अधिकार सुरक्षित हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक सन्त बाबा हरपाल सिंह जी ने 'आत्म मार्ग' जै आफ सैट प्रिंटर्ज, 905 इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, चण्डीगढ़ से छपवा कर मुख्य कार्यालय 'आत्म मार्ग' रतवाड़ा साहिब, डाकखाना मुल्लांपुर, तहसील खरड़, एस.ए.एस. नगर (मोहाली), पंजाब से प्रकाशित किया।

Please visit us on internet at :-
For Atam Marg Email : atammarg1@yahoo.co.in,
Website & Live video -

www.ratwarasahib.in
www.ratwarasahib.org } **(Every sunday)**

Email :sratwarasahib.in@gmail.com

विदेशों में आत्म मार्ग की शाखाएँ

अमेरिका - बाबा सतनाम सिंह अटवाल
फोन तथा फैक्स : 001-408-263-1844

कैनेडा - भाई सरमुख सिंह पंनू, वैनकूवर
फोन : 001-604-433-0408

भाई तरसेम सिंह बैंस - मोबाइल 001-604-862-9525
फोन : 001-604-288-5000

भाई जसबीर सिंह राणू - फोन : 001-604-589-9189

इंगलैंड - बीबी गुरबख्श कौर तथा भाई जगतार सिंह जग्गी
फोन:0044-121-200-2818 फैक्स :0044-121-200-2879,
भाई अरविंदर सिंह (राज) मोबाइल:0044-7968734058

आस्ट्रेलिया : बीबी जस्प्रीत कौर: मोबाइल-0061-406619858

रतवाड़ा साहिब की संस्थाओं के सम्पर्क नम्बर

* आत्म मार्ग मैगज़ीन (पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी)
9417214391, 9417214379, 8437812900

* गुरू गोबिंद सिंह विद्या मन्दिर सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(CBSE) - 0160-2255003

* माता साहिब कौर मुफ्त सिलाई सैंटर - **96461-01996**

* सन्त वरियाम सिंह मैमोरियल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल
(PSEB) अंग्रेजी माध्यम - **95920-55581**

* सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल (मुफ्त)
98786-95178, 92176-93845

* इंटरनैशनल डिवाइन स्कूल आफ़ नर्सिंग -
94172-14382

* इंटरनैशनल डिवाइन कालेज आफ़ ऐजूकेशन (बी. एड.)
94172-14382

* अकाल वृद्ध आश्रम (मुफ्त) **98157-28220**

विशेष जानकारी के लिए

श्री मान जी	-	98551-32009
श्री आखण्ड पाठ साहिब बुकिंग	-	94647-12900
आडियो-वीडियो लाईब्रेरी	-	98728-14385, 98555-28517
केवल टी.वी. नेटवर्क	-	94172-14385

अन्य सम्पर्क नम्बर
98889-10777, 96461-01996, 9417214381

विषय-सूची

1. सम्पादकीय 5
   भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

2. बारहमाहा 6
   डा. जगजीत सिंह

3. बाबाणियाँ कहानियाँ 9
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

4. भेख दिखाइओ जगत कउ लोगन को बस कीन।। 12
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

5. माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ।। 23
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

6. आत्म ज्ञान 29
   सन्त बाबा वरियाम सिंह जी

7. इंग्लैंड में 'संगत टी.वी.' पर साक्षात्कार 40
   सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

8. अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी 44
   भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

9. भक्त रविदास जी 47
   रूपिंदर कौर

10. बड़ा घल्लूघारा 51
    भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

11. गुरबाणी अर्थ भण्डार 52
    सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

12. गुरू गोबिंद सिंह रचित - जफरनामा 55
    सन्त निरंजन सिंह नूर

13. नौवें रत्न - सन्त ईशर सिंह जी महाराज, राड़ा साहिब 57
    ज्ञानी मेहर सिंह जी

14. स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार 61
    डा. स्वामी राम जी

15. विशेष जानकारी - बैंक खाता, आत्म मार्ग मैगजीन सदस्यता प्रारूप, अस्पताल जानकारी, तथा पुस्तक सूची 63

सम्पादकीय

डा. भाई सुखविन्दर सिंह

बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥ 1 ॥
तुम् साचु धिआवहु मुगध मना ॥
ताँ सुखु पावहु मेरे मना ॥ ***अंग - 1176***

बसन्त, उल्लास व बहार आदि सारे समानार्थी शब्द हैं। इनके अर्थों में से बुलन्दावस्था का प्रकटीकरण होता है। बुलन्दावस्था ही खालसे का, गुरसिक्ख का या नाम रसिक आत्मा के जीवन का आदर्श है। नाम के रंग में सराबोर रहने वाला, आत्म मार्ग पर चलने वाला, आत्मिक सूझबूझ वाला व्यक्ति प्रत्येक समय बुलन्दावस्था में ही विचरण करता है तथा उसी में उल्लास भाव में आनन्दित होता है। उसका यह उल्लास भाव में जाना फिर क्षणभंगुर न होकर शाश्वत हो जाता है। 'तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु।। तिसु बसंतु जिसु गुरू दइआलु।। मंगलु तिस कै जिसु ऐकु कामु।। तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु।।'

जिस जीव पर सतगुरू जी दयावान होकर अपनी कृपादृष्टि कर दें तो फिर वे उसे हमेशा के लिए आनन्दातिरेक व उल्लास का भाव प्रदान कर देते हैं।

संसार के प्रत्येक क्षेत्र में नई बहार आने पर प्रसन्नता महसूस की जाती है, लेकिन यह प्रसन्नता क्षणभंगुर ही रहती है। संसार के प्रत्येक सुख के पीछे दुख छिपा हुआ है। सांसारिक तौर पर यह मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में नवीनता के लिए लालायित रहता है, चाहे वह व्यापार, राजनीति, नौकरी, जायदाद या किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो। तकनीकी क्षेत्र की नई-नई खोजों ने नई-नई बहारें मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत कर दी हैं, लेकिन उनके नुक्सान भी साथ ही साथ गतिमान हैं। यदि इन्होंने जीवन को कुछ सुखमय बनाने की कोशिश की भी है तो भी वे किसी न किसी रूप में दुख भी प्रदान करने वाले सिद्ध होते हैं। हाँ, यह बात तो ठीक है कि यदि इनके सकारात्मक गुणों को ध्यान में रखते हुए सही ढंग से इनका प्रयोग किया जाए तो फिर इनके सार्थक परिणाम हमारे सामने आ सकते हैं। लेकिन यहाँ पर एक प्रश्न उत्पन्न हो जाता है कि संसार के प्रत्येक क्षेत्र में आशातीत उन्नति होने के बावजूद भी फिर चहुँओर इतनी कलह-क्लेश व अशान्ति के वातावरण ने जीवन को इतना बेचैन क्यों बनाया हुआ है? क्या कोई ऐसी बहार भी है जो कि कभी भी समाप्त न हो और जिसके प्रभाव से जीवन में प्रत्येक समय हर्षोल्लास ही बना रहे। फूल खिलता है लेकिन समय पाकर वह मुरझा जाता है, राजनैतिक शक्ति आती है, चली जाती है, व्यापार में लाभ होते-होते भारी नुक्सान भी उठाना पड़ जाता है। क्या कोई ऐसी अवस्था भी है जहाँ पर पहुँच कर प्रत्येक जिज्ञासु के मन में सदैव बनी रहती है या यूँ कह लें कि आत्म मार्ग के पथिक की ऐसी इच्छा सदैव बनी रहती है। वह अपने अन्दर की बहार को ढूंढने के लिए सदैव रूहानी पथ पर अग्रसर रहता है। वह इस महान व दुर्लभ प्राप्ति के लिए सतगुरू के आगे सदैव अरदास करता रहता है और फिर इसे सतगुरू जी के माध्यम से यह समझ प्राप्त होती है कि -

सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥
नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥
नानक तिना बसंतु है
जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ॥
हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥
अंग - 1420

गिहि ता के बसंतु गनी ॥
जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥ ***अंग - 1180***

नानक तिना बसंतु है जिन् घरि वसिआ कंतु ॥
अंग - 791

पोसत भंग अफीम मद उतर जाइ प्रभाति।
नाम खुमारी नानका चड़ी रहे दिन रात।

फिर उसे नाम की ऐसी खुमारी चढ़ जाती है कि उस नाम में अभेद हो चुकी आत्मा के लिए सदैव उल्लास ही उल्लास या बसन्त ही बसन्त की अवस्था बन जाती है। फिर चाहे उसके सिर पर आरा चल जाए या उसकी खोपड़ी को रम्बी से उतार दिया जाए, चाहे उसे चरखड़ी पर चढ़ा दिया जाए अथवा उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसे काट दिया जाए, फिर उसका वह आत्मिक उल्लास कभी समाप्त नहीं होता है-

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरै मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ ***अंग - 1365***

(शेष पृष्ठ 8 पर)

फाल्गुन का महीना

(माघि माह की संक्रान्ति - 12 फरवरी, 2018 दिन सोमवार)

डा. जगजीत सिंह
मुख्य सम्पादक

श्री गुरू अरजन देव जी द्वारा रचित राग माझ में तथा श्री गुरू नानक देव जी द्वारा रचित राग तुखारी में फाल्गुन माह)

राग माझ महला 5
फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरू पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥
हरि जेहा अवरू न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥
अंग - 136

शब्दार्थ - उपारजना = उत्पन्न, प्राप्त हुआ, सन्त सहाई = परमात्मा के साथ मिलाप में सन्त सहायक सिद्ध हुए, जाइ = जगह, इह पुनी = मन की इच्छा पूरी हो गई, सहीआं = सहेलियाँ, मंगल = खुशी के गीत, अलइ = गायन किए, लवै न लाइ = पास में भी नहीं आता, हलत-पलत = लोक परलोक, सवारिओन = प्रभु जी ने संवार दिए, राखिअन = प्रभु जी ने बचा लिया, बहुड़ि = दोबारा, जनमै धाइ = दोबारा जन्म धारण नहीं करता है, चरनी पाइ = चरणों पर पड़कर, तिल न तमाइ = तिल मात्र भी लोभ नहीं।

फाल्गुन के महीने में पूस व माघ की कड़ाकेदार सर्दी व पाला तंग नहीं करता है बल्कि इस माह में तो मौसम और भी सुहावना हो जाता है यानि कि सारा वातावरण बहारयुक्त हो जाता है, चहुँओर खुशियों व रंग तमाशों का वातावरण हो जाता है लेकिन गुरू महाराज जी आन्तरिक खुशी की यानि कि आत्मिक आनन्द की बात करते हैं। श्री गुरू अमरदास जी का फुरमान है -

अनंदु अनंदु सभु को कहै अनंदु गुरू ते जाणिआ॥
अंग - 917

अर्थात सभी लोग बाह्य संसार की खुशियों की बात करते हैं जो कि थोड़े समय के लिए होती है और जिसका प्रतिक्रम प्रायः दुःख ही हुआ करता है। वास्तविक आनन्द, वास्तविक खुशी या दिव्यानन्द का रहस्य तो गुरू जी ही बतला सकते हैं। यह आनन्दातिरेक होता है जो कि शाश्वत होता है और जिसका प्रतिक्रम कभी भी बुरा नहीं होता है (फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ।। संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ।।) इस प्रभु-मिलाप में सहायता करते हैं सन्त जन जो कि प्रभु-प्रेम, प्रभु-स्तुति व नाम-जप सिमरन के माध्यम से जीव रुपी स्त्रियों को प्रभु जी के साथ जोड़ देते हैं। पाँचवें महाराज जी का फुरमान है-

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा॥
अंग - 964

सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ॥
इछ पुनी वडभागणी वरू पाइआ हरि राइ॥

इस प्रकार से ऐसी भाग्यशाली स्त्रियों की मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं और उन्हें वह हरि या प्रभु मिल जाता है, जिसकी उन्हें चिरकाल से प्रतीक्षा थी और जिसे अमर-अविनाशी सुहाग की प्राप्ति हो गई वह फिर सच्ची सुहागिन हो जाती है -

बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ
अमिउ दिसटि सिंचंती ॥
बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी
मिले जिसु खोजंती ॥ ***अंग - 460***

मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ॥
हरि जेहा अवरू न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ॥

इस मिलाप के हो जाने की खुशी में फिर वह अपनी सत्संगी व सहेलियों के साथ मिलकर प्रभु जी की स्तुति के गीत गाती है अर्थात आत्मिक आनन्द उत्पन्न करने वाली गुरवाणी का गायन करती है। अब जब सर्व समर्थ व सृष्टि के रचयिता प्रभु-पति का मिलाप हो गया तो फिर यह अनुभव भी प्राप्त हो गया कि ऐसे प्रभु-पति जैसा या उसके समकक्ष कोई और दूसरा न तो कोई है और न ही कोई हो सकता है-

हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ॥

ऐसा पति-परमेश्वर उस जीव रूपी स्त्री का तथा अन्य सभी सत्संगी जथे का लोक व परलोक संवार देता है। वह उन्हें अपने चरणों का ऐसा ध्यान प्रदान कर देता है कि जहाँ पर पहुँच कर कोई भी जीव रूपी स्त्री डोलायमान नहीं होती।

संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ॥

प्रभु जी स्वयं उनके सिर पर कृपायुक्त हाथ रखकर उन्हें संसार-सागर से पार लगा देता है और फलस्वरूप उनका आवागमन का चक्कर समाप्त हो जाता है।

जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ॥

ऐसे परमात्मा के अनेकों गुण हैं, यानि कि उसकी असंख्य विशेषताएँ हैं -

अंतु न सिफती कहिण न अंतु॥
अंतु न करणै देणि न अंतु॥ *अंग - 5*

लेकिन हमारी जिह्वा एक है इसलिए हम उसके असंख्य गुणों को ब्यान नहीं कर सकते हैं -

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा
तू साहिब गुणी निधाना॥ *अंग - 734*

ऐसे प्रभु जी के चरणों के साथ जो जीव जुड़ जाते हैं, वे निश्चित ही संसार सागर से पार हो जाते हैं। (फलगुणि नित सलाहीअै जिस नो तिल न तमाइ।।) इस माह की अन्तिम पंक्ति में सारांश रूप से श्री गुरू जी उपदेश करते हैं कि फाल्गुन माह में रंग तमाशों में से खुशी की तलाश करने की अपेक्षा सच्चे व सर्व-समर्थ प्रभु जी की स्तुति में से शाश्वत आनन्द व खुशी को ढूँढ़ो। उस प्रभु जी को तो अपनी स्तुति करवाने की कोई जरूरत नहीं है बल्कि यह तो हम सब अल्पज्ञ जीवों की ही आवश्यकता है यानि कि इसमें तो हमारा ही भला निहित है।

वर्ष के अन्तिम माह फाल्गुन के बारे में विचार करने के बाद गुरू महाराज जी बारहमाहा के अन्तिम शबद में वर्ष के सभी महीनों का उपदेश सरल रूप में ब्यान करते हुए फुरमान करते हैं -

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरू पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गइे दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥
अंग - 136

अर्थात सारा समय, सारे महीने, सारे दिन व रातें, सारी ऋतुएँ, सारी घड़ियाँ, सारे पल, प्रभु जी की स्तुति करने के लिए ही इस जीव को प्राप्त हुए हैं यानि कि प्रत्येक समय प्रभु जी का स्मरण करने के लिए शुभ है। गुरू जी का उपदेश है -

चलत बैसत सोवत जागत गुरमंत्र रिदै चितारि॥
अंग - 1006

अर्थात प्रत्येक समय चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते गुरू जी का नाम हृदय में होना चाहिए।

प्रस्तुत शबद में निर्णय के तौर पर बतलाया गया है कि जिस-जिस मनुष्य ने नाम का जप किया है, उनके समस्त कार्य सफल हो जाते हैं। (जिनि जिनि नाम धिआइआ तिनके काज सरे।।) जिन-जिन लोगों ने प्रभु जी की अथवा पूरे गुरू की आराधना की है वे प्रभु जी की सच्ची दरगाह में सुरखरू हो जाते हैं। प्रभु जी के चरण ही सारे सुखों का खजाना है। जो जीव प्रभु जी के चरणों के साथ जुड़ जाते हैं, वे विषम समुद्र में से सही-सलामत पार हो जाते हैं, उन्हें प्रभु जी का प्यार व प्रभु जी की भक्ति प्राप्त हो जाती है तथा वे कभी भी माया की तृष्णा रूपी आग में जलते नहीं हैं। नाम जपने वालों के व्यर्थ के झूठे लालच समाप्त हो जाते हैं। उनके मन की भटकन दूर हो जाती है, वे पूर्णरूपेण एक प्रभु जी के आश्रय में टिक जाते हैं तथा अपने मन में एक परम ज्योति परमात्मा को बसा कर सदैव उसी का सिमरन करते रहते हैं। प्रस्तुत शबद की अन्तिम पंक्तियों में महाराज जी कथन करते हैं कि उन जीव रूपी स्त्रियों के लिए सारा समय, सारे महीने, सारे दिन व सारे मुहुर्त शुभ व सुन्दर ही हैं, जिनके ऊपर प्रभु जी की कृपा दृष्टि होती है। गुरू जी भी प्रभु जी के चरणों में विनती करते हैं कि हे प्रभु जी! मेरे ऊपर भी कृपा करो, मैं भी आपके द्वार पर दर्शनों का उपहार मांगता हूँ। यही प्रार्थना हम सब जिज्ञासुजनों की होनी चाहिए।

श्री गुरू नानक देव जी द्वारा राग तुखारी में उच्चारण किए गए बारहमाहा में से फाल्गुन माह का पाठ तथा उसकी सरल व्याख्या -

फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥
अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥
मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ
करि किरपा घरि आए ॥
बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाए ॥
हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥
नानक मेलि लई गुरि अपणै
घरि वरू पाइआ नारी ॥ *अंग - 1109*

व्याख्या - फाल्गुन माह में प्रभु जी का प्रेम प्राप्त करके मन खुशी के द्वारा खिल गया और प्रभु जी अत्यन्त प्यारा लगने लग गया है, अहंभाव मिट गया है, हउमै समाप्त हो गई है, फलस्वरूप अब दिन-रात आन्तरिक तौर पर आनन्द ही आनन्द बना रहता है। प्रभु जी को स्वीकार्य होने पर मन में से दुनिया का मोह समाप्त हो गया है। हे प्रभु जी! कृपा

के हृदय रूपी घर में दर्शन प्रदान कर दीजिए। प्रभु जी से बिछुड़ी हुई स्त्री कई प्रकार के वेश धारण करती है, लेकिन उसे प्रभु-पति के महलों में जगह नहीं मिल पाती है। इसके विपरीत जिस जीव रूपी स्त्री को प्रभु-पति का मिलाप हासिल हो जाता है, समझो कि उसने प्रत्येक प्रकार का श्रृंगार-प्रसाधन कर लिया है और अत्यन्त सुन्दर वस्त्र धारण कर लिए हैं। जिस जीव रूपी स्त्री को गुरू अपने साथ मिला लेता है, उसका हृदय रूपी घर में परमेश्वर रूपी पति के साथ मिलाप हो जाता है। फाल्गुन के सम्बन्ध में उच्चारण किए गए इस शब्द में श्री गुरू नानक देव जी हमें यह उपदेश करते हैं कि प्रभु जी के मिलाप के लिए, सिमरन अभ्यास के लिए, सबसे पहले हउमै का त्याग करना अत्यावश्यक है। 'मोह' भी हउमै का ही एक रूप है -

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ॥
अंग - 560

इसमें दूसरी यह बात बतलाई गई है कि परमात्मा प्यार स्वरूप है इसलिए प्यार के द्वारा किया गया नाम-जप-सिमरन ही हमें उसकी कृपादृष्टि का पात्र बना सकता है -

प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥
तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥
अंग - 640

गुरू जी का फुरमान है कि सबसे सुन्दर, सबसे ऊँची कुल वाला, सबसे चतुर, सबसे बड़ा ज्ञानी, व अत्यन्त घनाढ्य व्यक्ति भी प्रभु-प्रीति के बिना एक जीवित लाश की तरह से ही है -

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत ॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥
अंग - 253

(पृष्ठ 5 का शेष)

फिर सतगुरू जी द्वारा प्रदत्त उस सिद्धान्त की पूर्णता होती है कि 'सिर जावे तां जावे मेरा सिक्खी सिदक न जावे'। इस अवस्था के स्वामी है अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी जिन्होंने अपने शीश को तली पर रखकर तथा 18 सेर (पक्के) वजन वाले खण्डे को धारण करके रणभूमि में जूझते हुए शहादत का जाम पिया। इस प्रकार के नाम के रंग में रंगी हुई, वाणी व बाणे (सिक्खी वेष-भूषा) को धारण करने वाली तथा गुरू के साथ एकत्व प्राप्त कर चुकी आत्माएँ ही हमारी बहार व उल्लास का प्रेरणाश्रोत व हमारा ध्येय हैं।

आओ! मौसम की बहार को देखते हुए अपने जीवन के अन्दर एक नई बहार उत्पन्न करने के लिए गुरू चरणों में यह प्रार्थना करें कि 'बनसपति मउली चड़िआ बसंतु।। इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि।। तुम साचु धिआवहु मुगध मना।। ताँ सुखु पावहु मेरे मना।।'

आओ! हम सब भी अपने जीवन के अन्दर खुशियाँ व बहारें लाने के लिए प्रार्थना करते हुए सतगुरू जी द्वारा प्रदत्त नाम मार्ग, आत्म मार्ग पर चलने की कोशिश करें। इस प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम हमारे अन्दर जिज्ञासा का होना बहुत आवश्यक है। इसके बाद यत्न करें, यत्न के बाद सब्र करें और जब सब्र आ गया तो फिर हम सफल भी हो ही जाएँगे। अतः सतगुरू जी द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चलते हुए, आन्तरिक व बाह्य नियमों का पालन करते हुए, हमें प्रत्येक समय यत्नशील बने रहना चाहिए तथा उद्यम करते रहना चाहिए -

कबीर केसो केसो कूकीअै न सोईअै असार ॥
राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥
अंग - 1376

हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ अंग - 478

शनैः शनैः एक दिन ऐसा भी आ जाएगा जिस समय हमारे जीवन में भी बहार आ जाएगी। जो इस अवस्था में प्रवेश कर चुके हैं वे धन्यता के योग्य हैं।

रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट के संस्थापक प्यारे महापुरुषों व सम्माननीया माता जी का भी यही मनोरथ था कि प्राणिमात्र के अन्दर नाम-वाणी की बहार आ जाए, सभी आत्म मार्ग के पथिक बन जाएँ और इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप आजीवन यत्नशील रहें। उनके पदचिन्हों पर ही चलते हुए वर्तमान मुखी सन्त बाबा लखबीर सिंह जी गुरू जी की कृपादृष्टि की बदौलत, ट्रस्ट के समस्त सदस्यों व समस्त संगत के सहयोग से प्यारे महापुरुषों द्वारा शुरू किए गए परोपकार के कार्यों की बुलन्दावस्था के लिए तत्पर हैं। यही कारण है कि दिन-रात संस्थाओं का प्रबन्ध उनकी पावन देखरेख में बुलन्दावस्था में गतिशील है। सतगुरू जी अपने सेवकों से सेवा ले रहे हैं। आत्म मार्ग की सारी रूहानी सामग्री इसी बहार की प्राप्ति के लिए अद्भुत प्रेरणा श्रोत है। समस्त रूहानी व अनुभवी प्रवचन इसी दिशा में चलने की शक्ति व प्रेरणा प्रदान करते हैं। सतगुरू जी अपनी कृपादृष्टि बनाए रखें ताकि समस्त श्रद्धालु व पाठकजनों को भी उपर्युक्त वर्णित बुलन्दावस्था का जीवन प्राप्त हो। यथा 'बनसपति मउली चड़िआ बसंतु।। इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि।।' अर्थात शाश्वत हर्षोल्लास व बहार की अवस्था सबको प्राप्त हो।

बाबाणियाँ कहानियाँ

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, अंग - 16)

हउमै का प्रसार दिन प्रतिदिन बढ़ता गया तथा जीव ने अपने आप की हस्ती पूरी तरह से कायम करके अपने आप को परमेश्वर की सर्व समर्थता से अलग कर लिया। कलयुग के बारे में फ़रमान है -

कलि महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परमहंस बीचारी।
दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी॥
अंग - 1131

सभी युगों में नाम का बड़प्पन ही प्रमुख माना गया है, नाम जप कर ही परम गति को प्राप्त किया जाता है। नाम के बिना किसी युग में भी शक्ति नहीं होती, सभी युगों में नाम का महत्व होने के कारण गुरमुख द्वारा नाम हृदय में निवास करवाया जाता है। जिसने भी राम के नाम के साथ लिव लगा ली और नाम मण्डल में या ऐसे कह लो आत्म मण्डल में प्रवेश कर लिया और अपनी द्वैत का पूरी तरह नाश करके प्रभु में अभेद अवस्था के साथ जुड़ गया वह नाम मण्डल का वासी होकर वाहिगुरू जी का रूप ही बन जाया करता है। फ़रमान है -

कलि महि राम नामि वडिआई।
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई॥
हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई।
आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई॥
अंग - 1132

कलयुग कहने लगा, ''मेरे युग में केवल एक कला धर्म की रह गई है वह है 'नाम'। पर पूर्ण सतगुरू के मिलाप के बगैर यह नाम प्राप्त नहीं हो सकता। वाहिगुरू तो सभी युगों में एक ही है सभी के अन्दर, एक ही समाया हुआ है तथा दूसरा कोई है ही नहीं पर हउमै का प्रभाव मनुष्य की सुरत पर इतना हावी हो गया है कि वह महान अन्धकार के गर्त में जा पड़ा है। सभी युगों में नाम उत्तम कर्म रहा है गुरू की शरण में रहकर कोई बिरला ही इस बात को जान पाता है।''

गुरू तीसरे पातशाह महाराज जी ने उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों की पुष्टि करते हुये फरमाया है -

सतजुगि सचु कहै सभु कोई। घरि घरि भगति गुरमुखि होई।
सतजुगि धरमु पैर है चारि। गुरमुखि बूझै को बीचारि॥
जुग चारे नामि वडिआई होई।
जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई।
त्रेतै इक कल कीनी दूरि। पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि।
गुरमुखि बूझै सोझी होई। अंतरि नामु वसै सुखु होई।
दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ। भरमि भूलाने जाणहि दोइ।
दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए। गुरमुखि होवै त नामु द्रिड़ाए।
कलजुगि धरम कला इक रहाए। इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए।
माइआ मोहु अति गुबारु। सतगुरु भेटै नामि उधारु।
सभ जुग महि साचा एको सोई। सभ महि सचु दूजा नही कोई।
साची कीरति सचु सुखु होई। गुरमुखि नामु वखाणै कोई।
सभ जुग महि नामु ऊतमु होई। गुरमुखि विरला बूझै कोई।
हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई।
नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई॥
अंग - 880

सो कलयुग ने कहा कि भाई मरदाना! मेरे युग में गुरू नानक आप परमेश्वर रूप अपनी अनेक कलाओं के साथ गुरू रूप धारण करके प्रकट हुआ है। मेरे जो कर्म हैं वे बहुत ही निकृष्ट हैं, निन्दनीय हैं क्योंकि मैंने मनुष्य को पूरी तरह से मोहिनी माया के वश में कर लिया है, यह मोहिनी माया बिना दांतों के ही इस संसार को खा रही है।

माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ।
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु

लाइआ। *अंग - 643*

न तो किसी जपी का जप पूरा होने देता हूँ, न किसी तपस्वी का तप सफल होने देता हूँ यदि कोई नाम की ओर झुकता है तो मैं उसको अपमानित करता हूँ। माया के करिश्में मेरे युग में इतने बढ़ गये हैं कि एक भी आदमी मेरी भ्रमित कर देने वाली शक्ति से बच नहीं सकता। पर भाई मरदाना! गुरू नानक पातशाह जी ने 'गुरमुख नाम दानु इसनान' का प्रयोग करके सत्य के मार्ग पर चलने के लिए नाम का महात्म (महत्व) इतना अमूल्य कर दिया है कि यदि कोई इस अमूल्य नाम की ओर एक आँख के पलक झपकने जितने समय तक चित्त को जोड़ ले तो उसके द्वारा किये गये पापों का नाश ऐसे हो जाता है जैसे करोड़ों मन ईंधन (लकड़ी) में एक आग की चिन्गारी फैंक दी जाये तो वह सारी लकड़ी जलकर राख हो जाती है। मेरे युग में नाम का महत्व इतना बढ़ गया कि गुरू की कृपा से जब नाम मन में बस जाता है तो उस पर मेरा कोई वश नहीं चलता। गुरू नानक ने नाम प्रेमियों के लिये सत्संग का मज़बूत किला बना दिया है जहाँ मेरा वश नहीं चलता। सतगुरू से वरोसाये हुये गुरमुख पदवी के सन्त, महापुरुष, संसार में नाम दृढ़ करवाते हैं उनका उपदेश भी गुरमुख नाम दान स्नान ही है। भाई मरदाना जी! दो चीजों पर तो मेरा ज़ोर चलता है - दान लोग करते हैं पर मैं उनके मन बदल देता हूँ, वे दान के बदले थोड़ा सा दान करके हज़ारों गुणा फल माँगते हैं। अपने दिये गये दान की प्रशंसा करते हैं, अपने नाम के पत्थर और दी गई रकम उस स्थान पर लगवाते हैं जहाँ सभी उसे पढ़ कर देखें तथा प्रशंसा करें। पर मूर्ख लोगों को पता ही नहीं कि मैंने ही उनकी बुद्धि उलट दी, उसके मन में किये गये दान का गुमान पैदा कर दिया। तीर्थों पर जाकर स्नान करना दूसरा कर्म था। मैंने सारे तीर्थ ही भ्रष्ट कर दिये उस स्थान पर तत्व वेत्ते प्रभु के साथ इकमिक हुये महापुरुषों का अस्तित्व ही नहीं रहने दिया। उसके स्थान पर दूसरे के धन को अपना बनाने वाले, वह किये गये दान को प्राप्त करके अपनी निजी ऐशो आराम के लिए दान का पैसा खर्च करते हैं। तीर्थों का स्नान भी मैने दूषित कर दिया। प्राचीन समय में लोग व्रत की प्रणाली को अपनाया करते थे। कोई व्रत रखता था कि मैंने झूठ नहीं बोलना। कोई व्रत रखता था कि मैंने पर स्त्रि गमन नहीं करना। कोई प्रतिज्ञा करता था कि मैं निन्दा, चोरी आदि नहीं करूंगा। इस प्रकार के और अनेक व्रत जैसे की 'ब्रह्मचर्य' का व्रत भीष्म पितामह ने रखा था। सच बोलने का व्रत पाण्डवों के बड़े भाई युधिष्ठर ने रखा हुआ था। इस प्रकार के व्रत मैं पूरे नहीं होने देता क्योंकि छोटा सा व्रत रख कर मन में गुमान पैदा कर लेते हैं जैसा कि गुरबाणी में फ़रमान है -

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु।
नानक निहफल जात तिहि जिउ कुंचर इसनानु॥
अंग - 1428

सो भाई मरदाना! मेरे युग में कोई एक भी श्रवण पुत्र नहीं होगा। माँ बाप से धन लूटने के लिये सन्तान माँ बाप का गला दबोचेगी। माँ बाप की सेवा तो क्या करनी है, माँ बाप के साथ वैर रखेंगे और उनकी बेबसी का नाज़ायज फायदा उठाते हुये उनके साथ गलत ढंग से पेश आयेंगे। लड़कियाँ अपने माँ बाप के सामने ऐसी करतूतें करेंगी जिन्हें देखना भी कठिन हो जायेगा। कर्म धर्म में कोई आदमी नहीं रहेगा, परमेश्वर की हस्ती को बिल्कुल भूल जायेगा तथा नाम के मार्ग को कोई भी नहीं अपनायेगा तथा उसके स्थान पर जो पूजा पाठ किये जायेंगे वे भी अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिये किये जायेंगे। जो प्रभु की ओर चलने लगेंगे उन्हें मैं माया की प्रभुता से मोहित करके अन्धकार में फैंक दूँगा। साधु, सन्त, मेरे युग के अन्दर पाखण्डी होंगे तथा पैसा कमाना ही अपना मुख्य उद्देश्य समझ कर अनेक प्रकार के पाखण्ड रचा करेंगे। बाहर से जति कहलायेंगे पर अन्दर से पर स्त्री की ओर प्रवृत्त होंगे। ऊपर ऊपर से सत्य का प्रचार करेंगे पर आप असत्य में रहेंगे। स्त्री तथा पति का प्यार केवल पैसों के साथ ही बना रहेगा। पतिव्रता के नियम पूर्ण रूप से भुला दिये जायेंगे। पाखंडी गुरूओं का बहुत ज्यादा पाखंड संसार को धोखा देता हुआ अनेक प्रकार की वेश भूषा धारण करके भोले भाले जिज्ञासुओं को अपने जाल में फंसाएंगे। पाखण्डी गुरू अपने जाल में फंसाने के लिये धर्म से पतित होकर पाखण्डियों को अपने निकटवर्ती होने का मान दिया करेंगे। राजा कसाई जैसा हो जायेगा। प्रजा का पालन करने की बजाय, प्रजा के हित में धन खर्च करने की जगह सारा पैसा स्वंय ही खा जाया करेगा। सारे संसार की मर्यादा मैं खत्म कर दूँगा, जीव भटकते फिरेंगे। राजा जनक द्वारा खाली किये गये नरक मैं दोबारा भर दूँगा। भाई मरदाना जी! यह वार्ता मैंने तुम्हें विस्तारपूर्वक बता दी है, यह मैंने पहले भी बताई थी जब मैंने नग्न रूप में तुम्हें डराने के लिये बहुत उपद्रव किये थे पर गुरू नानक पातशाह के सामने मेरा वश नहीं चलता इनकी रहमत की लालसा मैं भी करता हूँ क्योंकि इन्होंने फरमान किया था कि कलयुग! अब तू अपनी मनमर्जी कर ले पर जब दरगाह में हिसाब-किताब होगा उस समय मैं भी तुझे जंजीरों से कस दूंगा। हम निरंकार के चाकर हैं तू

ध्यान से सुन -

जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा॥
जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरणा॥
अंग - 902

सो भाई मरदाना जी! इसमें मेरा दोष नहीं है। माया ने अपना असली रूप दिखा कर इस मनुष्य की सुरत-वृत्ति प्रेत की बना दी है, मेरे ऊपर तो दोष ऐसे ही मढ़ा जा रहा है। मैं तुझे बता ही चुका हूँ कि मेरे युग में नाम की फसल इतनी भरपूर है कि यदि कोई राम के नाम की ओर अन्त समय में ध्यान दे तो उसके गले में पड़े हुये यमदूतों की जंज़ीरें टूट जायेंगी और वह नाम सारे पापों का नाश करने में समरथ होगा। इसलिये सतगुरू सच्चे पातशाह संसार को बता रहे हैं-

अब कलू आइओ रे। इकु नामु बोवहु बोवहु।
अन रूति नाही नाही। मतु भरमि भूलहु भूलहु।
अंग - 1185

सो यह है वार्ता भाई मरदाना जी जो आपने मेरे से पूछा था कि तू क्या काम करता है? मैंने तुझे विस्तार से बता दिया है। मरदाना जी ने कहा कि ऐ कलयुग! इतना बड़ा जुल्लड़ (गोदड़ी) तू क्यों उठाये फिरता है? तेरे हाथों में ये छुरियां क्यों हैं?'' तब कल्युग ने कहा, भाई मरदाना! यह भी बहुत बड़े भेद की बात है। नाम जपने के समय जब चित्त प्राकृतिक तौर पर एकाग्र होता है, वह सुबह का चौथा पहर होता है उस समय उद्यमी पुरुष उठ कर स्नान करते हैं और प्रभु नाम के साथ जुड़ते हैं जैसा कि फ़रमान है -

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ।
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ।
अंग - 146

और गुरबाणी में और भी फ़रमान है -

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा।
अंग - 611

सो मेरे हाथ में जो छुरियाँ हैं ये विकारी पुरुषों को पहली रात जागता रखती हैं। वे विषय विकारों में मस्त हुये रात के दो पहर रंग रलियों में बिता देते हैं। मैं उन्हें छुरियाँ मारता रहता हूँ उन्हें सोने नहीं देता। जब चौथे पहर सुरत अभ्यासियों को, प्रभु प्यारों को चाव उठता है तो वे उस समय गहरी नींद में सोये पड़े होते हैं, इस आलस की गोदड़ी मैंने संसार पर डाली हुई है। नाम जप के लिये अमृत बेला श्रेष्ठ समय है। मैं उस समय आलस की गोदड़ी संसार के ऊपर फैंक देता हूँ ताकि कोई जाग कर स्नान न कर सके और नाम में लिव न ला सके। मरदाना जी ने पूछा कि भाई! इस गोदड़ी में ये छेद क्यों हैं? तो उसने बताया कि भाई मरदाना जी! जो प्रभु को प्यार करने वाले, समरथ गुरू से नाम प्राप्त करके, अमृत बेला में उठते हैं वे मेरी गोदड़ी को फाड़ देते हैं उन पर मेरा जोर नहीं चलता क्योंकि उन पर समरथ गुरू का हाथ होता है। इसलिये इसमें ये छेद है। कलयुग ने इतनी वार्ता बताई और गुरू नानक पातशाह को बार बार नमस्कार करता हुआ अलोप हो गया। यह साखी पूर्ण रूप में आज घटित हो रही है अपने आप की स्वयं ही पड़ताल करनी चाहिये।

मैं प्रार्थना कर रहा था कि सन्त महाराज जी ने आलस को निकट न आने दिया। वह अवस्था प्राप्त कर ली -

गुरमुखि जागि रहे दिन राती। साचे की लिव गुरमति जाती।
मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे॥
अंग - 1024

कई प्रेमियों का यह विचार है कि नींद के बिना शरीर को स्वस्थ रखना बिल्कुल **Unscientific** (अवैज्ञानिक) सिद्धान्त है और इस जाग शब्द का वह इस प्रकार अर्थ करते हैं कि गुरमुख माया की नींद में नहीं सोते तथा सदा ही सुचेत रहते है। इस बारे में मैं एक प्रार्थना करता हूँ कि गुरबाणी में आता है -

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि।
तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंम्रित नामु सुख वासु।
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतमराम प्रगासु॥
अंग - 1414

उनका सोचना भी ठीक है क्योंकि संसार तीन गुणों के भ्रम में सोया पड़ा है, सुरत सोई पड़ी है जिसे हौमे की सुरत कहते है। महाराज जी फ़रमान करते है -

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी।
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी।
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी।
अंग - 920

सारी जिन्दगी माया में सोये हुये ही व्यतीत हो जाती है, यह अर्थ भी बिल्कुल ठीक है पर बन्दगी करने वालों ने इस नींद के प्रत्यक्ष रूप में रूप देखा है। शरीर में दो प्रकार की नींद होती है एक नींद वह है जो शरीर को आती है। एक नींद वह है जो सुरत को आती है जब सुरत और शरीर

(शेष पृष्ठ 22 पर)

भेख दिखाइओ जगत कउ लोगन को बस कीन।।

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक अक्टूबर, पृष्ठ - 44)

इस्लाम धर्म के अन्दर एक ऐसी घटना का जिक्र आता है जो कि बहुत ही शिक्षाप्रद है। इस्लाम धर्म वालों को खुदा के सन्देश फरिश्तों के माध्यम से आया करते थे। इसाई धर्म वालों को भी सन्देश फरिश्तों के माध्यम से ही आया करते थे। मोहम्मद साहिब की जो भी ईश्वरीय सन्देश आया करता था वह गुफा में बैठे हुओं को ही आया करता था कि लोहे की पट्टी पर अमुक लिखा हुआ सन्देश आया है। बस खुदा या ईश्वर से वार्तालाप करने या सन्देश प्राप्त करने का यह एक तरीका था। यह कोई आवश्यक नहीं है कि परमात्मा केवल आकाशवाणी के माध्यम से ही अपना सन्देश संसार में प्रेषित करता है या फिर वह साधुओं या सन्तों के माध्यम से ही बोलता है। अतः उन्हें फरिश्ते ही आकर सन्देश दिया करते थे। ईसाई धर्म में भी फरिश्ते ही आकर सन्देश दिया करते थे। ईसा जी की सारी जीवन कथा पर पढ़ने से यही पता चलता है। वे प्रायः यही कथन करते हैं कि फरिश्ता मेरे पास आया और उसने यह बात कही। उन बातों में वे उच्चावस्था की बातें भी कथन करते हैं और सांसारिक मर्यादाओं की बातें भी बतलाते हैं। इसी प्रकार से मूसा जी की 10 **commandments** हैं। वे कहते हैं कि उन्हें फरिश्ते ने पहाड़ पर लिखकर इस प्रकार से बतलाई हैं। बहुत जोर से विजली चमकी जब विजली की चमक हटी तो उन्होंने देखा कि पर्वत पर ये 10 **commandments** लिखी हुई थीं। उसमें वह सब लिखा था कि यह काम करना है यह नहीं करना है, अमुक कार्य खुदा को अच्छा लगता है और अमुक कार्य खुदा को अच्छा नहीं लगता है अथवा खुदा कहता है कि मेरा नाम 'मैं' है और मैं, मैं ही हूँ, मेरे बिना यहाँ पर अन्य कुछ भी नहीं है। इस प्रकार से वह फरिश्ता कहने लगा कि खुदा ने मुझे संसार में भेजा है कि तुम जाओ! नेक इन्सानों के नाम लिख कर लेकर आओ। अब उसने नेक इन्सानों का नाम लिख लिया। अब आम व्यक्ति की निगाह में नेक इन्सान कौन है? अब नेक इन्सान तो वही समझा जाता है जो अधिक नमाज पढ़ता है, पाठ करता है, रोजे रखता है या फिर इसी प्रकार के अन्य नेक कार्य करता है। इसी प्रकार के लोग हमारी दृष्टि में पूज्य होते हैं, महान होते हैं। हम प्रायः ऐसे लोगों के चरण छूते हैं क्योंकि वे परमात्मा या खुदा को याद करते हैं। इस प्रकार से उसने काफी नेक लोगों के नाम लिख लिए। लिखते-लिखते उसे याद आया कि एक व्यक्ति और भी है जो कि बहुत अधिक पोरपकार के कार्य करता हुआ दिखाई पड़ता है और उसका नाम है - अबू-बिन-आदम। यह सोचकर वह तथाकथित फरिश्ता उसके पास भी चला गया और उसे पूछने लगा कि हम तुम्हारे पास भी आए हैं, तुम बतलाओ कि तुम कितनी नमाजें पढ़ते हो? कितने रोजे रखते हो? क्योंकि हमने नेक लोगों की सूची बनाई है। वह कहने लगा कि हमें भी सूची में दर्ज लोगों के नामों के बारे में बतलाओ। फरिश्ते ने सूची में दर्ज लोगों के नामों के बारे में बतलाया कि फलां व्यक्ति इतनी नमाज पढ़ता है, अमुक व्यक्ति छः-छः महीने उल्टा लटक कर और उपवास धारण करके खुदा को याद करता है, अमुक व्यक्ति ने खुदा की याद में अपने तन को अस्थिपंजर मात्र बना लिया है।

सूची में दर्ज नामों के बारे में सुनकर अबू-बिन आदम कहने लगा, ऐ फरिश्ते! मैं इस प्रकार का तो कोई भी कार्य नहीं करता हूँ, इसलिए इस सूची में मेरा नाम दर्ज करना तो फजूल ही है।

फरिश्ता बोला, नहीं। हमने तो तुम्हारा नाम लिखना ही है। तुम बताओ तुम क्या करते हो?

वह बोला, मैं तो खुदा की दुनियां की सेवा करता हूँ। फरिश्ते ने सोचा कि चलो नाम तो इसका लिख लेते हैं लेकिन अन्त में लिख लेते हैं, जहाँ पर कि हमारी सूची समाप्त होती है यानि कि सबसे आखिर में लिख लेते हैं। इस प्रकार से सारी सूची लेकर वह खुदा के पास चला गया। दूसरे दिन वह फरिश्ता पुनः आ गया। अबू-बिन-आदम कहने लगा, आज आप क्या करने आए हो?

फरिश्ता बोला, आज मैं आपको खुश-खबरी देने आया हूँ कि खुदा ने अपने हाथ से तुम्हारा नाम नीचे से काटकर सबसे ऊपर खि दिया है साथ ही खुदा ने कहा है कि जो नमाज पढ़ता है, पाठ करता है, मुझे कोई अधिक अच्छा नहीं लगता है। ठीक है, वह अपने लिए पढ़ता होगा, लकिन वह मेरे लिए क्या करता है? दस पाठ जपजी साबि के करता है तो वह अपने लिए करता है, पन्द्रह पाठ सुखमनी साहिब के करता है तो वह अपने लिए कहता है मेरे संसार के लिए वह

क्या करता है?

अभी मेरी खरड़ वाले अस्थि रोग विशेषज्ञ जी से बात हुई थी, मैंने कहा मास्टर जी! एक तरफ तो टाँग टूटी हुई हो और एक तरफ दस बार नमाज पढ़ता है लेकिन जो टूटी टुई टाँग को ठीक कर देगा तो यह परोपकार तुरन्त परमात्मा की दरगाह में पहुँच जाता है। जो कुछ संसार पर आकर किया जाता है, वह दो प्रकार का है एक तो वह है जो अपने लिए किया जाता है और एक वह है जो कि अपने आराम व माया के लोभ का परित्याग करके किया जाता है। अतः वास्तविकता जो है वह कुछ और चीज है, उसके बारे में महाराज जी इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - दरगह बैसणु पाईदै,
जे विच दुनीआँ सेव कमाईऐ।

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥ ***अंग - 26***

महाराज जी ने इस प्रकार से शर्त रख दी है। अतः वह फरिश्ता कहने लगा, अबू-बिन-आदम! देखो बन्धु! यह तत्व की बात है। खुदा का जो चुनाव है उससे मैं भी बहुत हैरान हूँ क्योंकि मैं भी यही समझता था कि अधिक नमाजें पढ़ने वाले, रोजे रखने वाले, उल्टे लटकने वाले, धूनियाँ तापने वाले, खुदा को अधिक प्यारे होंगे लेकिन खुदा ने तो फैसला ही कर दिया है, उन्होंने तो तुम्हारा नमाज अदा करना या न करना, कुछ भी नहीं देखा है। वे तो केवल तुम्हारी सेवा पर ही खुश हो गए हैं। सेवा से दोनों चीजें मिल जाती हैं। दुनिया भी और दरगाह भी।

अब इस सड़क को बनाने का सेवा कार्य हुआ है। अब इस पर तो किसी का स्वामित्व ही नहीं है कि किसने बनाई है या किसकी है? हमें तो अभी तक यह भी नहीं पता कि जमीन किसकी थी? संगत के रूप में यहाँ से महिलाएँ, बच्चे, पुरुष गए और सबने अपने-अपने सिरों पर टोकरियों के द्वारा पत्थर का गटका डाल दिया। गर्मी भी बहुत गजब की थी। संगत की प्यास बुझाने के लिए पानी के ड्रम लगातार पिलाए जा रहे थे। वहाँ पर यह किसी को भी ख्याल नहीं था कि यह सड़क किसकी बन रही है। सबको यही ख्याल था कि बस, सड़क से असंख्य लोगों को सुख मिलेगा। इस सड़क के ऊपर से कितने साधू गुजरे, कितने नाम जपने वाले गुजरे, कितने गुरू के प्यारे, श्रद्धालुजन गुजरे, कितना सफर सबका कम हो गया। पहले जब बैलगाड़ी निकालनी होती थी तो चार-चार लोग धक्का लगाया करते थे। जो बैलगाड़ी हाँकने वाला ऊपर बैठा होता था, वह बैलों को डंडे मारता रहता था, लेकिन बैलगाड़ी फिर भी फँस जाया करती थी। अब तो वे बेजुबान बैल की आशीषें देते हैं परमात्मा को तो पता है कि बैल सुखी हो गए हैं, मेरे लोग सुखी हो गए हैं। लेकिन इन सबको सुख किसने पहुँचाया? उन्हें पूछो कि तुम किसी को जानते हो? वे कहेंगे कि हमें तो पता नहीं, हम तो किसी को भी नहीं जानते कि सड़क कौन बना गया? ये ऐसे काम हैं, जिनकी प्रशंसा दरगाह में जाकर खूब होती है। उन्हें धन्य-धन्य कहा जाता है। ये सारी चीजें परोपकार से सम्बन्ध रखती हैं, स्वार्थी जीवन के साथ इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। परोपकारी व्यक्ति जो गुरू का सिक्ख है, वह तो सारी सृष्टि को एक करके ही जानता है, वही सेवा करता है, दूसरा तो सेवा करता ही नहीं है। जो स्वार्थी है वह तो कहेगा कि मैं क्यों सड़क बनाऊँ? मुझे इससे क्या लाभ होगा? अतः वह तो सेवा कर ही नहीं पाएगा। अतः महाराज जी कहते हैं कि इस प्रकार के कार्य करो जिनके द्वारा तुम्हारी दरगाह में जाकर जय-जयकार हो, ऐसे कार्य हरगिज न करो जिनको करने से तुम्हें दरगाह में जाकर पछताना पड़े और कटघरे में खड़ा करके इससे सवाल पूछे जाएँ। उस समय फिर बहुत दुख महसूस होता है क्योंकि लेखा तो देना ही पड़ेगा उसे तो टाल पाना असम्भव है। अब कई तथाकथित बुद्धिजीवी लोग कह देते हैं कि यमराज तो होता ही नहीं है।

मैं एक पुस्तक पढ़ रहा था उसके अन्दर एक प्रोफेसर ने लिखा हुआ था कि महाराज जी ने लोगों को डराने के लिए वैसे ही लिख दिया है जबकि वास्तव में यमराज वगैरह कुछ भी नहीं होता है। गुरू जी फुरमान करते हैं कि -

धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥
दूजै भाइ दुसटु आतमा एहु तेरी सरकार ॥
अंग - 38

महाराज जी ने परिभाषित कर दिया है कि यमराज के पास कौन जाएगा? जो मनमुख लोग हैं जो माया के प्यारे हैं या जो दान-पुण्य करके सेवा का बदला माँगते हैं वे सब यमराज के पास जाएंगे -

पुंन दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ॥
अंग - 1414

अब यमराज ने दान व पुण्य का प्रतिफल स्वर्गों के रूप में देना है जबकि पापों का प्रतिफल नर्कों के रूप में देना है या निषिद्ध योनियों के रूप में देना है। अतः बुरे कार्य करके व्यक्ति को दरगाह में जाकर शर्मिन्दा होना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि पाप करने वाले के लिए तो पाप ही प्यारा प्रतीत होता है। महाराज जी कहते हैं कि खोटा व्यापार न करो -

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
अंग - 23

जिनके पास सत्य की पूँजी ही नहीं है उन्हें सुख की प्राप्ति कैसे हो जाएगी?

खोटे वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
अंग - 23

जब हम खोटा व्यवसाय करते हैं तो हमारा तन और मन दोनों खोटे हो जाते हैं -

फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥

अंग - 23

निन्दा करता रहता है अब यह भी तो खोटा व्यापार ही है न? लेकिन कहता है कि मैं निन्दा नहीं करता हूँ बल्कि मैं तो केवल बात ही करता हूँ महाराज जी कहते हैं कि यह केवल बातें हैं? यह तो तुम बहुत घाटे वाला व्यवसाय कर रहे हो। घाटे वाला भी इतना है कि उत्तरोत्तर घाटा बढ़ता ही चला जाता है। मान लो अपनी जमीन भी बेच दी, सारी जायदाद भी बेच दी लेकिन घाटा बढ़ता ही जाता है और वह उसमें और अधिक पैसे डालता जाता है। इसमें होता यह है कि उसे आखिर में पाश्चाताप ही करना पड़ता है क्योंकि घाटे का व्यापार कर लिया, लाभ का नहीं। लाभ वाला व्यापार करने का तो ढंग ही नहीं आता, उसका ज्ञान ही नहीं था। पता उस समय चला जब कि पास में कुछ भी न रहा। अब मान लो हम लोग घाटे का व्यापार कर लेते हैं किसी ने जमीन के सौदे में घाटा डाल लिया, किसी ने व्यापार में घाटा डाल लिया किसी ने मकान में घाटा डाल लिया महाराज जी कहते हैं कि यह तो ठीक है, इसके कारण से तुम दुनिया के अन्दर दुखी हो जाओगे। आखिर शरीर छोड़ जाना है और फिर तुम्हारा इसके साथ कोई वास्ता नहीं रह जाएगा लेकिन इस प्रकार के घाटे मत डालो, जिसकी वजह से तुम्हें आगे दरगाह में जाकर दुखी होना पड़े। उसके बारे में गुरू जी इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - निंदा भली किसे दी नाही,
मनमुख लोकी करदे ने।

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥

अंग - 755

किस प्रकार का यह खोटा व्यापार है? अब मान लो सारी जिन्दगी दान करता रहा, कुएँ लगवाता रहा, सराय बनवाता रहा, अस्पताल बनवाता रहा, मुफ्त में दवाइयाँ देता रहा, पुण्य के कार्य करता रहा, भूमि दान करता रहा, सोना दान करता रहा, लेकिन महाराज जी कहते हैं -

करे निंद सभ बिरथा जावै ॥

अंग - 875

किसी की निन्दा कर दी तो उससे भी नीचे चला जाता है। गुरू जी कहते हैं कि बताओ कितना मूर्ख व्यक्ति है। एक जगह पर आप कहते हैं कि पराई मैल को निन्दा करने वाला खाता है। मुँह के द्वारा, दूसरे की मैल को चाटता है। दूसरे के पापों को अपने सिर पर ले लेता है। इस प्रकार से खोटा व्यापार करने पर घाटा बढ़ाता जाता है। झूठ बोलता है, चुगली करता है, ईर्ष्या करता है, हिंसा में पड़ा हुआ है। हिंसा तो करता ही है और फिर उसे **Justify** भी करता है। कहता है कि बकरों को तो भगवान ने खाने के लिए ही बनाया है। अरे मूर्ख! भगवान ने तो उन्हें बनाया है, उसकी वह जाने लेकिन तुमने उन्हें जरूरी खाना है?

वह भी तो जीना चाहता है, प्रत्येक जीव जीना चाहता है। जब तक तुम्हारा उससे कोई क्लेश ही नहीं है, कोई विवाद ही नहीं है, तब तक तुम केवल अपने स्वाद के लिए ही खाते हो। तुम जानवर मार कर लाते हो और कहते हो कि मैं शिकार खेलता हूँ और फिर तथाकथित धार्मिक लोग कहते हैं कि स्वयं शिकार करके तुम माँस खा सकते हो।

साधु संगत जी! हम लोगों ने केवल श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के आदेश का ही पालन करना है न कि किसी लेखक की बात को मानना है। ये सब तो भूले हुए लोग हैं। गुरू जी फुरमान करते हैं कि -

कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रितु लोनु ॥
हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥ अंग - 1374

आप सादा खाना खाने की पैरवी करते हैं जिसमें केवल नमक-मिर्च वगैरह डाली गई है। दूसरी तरफ 'हेरा' कहते शिकार मार कर लाना और फिर उसे खाना। गुरू जी कहते हैं कि आज तो तुमने उसे मारा है और कल को वह तुम्हें मारेगा। इस प्रकार से यह एक अन्तहीन चक्र चल पड़ेगा। तुम किसी का गला काटते हो, तुम्हें यह अधिकार किसने दिया है? तुम परमेश्वर की सृष्टि को समाप्त करने पर लगे हुए हो। फिर तुम कहने लगते हो कि मैं तो जानवरों की मुक्ति करता हूँ। अरे भाई! तुम्हारी तो अपनी मुक्ति नहीं हुई है, फिर तुम दूसरों की मुक्ति कैसे कर दोगे? तुम तो स्वयं अज्ञानता के अन्दर घूम रहे हो, इसलिए यूँ ही पापों के गट्ठर मत बाँधो, इन गट्ठरों को उठाना तुम्हारे लिए कठिन हो जाएगा। इस प्रकार का खोटा व्यापार न करो। अतः महाराज जी कहते हैं कि भद्रपुरुष! तुम खरा व्यापार करो जो कि दरगाह में जाकर तुम्हारी मदद करे। दया करो, क्षमा करो, सेवा करो, दान करो, प्यार करो संसार को। प्रभु जी की याद में रहो, भक्ति भाव में जिन्दगी व्यतीत करे। जब तुम ऐसा करोगे तो फिर नाम के मण्डल में तुम्हारा प्रवेश हो जाएगा। गुरू जी फुरमान करते हैं कि जो नाम स्मरण करने वाला व्यक्ति है, उसके अन्दर प्यार होता है और जो व्यक्ति प्यार से खाली है, वह तो भरा हुआ व्यक्ति है -

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत ॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥

अंग - 253

नाम रहित व्यक्ति तो मरा हुआ होता है। वे तो मृत शरीर घूम रहे हैं। जो संसार को प्रेम करता है वह नाम के

मण्डल में पहुँच जाता है, नाम जपता है, नाम का ध्यान करता है, नाम को श्रवण करता है और उसका मनन करता है। जो इस प्रकार की जिन्दगी व्यतीत करता है। खोटे व्यापार को छोड़ कर खरे व्यापार में लग जाता है तो दरगाह में जाकर उनकी जय-जयकार होती है, धन्य-धन्य होती है -

धारना - तेरे नाम दे वपारी दरगाह माण पाउंदे ने।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ *अंग - 283*

मूल्य का भुगतान कैसे करना है?

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ *अंग - 283*

अहंभाव और ममता यानि कि 'मैं' व 'मेरी' मुझे दे दे उसके बदले में तुम्हें नाम मिल जाएगा क्योंकि ये दो ऐसी चीजें हैं, ये जब तक रहती हैं, नाम को पास में आने ही नहीं देती हैं -

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ॥
अंग - 560

ये दोनों दे दो। फिर क्या होगा?

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥ *अंग - 283*

नाम की खेप भर लो और उस समय का अनुमान लगा लो कि जिस समय इस खेती को बोने का उचित समय हो क्योंकि सही समय के बिना फसल नहीं बोई जाती है। इस जीवन के अन्दर नाम की फसल को बोने का सही समय है - ब्रह्ममुहुर्त। वैसे तो प्रत्येक समय ही इस फसल को बोने के लिए लाभप्रद है लेकिन जो ब्रह्ममुहुर्त का समय होता है। उस समय चित्त वृत्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक एकाग्र होती हैं क्योंकि उस समय चहुँओर शान्त वातावरण होता है, इसलिए उस समय को सम्भाल लो -

हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ
भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ *अंग - 734*

गुरू जी कहते हैं कि इस समय बोई हुई नाम की फसल इतनी अधिक फलदाई होती है कि उसे जितना मर्जी खर्च करते जाओ, वह समाप्त ही नहीं होती है -

तोटि न आवै वधदो जाई ॥ *अंग - 186*

वह तो बढ़ती ही जाती है, घटती नहीं है -

हलति पलति हरि धनै की
भगता कउ मिली वडिआई॥ *अंग - 734*

फिर तो यहाँ भी और दरगाह में भी धन्य-धन्य होती है क्योंकि उसके अन्दर नाम प्रकट हो गया है। जब अन्दर नाम प्रकट हो जाता है तो फिर सारा संसार ही उसका अपना हो जाता है फिर बेगाना तो कोई भी नहीं रह जाता है। दरअस्ल फिर तो वह स्वयं उस परम ज्योति में ही लीन हो जाता है, फलस्वरूप फिर वह परमात्मा का रूप ही बन जाता है -

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अंग - 657

जब मैं था, तब तुम नहीं थे, अब तुम ही शेष हो, मैं समाप्त हो गया हूँ। 'मैं' कहाँ चली गई? वह तो अब 'तू' के बीच ही मिल गई है। यह अवस्था जो है यह तो नाम के प्रकट होने की अवस्था है। इस अवस्था में आँख खुल जाती है -

गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
ईतहि उतहि घटि घटि घटि घटि
तूंही तूंही मोहिना ॥ *अंग - 407*

फिर दूसरा तो कोई रहता ही नहीं है। इसीलिए कहते हैं कि -

हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई
॥ 3 ॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरू है साचा॥
अंग - 734

इसका कभी भी नाश नहीं होता है -

इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै
किसै का गवाइआ न जाई ॥
हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई
जमु जागाती डंडु न लगाई ॥ *अंग - 734*

जिन लोगों ने हरि धन को अर्जित कर लिया है, यमदूत, उनकी तो सेवा करते ही हैं, साथ ही, जो उनकी संगत करने वाले भी हैं, वे उनकी भी सेवा करते हैं। गुरू जी इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - धरमराजा वी करेगा सेवा,
साधूआँ दे संगीआँ दी।

साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ *अंग - 271*

जो बन्दगी करने वालों की संगत में भी आ सकता है, उसकी भी शोभा होती है। इसीलिए महाराज जी कहते हैं कि भद्रपुरुष! तुम उस व्यापार को करो जिसे करने से तुम्हारी जय-जयकार हो -

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

लादि खेप संतह संगि चालु ॥

तुम सन्तजनों के साथ मिल कर चलो। क्यों? क्योंकि उनकी संगत के कारण ये पाँच चोर दूर भाग जाते हैं, वे भयभीत हो जाते हैं। अन्य किसी विधि से ये दूर नहीं भागते हैं -

साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥ *अंग - 182*

साधू की संगत करने वाले के ये वश में आ जाते हैं जबकि अन्य सारे संसार को ये चक्कर में डालकर घुमाते रहते हैं। अतः तुम साधुओं की संगत में अपनी खेप को लेकर चलो। वे प्रत्येक समय रिद्धियाँ-सिद्धियाँ आ गईं, शक्तियाँ दिखाने लग पड़ा, वे कहते हैं कि खतरा आ गया है, सावधान हो जाओ। दरअस्ल व्यक्ति इन शक्तियों को 'मैं' कहने लग पड़ता है कि 'मैं' करता हूँ।

अतः साधुओं को पता होता है कि अब यह भटक गया है, फलस्वरूप इसके पल्ले कुछ भी नहीं रह जाएगा और यह पूर्णतः खाली हो जाएगा। वे चेतावनी दे देते हैं कि तुमने यह कार्य क्यों किया? इसीलिए महाराज जी कहते हैं कि तुम नाम का धन प्राप्त करके, सेवा का फल प्राप्त करके, लोगों को लुटाओ नहीं बल्कि सन्तजनों की संगत में रहकर इस धन को सम्भाल कर रखो, अन्यथा इसे पाँच ठग ही लूट ले जाएँगे।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजालु ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
मुख उजल हरि दरगह सोइ ॥
इहु वापारू विरला वापारै ॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥

इस प्रकार से यह व्यक्ति खोटा व्यापार करता है तथा खरे व्यापार से दूर रहता है, फलस्वरूप दरगाह में जाकर उसे शर्मिन्दा होना पड़ता है।

इस प्रकार के वचन महाराज जी सुना रहे हैं और यह सज्जन एक तरफ तो इन वचनों को सुन रहा है और दूसरी तरफ वह यह तैयारी भी कर रहा है कि हम लोग इन्हें ढंग से मार लेंगे। उधर महाराज जी ने कीर्तन शुरू कर लिया। आप शबदों का गायन करने लग पड़े। ज्यों-ज्यों आप गुरवाणी का कीर्तन करते जाते हैं, त्यों-त्यों इसके अन्दर निर्मलता आती जा रही है। गुरवाणी कानों के माध्यम से हृदय में पहुँचती है और जब उसके हृदय में गुरवाणी गई तो वह द्रवीभूत हो गया, भयभीत हो गया कि कोई दरगाह भी होती है? इस भाव वाला शबद पढ़ा गया आप भी प्यारपूर्वक पढ़ो-

धारना - घाणी पीड़नी निमाणी जिंद तेरी,
दरगाह विच धरमराज ने।

लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥
संनी देनि विखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥ *अंग - 315*

इस भाव के शबद गुरू महाराज जी के मुखारविन्द से सुनकर सज्जन को एक नींद या खुमारी सी चढ़ गई। अब ऐसा आभास होने लगा कि मैंने जितने लोगों को मार कर कुएँ में फेंका है, वे सारी आत्माएँ जीवित हो उठी हैं, वे सभी कह रही हैं कि इसे मारो, यह तो पापी है। इसने तो हमें खत्म किया है। यमदूत आ गए, कोई डण्डा मारता है, कोई हंटर मारता है और वह चिल्लाता है कि मुझे माफ कर दो, मुझे छोड़ दो। इसके बाद वह देखता है कि बड़े भयानक नर्क हैं-

पापी करम कमावदे करदे हाइ हाइ ॥
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे धरम राइ ॥
अंग - 1425

अब उसे जाग आ गई लेकिन जो दृश्य उसने देखा था वह आँखों से ओझल नहीं हो पा रहा है। कुछ हिम्मत सी करके पुनः स्वयं से कहने लगा ऐ सज्जन! तुम तो वहमों में पड़ गए हो, नर्क वगैरह तो होते ही नहीं हैं, ये तो वैसे ही डराने वाली बातें होती हैं। ये धार्मिक लोग हम लोगों को यूँ ही डराते रहते हैं।

उसके बाद पुनः उसे नींद आ गई और पुनः पूर्ववत् स्थिति उत्पन्न हो गई, यमदूत भी आ गए और नर्कों के भयावह दृश्य उसे दिखाई देने लग पड़े। अब वह अत्यन्त बुरी तरह से डर गया और उसका शरीर काँपने लग पड़ा। सज्जन नींद से कुछ जागृत अवस्था में जैसे ही आने को हुआ तो उसके कानों में कुछ इस प्रकार की आवाज पड़ी -

धारना - तेरा अंदर मैल दा भरिआ,
धोतिआँ ना जूठ उतरे सृजणा!

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥
अंग - 729

अब चमकदार कांसी का बर्तन देखने में कितना सुन्दर लगता है लेकिन ज्यों-ज्यों उसे माँजते जाओ त्यों-त्यों उसकी कालिख उतरती जाएगी। चाहे उसे दस घंटे माँजते रहो, वह हाथ भी काले करता रहेगा और जिस चीज के साथ माँजेगा उसे भी काला करता रहेगा। इतनी अधिक मैल उसके अन्दर

भरी पड़ी होती है जो कि धोने से भी साफ नहीं होती है -

धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥

अंग - 729

अब हमें किस चीज की मैल लगी हुई है? निन्दा की मैल है, चुगली की मैल है, छल की, कपट की, विश्वासघात की, हिंसा की, ईर्ष्या की, घृणा की, झूठ की, चोरी की, लोभ, मोह, अहंकार व काम की, राज, माल, रूप, जाति, यौवन आदि पाँच ठगों की मैल हमें लगी हुई है। इसके अलावा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध पाँच विषयों की मैल हमको लगी हुई है और यह आज से ही नहीं बल्कि -

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी
काला होआ सिआहु ॥
खंनली धोती उजली न होव ई जे सउ धोवणि पाहु॥
गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥

अंग - 651

अब यह जो मैल लगी हुई है, यह उतरती किस प्रकार से है? गुरू इसकी बुद्धि को नाम के साथ जोड़कर इसे पावन कर देता है -

जनम जनम के लागे बिखु मोरचा
लगि संगति साध सवारी ॥ *अंग - 666*

इसे तो जन्म जन्मान्तरों से जंग (मोर्चा) लगा हुआ है-

सन्त जनों या गुरुजनों की संगत में जाकर यह मैल उतरती है। वे इसे ऐसी चीज दे देते हैं कि जिसके द्वारा इसकी मैल उतर जाती है। यथा -

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ *अंग - 4*

जिउ कंचनु बैसंतरि ताइए
मलु काटी कटित उतारी ॥ *अंग - 666*

सोने को मैल लगी हुई है, उसे बार-बार आग का सेक देते जाओ तो वह मैल उतरती जाती है। बारह बार जब उसे आग का ताव दे देते हैं तो वह बारह बन्नी का सोना बन जाता है तो फिर वह खरा हो जाता है, यानि कि उसकी मैल दूर हो जाती है। इसी प्रकार से जब यह जीव साधुओं की संगत में जाकर नाम का जप करता है तो इसकी मैल उतरनी शुरू हो जाती है। इसने (सज्जन ने) समझ लिया कि यह तो गुरू जी ने मेरी ही कहानी कह दी है, यह तो जरूर सच्चा सन्त है। यह तो मुझे अन्दर से जान गया है कि मैं क्या हूँ। मैं तो वास्तव मैं ही मैल से पूरी तरह भरा हुआ हूँ। बाहर से तो मैं चमक-दमक वाला हूँ, बाहर से तो मेरा भेष है, मेरे वस्त्र अच्छे हैं, मैंने रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं, मेरा झुक जाना मीठी-मीठी बातें करना, एक तरफ तो मैं सज्जन कहलाता हूँ दूसरी तरफ शेख कहलाता हूँ। अभी यह बातें वह सोच ही रहा है कि गुरू जी ने दूसरी धुन इस प्रकार से उच्चरित कर दी।

धारना - भीड़ाँ पईआँ 'ते सृजण कंम आउंदे,
दरगाह 'च नाल चलदे पिआरिआ।

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंनि् ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥ अंग - 729

मित्र तो वही है जो प्रत्येक जगह पर अपने मित्र की सहायता करे। अब सांसारिक व्यक्ति तो यह सहायता कर ही नहीं पाएगा। वह दुनिया में तो कर देगा लेकिन परलोक में कैसे करेगा? यह कार्य तो कोई पक्का सज्जन ही कर सकता है -

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥

अंग - 1102

सांसारिक मित्र तो जीते जी छोड़ जाते हैं, जब उनका हित पूरा नहीं होता है, वे छोड़ जाते हैं। दुनिया की दोस्तियों को आज तक कौन निभा पाया है? जब तक हित सांझे हैं, तब तक मित्रता है, जब हित अपने-अपने हो गए तो फिर व्यापार में भी विवाद खड़ा हो जाता है, फिर तो वे परस्पर एक दूसरे को बुरा कहते रहेंगे। वास्तविकता यह है कि हित से बँधी हुई मित्रता ज्यादा देर तक कायम नहीं रहा करती है। यदि व्यक्ति का प्यार, वाहिगुरू जी के साथ पड़ जाए तो वही सर्वोत्तम है, अन्यथा प्यार और कहाँ है? बाकी सब प्यार तो अब गायब ही हो चुका है।

अभी पिछले युगों में तो प्यार था कर्ण ने दुर्योधन का साथ निभा दिया, उसके लिए अपने प्राण दे दिए। उसे पता भी चल गया था कि मैं पांडवों का भाई हूँ लेकिन उसने कहा, नहीं, अब मित्रता आगे है। अतः मित्र, परमेश्वर है, गुरू है।

मेरे धमोट गाँव की बात है कि मैं सड़क पर खड़ा हुआ था, वहाँ पर लाला अमरनाथ की चक्की सड़क पर थी, अब भी वह चक्की है। वह चारपाई पर पड़ा हुआ था। मुझे कहने लगा, कहाँ से आए हो? मैंने कहा, मैं राड़ा साहिब से आया हूँ। वह रोने लग पड़ा। मैंने कहा, लाला जी! क्या हुआ? आप रोने लग पड़े? कहने लगा, वे तो मेरे भगवान है। मैंने कहा, अच्छा! आपकी इतनी श्रद्धा है उन पर? कहने लगा, हाँ। मैंने कहा, यह सब कैसे हुआ? इतनी अथाह श्रद्धा का कारण? कहने लगा, तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि मेरे साथ कौन

सी घटना घटित हुई है।

मैंने कहा, नहीं मुझे ज्यादा कुछ तो नहीं पता। बस मैंने आपका नाम राड़ा साहिब में लिखा हुआ पढ़ा है कि लाला अमरनथा ने दो हजार रुपए देकर यह कमरा बनवाया है। वहाँ पर किसी का नाम नहीं लिखा हुआ है, बस तुम्हारा नाम ही लिखा हुआ है। मैंने कहा आप मुझे बतलाओ कि तुम्हारे साथ कौन सी घटना घटित हुई थी? वह कहने लगा, जी मैं परलोक गमन कर गया था और मुझे यमदूतों ने आकर पकड़ लिया। इधर मेरे परिजनों ने मुझे मृत जानकर चारपाई से नीचे उतार कर जमीन पर रख दिया और सबने रोना-बिलखना शुरू कर दिया। वैसे मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैंने देवी-देवताओं के आगे बहुत विनतियाँ कीं जिन्हें कि मैं जानता था, उन सबके आगे मैंने अपनी रक्षार्थ गिड़गिड़ाते हुए विनतियाँ कीं लेकिन किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। आखिर मुझे याद आया कि जब मैं ससुराल 'घणकसां' जाया करता था तो मैं अपने घर से विशेष तौर पर उसी समय चला करता था जिस समय कि महापुरुष कुर्सी पर दर्शन दे रहे होते थे। मैं वहाँ पर जाकर उन्हें नमस्कार करता। वे प्यारपूर्वक मेरी तरफ देखते और मेरा हाल चाल पूछते। मैं काफी देर तक उनके चरणों में बैठा रहता, जब तक कि महापुरुष कुर्सी पर सबको दर्शन देते रहते थे। लगभग एक घंटा मैं वहाँ पर बैठा रहता, उसके बाद मैं चला जाता था।

मैंने फिर उनका ध्यान धरा कि महापुरुषो! अब आप ही मुझे बचा दो। उधर यमदूतों को देख-देख कर मेरा हाल बहुत ही खराब होता जा रहा था। इतने में मैंने क्या देखा कि महापुरुष वहाँ पर आकर खड़े हो गए। कहने लगे, इसकी बाँह छोड़ो क्योंकि उस समय यमदूतों ने मुझे कसकर पकड़ा हुआ था -

इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा
ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ ***अंग - 78***

कहने लगे, इसने तो अभी छः-सात साल और जीना है और तुम लोग इसे अभी पकड़ कर ले जाने लगे हो। इस प्रकार महापुरुषों ने मुझे यमदूतों से छुड़ा दिया और मैंने उसी स्थिति में अपनी सारी जमीन-जायदाद महापुरुषों के चरणों में भेंट कर दी। इतने में मुझे होश आ गई, फलस्वरूप परिजनों का रोना-बिलखना बन्द हो गया। मेरे घरवाली मेरे पास आ गई। मैंने कहा, भाग्यवान! मैं जीवित तो हो गया हूँ, लेकिन मैंने अपना पच्चीस बीघे वाला बाग, (यह बाग हमारे खेत के साथ लगता था) जो कि आपके खेत के साथ लगता है, वह महापुरुषों के चरणों में अर्पित कर दिया। फिर मैं लगभग एक माह में पूर्णरूपेण स्वस्थ हो गया। फिर मैं स्वयं चलकर महापुरुषों के पास गया। मेरे साथ में मेरे बहुत सारे हितैषी भी थे। वहाँ जाकर मैं महापुरुषों को मिला। महापुरुषों ने कहा, लाला जी! हमने सुना था कि आप बीमार हो गए थे? मैं कहने लगा, महाराज जी! आप सब कुछ तो जानते हो। महापुरुष बोले, तुम्हारे साथ घटना किस प्रकार से घटित हुई?

कहने लगा, महाराज जी! आप तो सर्वज्ञ हो, आपने ही तो यमदूतों से मेरी बाँह छुड़ाई थी -

ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीअै पुकार ॥
ओथै सतिगुरू बेली होवै कढि लए अंती वार ॥
अंग - 1281

महापुरुष वहाँ पर भी सहायता करते हैं। कहने लगा महाराज जी आपने ही तो मुझे छुड़ाया था। आप भी जानते हो कि मैंने उस समय अपना पच्चीस बीघे का बाग आपके चरणों में अर्पित कर दिया था। अब हम आपकी अमानत आपको देने आए हैं, जिस प्रकार से आपका मन करता है, आप लिखवा लो। कोर्ट में जाकर लिखवाना है तो वहाँ लिखवा लो या किसी अन्य विधि से करना है, वह आप कर लो।

महापुरुष कहने लगे, लाला जी! इस प्रकार के कार्य छोटे सन्त जी करते हैं, बाबा किशन सिंह जी। आप उनके पास चले जाओ।

मैं वहाँ पर चला गया और मैंने छोटे सन्त जी को सारी वार्ता बतलाई। वे कहने लगे, अच्छा भाई लाला जी! देखो! हमने धमोट खेती करने तो जाना नहीं है। हम इसकी कीमत लगा देते हैं। कीमत चाहे तुम लगा दो या फिर हम लगा देते हैं। मैंने कहा महाराज! कीमत आप ही लगाने की कृपा करो। 25 बीघे का बहुत सुन्दर आम का बाग था, उसमें कुआँ लगा हुआ था और कोठा डाला हुआ था। महाराज जी कहने लगे, यदि हमने कीमत लगा दी तो फिर तुम अगर-मगर कुछ न करना। मैंने कहा, नहीं महाराज मुझे शत प्रतिशत आपकी बात स्वीकार्य होगी। वे कहने लगे, फिर उस बाग की कीमत हमने 2500 रुपए लगा दी है। अब 25 बीघे का बाग था और एक आप के पेड़ की ही कीमत 2500 रुपये की थी। वचनों को मानने की शर्तानुसार मैं 2500 रुपये महाराज जी को दे आया।

इसके बाद वह कहने लगा, अब आप ही बताओ कि जिसने मुझे यमदूतों से छुड़वा दिया, तो फिर वह भगवान है या नहीं?

अतः जो अन्तिम समय में सहायता करे वही सज्जन हुआ करता है, दूसरा तो खाने-पीने वाला ही होता है। इकट्ठे बैठ कर काफी पी ली, बर्फी खा ली, वे सज्जन नहीं हुआ करते हैं। आजकल दोस्ती तभी तक होती है, जब तक कि खाने-पीने को मिलता रहे। कई बिगाड़ भी देते हैं, अच्छे-भले व्यक्ति को शराब की लत लगा देते हैं।

इस प्रकार से जब सज्जन ने अपने नाम का मतलब सुना

तो वह शर्मिन्दा हो गया कि मैं तो इसे मारने की तैयारी कर रहा हूँ। ये जो मेरे नाम का तात्पर्य बता रहे हैं, फिर वह सज्जन कौन सा है? मैं तो फिर बहुत ही घटिया व्यक्ति हूँ। इसके बाद महाराज जी ने शबद की अगली पंक्तियों का उच्चारण किया -

कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥
ढठीआ कंमि न आवनी विचहु सखणीआहा ॥

अंग - 729

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥

अंग - 1380

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥ अंग - 1380

उल्टा ये काम क्या करती है? ये तो व्यक्ति के मन में रह जाती हैं। सारी जायदादें मन में रह जाती हैं कि इन्हें कौन सम्भालेगा? मेरे बच्चे तो सारी जिन्दगी मेरे साथ लड़ते ही रहे हैं। अब वे आकर इसे सम्भालेंगे और इसी ख्याल में शरीर का अन्त हो जाता है -

अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥ अंग - 526

ये चीजें तो प्रेत बना देती हैं। सज्जन भी सारी बात को समझ गया। उसके बाद महाराज जी ने अगली तुक (पंक्ति) का उच्चारण किया -

बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि ॥ अंग - 729

जो बगुले होते हैं, ये सफेद होते हैं, ये भी तीर्थों पर रहते हैं, पवित्र जगहों पर रहते हैं, लेकिन जो इनके भाई लोग हैं, वे भी इतने ही सफेद होते हैं, उन्हें हँस कहते हैं। हँसों की खुराक होती है हीरे-मोती। दूसरी तरफ जो बगुलों और कौवों की खुराक होती है, वह मेंढकों और मछलियों को खाना होती है और वे इसी तलाश में तीर्थों पर जाते हैं। यथा-

घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअनि ॥

अंग - 729

उसके बाद सज्जन समझ गया कि मैं तो बगुला ही हूँ, मैंने भेष तो बहुत अच्छा बनाया हुआ है, लोगों को भ्रम पड़ता है कि यह कोई बहुत ही उच्च कोटि का सन्त है। इसके अन्दर समदृष्टि है। यह मस्जिद को भी उतना ही प्यार करता है जितना कि मन्दिर को करता है लेकिन इस बात को कौन जानता है कि मैं तो रात को मुसाफिरों को अन्दर ले जाकर उनका गला दबा देता हूँ, उन्हें कुएँ में फेंक देता हूँ। यह तो मैं बगुले की भांति ही मेंढक व मछलियों को खाने का कार्य करता हूँ, हँसों वाला कार्य तो मैं करता नहीं हूँ क्योंकि हँसों की खुराक तो हीरा मोती ही हुआ करती है। अब वह बहुत निराश हो गया। उसके अपने कुकर्मों की सारी तस्वीर उसके सामने आकर खड़ी हो गई। इसके बाद गुरू महाराज जी ने अगली पंक्तियों का उच्चारण करना शुरू कर दिया कि ऐ सज्जन! तेरा जो जीवन है वह पूर्णत: निरर्थक जा रहा है, वह किसी काम का नहीं है। इसमें दिखावा बहुत है, आकर्षण बहुत है और दुनिया भ्रमित हो जाती है, लेकिन भद्रपुरुष! तेरे पास आकर तो उन्हें मृत्यु ही मिलती है, खुशी नहीं मिलती है। आप इस प्रकार से फुरमान करते हैं -

धारना - सिंमल रूख ने हुलारे मारे,
पंछी आ गए आस करके पिआरिओ।

सिंमल रूखु सरीरू मै मैजन देखि भुलंनि ॥

अंग - 729

यह जो मेरा भेष है, यह सेमर के पेड़ जैसा है। जब यह पेड़ फूलता है तो इसे छोटी-छोटी डोडियाँ सी लग जाती हैं। उस समय तोते उसे कोई अच्छा फल समझने की भूल कर बैठते हैं, लेकिन वे तो निरर्थक फूल हुआ करते हैं -

से फल कंमि न आवनी ते गुण मै तनि हंनि ॥

अंग - 729

ये फल तो कोई भी काम नहीं आते हैं बल्कि इसे मुँह में डालने पर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो गला ही घुटता जा रहा है। जो इसे खा लेता है, उसे गला घोंटू हो जाता है। अब वह स्वयं की तुलना पूर्णरूपेण सेमर से कर रहा है कि यह तो वाकई में मेरी ही बात है, मेरा तो जीवन ऐसा ही है। मैं तो जीवों के गले घोंटने वाला हूँ। मेरे पास आकर तो उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता है। मैं तो लूटकर उन्हें मार डालता हूँ। दूसरा मैं लोगों को पाखण्ड करके खूब दिखाता हूँ ताकि जन साधारण मेरा खूब महिमा मण्डन करे। इस प्रकार मेरा तो सारा जीवन ही निरर्थक है। अभी वह इन बातों को सोच ही रहा है कि गुरू महाराज जी ने सारे जीवन का निचोड़ निकाल कर शिक्षा देने के लिए अगली पंक्ति इस प्रकार से उच्चरित कर दी -

धारना - पिआरे जी, पापाँ वाले भार बंन लए।
औखा पैंडा दरगह वाला।

अंधुलै भारू उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥

अंग - 729

एक तो आँखों से अन्धा है, दूसरा भार भी बहुत उठाया हुआ है -

अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥

अंग - 729

आँखें हों तो रास्ते के बारे में पता चले। आँखें तो हैं नहीं, अब अन्धा व्यक्ति क्या करे? ठोकरें खाता जाता है, पहाड़ की चढ़ाई है, खड्डों में गिरता जाता है, हाथ-पैर

तुड़वाता जाता है। अब सोचता है कि क्या कोई तरीका है जिससे कि वह पार हो जाए? क्योंकि उस समय तो वह बिल्कुल ही **expose** हो गया। मन में ख्याल आ रहा है कि मैं अभी जाकर गुरू जी के चरण पकड़ लूँ यह तो कोई पूर्णतः सच्चा सन्त ही आ गया है। कोई ऐसा सन्त है जो दुनिया को सच्चा मार्ग दिखा सकता है और वह आज मुझे मिल गया है। जितना बड़ा मैं पापी था, आज उतना ही बड़ा शक्ति वाला यह आ गया है। क्या कोई रास्ता मेरे लिए भी होगा? अब मैं क्या करूँ? अभी यह सोच ही रहा है कि उस तरफ से एक हृदयवेधक आवाज इस प्रकार से आने लगी -

धारना - कटी जावेगी जमाँ वाली फासी,
नाम नूं संभाल बंदिआ।

रास्ता मिल गया -

चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥

अंग - 729

पापों के द्वारा बँधा हुआ तो नर्कों में जाता है लेकिन यदि तुम नाम को सम्भाल लो, उसके साथ जुड़ जाओ तो फिर तुम छूट जाओगे -

अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ जाँ
गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥

अंग - 902

एक चित जिह इक छिन धिआइओ
काल फास के बीच न आइओ। अकाल उसतति

उस समय कहने लगा, ऐ मन! आज वह सर्व शक्तिमान आ गया है। अब तुम तनिक सा भी आलस्य न करो। मुझे आज अनुभव हो रहा है कि भगवान भी अवश्य ही है और आज मेरा उद्धार करने वाला भी आ गया है। उस समय उसने हिम्मत की और सारा कुछ छोड़कर गुरू जी के चरणों पर ढह पड़ा तथा ऊँची आवाज में रोने लग पड़ा। उसके (सज्जन के) साथियों ने समझा कि शायद उनके मालिक को उन लोगों ने पकड़ लिया है। वे सारे बरछे लेकर आ गए। वह कहने लगा, भद्रपुरुषो! इन बरछों को दूर फेंक दो और यदि तुम लोगों ने भी बचना है, अपना उद्धार करवाना है तो उनके चरण पकड़ लो, आज तुम सभी बख्शे जाओगे। अब वह इस प्रकार से विनतियाँ कर रहा है -

धारना - तेरे वरगा ना दइआल सतिगुर मेरिआ,

हउ अपराधी गुनहगारू हउ बेमुख मंदा।
चोरू यारू जूआरि हउ पर घरि जोहंदा।
निंदकु दुसटु हरामखोरू ठगु देस ठगंदा।
काम क्रोधु मदु लोभु मोहु अहंकार करंदा।
बिसासघाती अकिरतघन मै को न रखंदा।
सिमरि मुरीदा ढाढीआ सतिगुरू बखसंदा।

भाई गुरदास जी, वार 36/1

पतितों का उद्धार करने वाला, ठगों का उद्धार करने वाला, चोरों का राक्षसों का उद्धार करने वाला गुरू नानक। उसके चरण पकड़ कर सभी बैठे हुए हैं कि पातशाह! हमें बख्श दो। हमने तो यह समझा था कि संसार के अन्दर सत्य है ही नहीं, भगवान है ही नहीं। मैं भी किसी समय साधू ही हुआ करता था, मैंने भी बहुत सारे जप-तप किए, मैंने उल्टा लटक कर भी बहुत सारे जप-तप किए, लेकिन मेरे पल्ले तो कुछ भी नहीं पड़ा। यदि कुछ पल्ले पड़ा तो वह था केवल निराशा क्योंकि मैं जितने भी साधुओं को मिलता था तो मैं देखता था कि वे सभी पाखण्ड करते हैं। वे सभी पैसे के पुत्र हैं, सभी एक दूसरे की निन्दा करते हुए दिखाई पड़ते हैं। सबको देखकर मैं हैरान हो गया कि परमात्मा तो है ही नहीं और यहाँ पर तो सब चोर और ठग ही घूम रहे हैं। फिर महाराज जी मैंने सोचा कि थोड़ा सा ही ठग बनना है, ऐसा बनें कि किसी को पता भी न चले। इस प्रकार से मैंने भेष बना लिया। एक तरफ मैंने मस्जिद बना दी और दूसरी तरफ ठाकुर द्वारा बना दिया, उसमें सारी मूर्तियाँ लगा दी ताकि राम का उपासक राम के पास जाए श्री कृष्ण का उपासक श्री कृष्ण के पास जाए, देवियों का उपासक देवियों के पास जाए और शिव जी की पूजा करने वाला शिव जी की पूजा करे। इसीलिए मैंने यह सारा नाटक रच दिया और मैं स्वयं एक बड़ा महात्मा बन गया। आज तो आपने मेरी वास्तविकता को प्रकट करके रख दिया है और आपने हमारे अन्दर की तस्वीर को ही खींच कर रख दिया है। हे महाराज जी! अब आप मुझे बख्श दीजिए, मैंने तो बहुत बड़ी-बड़ी गल्तियाँ की हैं। मैं आपको, मेरे द्वारा किए गए अपराधों की बानगी दिखाना चाहता हूँ, साथ ही वह ऊँची आवाज में रोता जा रहा है। पातशाह! आप अपनी आँखों से देखो कि मैंने कैसे-कैसे कुकृत्य किए हैं। लोग तो कहते हैं कि मैं बहुत बड़ा पुण्य करने वाला हूँ लेकिन मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि मैं किस प्रकार का पापी हूँ। उसने मशाल मंगवा ली और गुप्त दरवाजे को उठाकर भूमिगत कक्ष में प्रवेश कर गया। जब नीचे उतरा तो वहाँ से बदबू आ रही है। कहने लगा, महाराज जी! एक बार आप चहुँओर दृष्टि डाल लो।

महाराज जी ने उन पर दृष्टि मारनी ही थी क्योंकि उनकी दृष्टि ने सबको मुक्त कर देना था, मरदाना कहने लगा, महाराज जी! अपने साथ कोई ठगी न हो जाए?

गुरू जी बोले, मरदाना! अब तुम बेफिक्र हो जाओ शरीर बुरे नहीं होते, बल्कि इस शरीर के अन्दर रहने वाली रूह बुरी होती है। अब तो वह रूह मर चुकी है, जो कि लोगों को ठगा करती थी। यहाँ पर अब सन्त की आत्मा ने पैदा होना है। मरदाना! आओ! देख लो। जब देखा तो वहाँ

पर लोगों के शरीरों के असंख्य अस्थि पंजर दिखाई पड़े।

महाराज जी बोले, सज्जन! जो कुछ होना था वह हो गया हा। अब तुम उसे भूल जाओ। इस हवेली को गिरा दो और सारा धन गरीबों में वितरित कर दो। यदि तुम उन्हें जानते हो तो लौटा दो अन्यथा गरीबों में बाँट दो। अब सज्जन, मजदूरों को ले आया और हवेली को गिराने लग पड़ा और उसने सारी माया बाहर निकाल दी। कपड़ा वगैरह जो भी था, वह सब बाँट दिया। ढिंढोरा पिटवा दिया कि आ जाओ और अपनी जरूरत के सामान ले जाओ। सारे लोग कहने लगे कि सज्जन को क्या हो गया है? इसने तो अपनी सारी दौलत लुटा दी है, वह तो बिल्कुल खाली हो गया है। इसके पास तो अब रहने के लिए मकान भी नहीं रहा है। सज्जन, अब वृक्ष के नीचे बैठ गया।

महाराज जी बोले सज्जन! वह ठग की आत्मा, अब तेरे शरीर में से बाहर निकल गई है और अब इस शरीर में एक सन्त की आत्मा प्रवेश कर गई है।

महाराज ने उसके ऊपर कृपादृष्टि कर दी। आपने उसका कोई जप-तप नहीं देखा बल्कि अपना कृपा वाला हाथ उठाकर उसके सिर पर रख दिया -

करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु
मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ *अंग - 473*

गुरू जी बोले, सज्जन! कहो वाहिगुरू! नाम का कहलवाना क्या था कि पैर के अंगूठे से लेकर सिर की चोटी तक शरीर सम्भल ही नहीं पा रहा है। अब बिना जपने से नाम जपा जा रहा है। गुरू जी ने उसके आन्तरिक नेत्र खोल दिए और घट-घट में रमा हुआ परमात्मा दिखला दिया। कहने लगा भाई सज्जन! तुम तो पहुँच गए आनन्द के देश में। माया ने तो तुम्हें निराशा ही दी थी कि कहीं मैं पकड़ा न जाऊँ, किसी को पता ही न चल जाए लेकिन अब तुम्हें सच्ची जिन्दगी प्रदान कर दी है। जाओ! एक चारपाई लेकर आओ। अब हमने तुम्हें नीचे जमीन पर नहीं बैठाना है। गुरू जी ने एक चारपाई मंगवा ली और कहने लगे, लो भाई सज्जन! अब तुम इसके ऊपर बैठ जाओ। अब हम, तुम्हें इस पर बैठा रहे हैं। जो यह आनन्द तुम्हें प्राप्त हुआ है, इसे अब तुम सारे संसार में बाँटना। वैसे लोग तो तुम्हें सज्जन ठग ही कहेंगे लेकिन जिन्हें पता चल जाएगा कि तुम्हारे ऊपर कृपा हो चुकी है तो वे तुम्हें भाई सज्जन भी कहेंगे।

इस प्रकार से गुरू महाराज जी ने सज्जन के झूठ व पाखण्ड के गढ़ को धराशायी किया। यदि हम गौर से देखें तो हम सभी इसी प्रकार के वातावरण में रहते हैं, स्वयं की खोज करो, पता करो कि हम किस अवस्था में विचरण कर रहे हैं। लोग नमस्कारें करते हैं, मत्थे टेकते हैं, क्या हम मत्था टिकाने के योग्य भी हैं? अभी तो हमारे अन्दर धार्मिक तौर पर 'क', 'ख', 'ग' वाली बात चल रही है। इस प्रकार की रुचियाँ चल रही हैं, लूट-खसूट की रुचि चल रही है, धन एकत्र करने की वासना चल रही है, दूसरों को धोखा देने की, चालाकी करने की, जोर-जबरदस्ती करने की रुचियाँ चल रही हैं। अभी तो हम चालें चल रहे हैं कि यदि मैं यह बात करूँ तो अमुक व्यक्ति बदनाम हो जाएगा। बात को समझने की कोशिश करो, मैं साधुओं को कह रहा हूँ क्योंकि साधुओं की बात चल रही है। जो कार्य करने के लिए इस संसार पर आए हैं, वह कार्य करो। यह बात तो ठीक है कि यह संसार साधुओं के रहम पर है लेकिन यदि साधू ही दूषित हो जाएँ? फिर बाकी संसार में क्या बचेगा? यदि साधू के मन में से ही लालच न गया तो फिर अन्य लोगों का क्या कहना है? साधु संगत जी! समय तो नष्ट होता जा रहा है, जिन्दगी तो बीतती जा रही है। कोई आश्रम का मालिक बन बैठा है, लेकिन जायदाद अपने घर की बना रहा है। जायदाद के साथ मोह डाल लिया कि यह मेरा बन गया। बाबा जी, अभी उसे हटा दे कि यहाँ से चले जाओ। दुख मनेगा, गालियाँ देगा कि मैंने तो इतनी मेहनत से बनाया है और ये मुझे कहते हैं कि छोड़ जाओ। धोखा मत खाओ, ऊँचे निकलो और ऊँचे निकल कर वह अवस्था प्राप्त करो, जिसके लिए घर-बार छोड़ा है। अरे भाई! अपनी झूठी मशहूरी करवाने की क्या जरूरत है? मशहूरियाँ तो लोगों को फँसाती हैं। तत्व बात को समझो। तुम्हारे अन्दर के नेत्र खुल जाएँ और कण-कण में व्याप्त परमेश्वर दिखाई देने लग पड़े फिर तो जीवन सफल है, अन्यथा हम लोग सज्जन से भी अधिक बुरे हैं। सज्जन ने तो अपनी वास्तविक स्थिति को मान लिया था जबकि हम लोग तो मानते ही नहीं हैं। हम लोग तो कहते हैं कि ठीक है, जो कुछ भी है। हम सार्वजनिक रूप से कैसे कह दें कि मैं तो अमुक गलती करता हूँ।

लेकिन मैंने ऐसे लोग देखे हैं कि जो बहुत अधिक दलेरी वाले होते हैं। जब यू.पी. में दीवान लगा करते थे, कीर्तन चल रहा होता था और बाल्मीकि जैसी कोई साखी चल रही होती थी, तो उस समय वे उठकर खड़े हो जाते। मैं कीर्तन रोक कर पूछा करता बन्धु! क्या बात है? वे बतलाते, बाबा जी! जो आप यह सब सुना रहे हो, यह मेरी ही गाथा है। चोरियाँ मैंने कीं लेकिन फँस कोई और गया। लोगों का कत्ल मैंने किया लेकिन फाँसी कोई दूसरा चढ़ गया। क्या मेरा भी कभी उद्धार हो सकेगा? क्या मुझे भी बख्श देने वाला कोई आ जाएगा? संगत ने जय जयकार करने लग पड़ना। एक दिन मेरे पास दरोगा आ गया। कहने लगा जी! आपके दीवानों के अन्दर confusion उत्पन्न होती है क्योंकि उन जुल्मों

की तो सजा भी हो चुकी है और अपराधियों को कैद भी हो चुकी है। अब इस जुल्म को इकबाल करने का क्या तात्पर्य रह जाता है?

मैंने कहा, आप बतलाओ कि आपका attitude क्या है?

वे कहने लगे, हमारा तो मतलब होता है कि व्यक्ति को सुधारा जाए। जेल के अन्दर सजा देना हमारा उद्देश्य नहीं होता है बल्कि उसे सुधारना ही हमारा लक्ष्य होता है। आप वचनों के द्वारा सुधारते हो और हम डण्डे के द्वारा सुधारते हैं। फिर हमारा attitude यह होता है कि यदि उसने छः महीने में कोई वारदात दोबारा कर दी तो हम पहले वाली भी साथ में जोड़ देते हैं और यदि उसने इतने समय में कोई भी वारदात नहीं की तो फिर हम उसका नाम दस नम्बरी वाले बस्ते से बाहर निकाल कर भले लोगों की सूची में डाल देते हैं।

अतः इस प्रकार से वे हिम्मत वाले थे जो कि अपने अवगुणों को सार्वजनिक रूप से प्रकट कर देते थे। यथा -

अउगणु सभ परगासिअनु रोजगारू है एहु असाड़ा।
भाई गुरदास जी, वार *10/19*

वे कहते थे कि हमें तो पैसा ही इस व्यवसाय में से प्राप्त होता है। हम लोगों का तो रोजगार ही यह है कि हम पशुओं की चोरी करते हैं और हिटमैन बनते हैं। अब हमने गुरू की बाणी सुनी है, तो हमारे नेत्र खुल गए हैं। वे हिम्मत वाले थे इसलिए पहुँचे कहाँ पर? उन्होंने सचमुच ही साधुओं जैसे जीवन बना लिए और परोपकारी बन गए तथा पचास-पचास ट्रक लेकर यहाँ पर पहुँचते हैं तथा काफी-काफी दिनों के लिए घरों को पीठ देकर यहाँ पर सेवा करने के लिए पहुँचते हैं और तन-मन-धन से सेवा करते हैं। हम लोगों की अपेक्षा तो वे बहुत अच्छे हैं क्योंकि हम तो अपने अवगुणों को अपने पैरों के नीचे दबा कर रखते हैं, उन्हें प्रकट करने का साहस हम नहीं कर पाते हैं। हमारे अवगुण तो यमराज के पास जाकर ही प्रकट होंगे। अतः सारी वार्ता को समझने का यत्न करो, ऐसा न हो कि हम लोग भी सज्जन ठग की भांति ही अपना जीवन व्यतीत करते रहें। वह तो फिर भी अपने जीवन को संवार गया और हम कहीं अपने जीवन को बिगाड़ कर ही यहाँ से न चले जाएँ।

अब समय अनुमति प्रदान नहीं कर हा है, इसलिए अब सारे प्रेमीजन आनन्द साहिब में बोलो। जो अभी तक नहीं बोले वे भी अब अपनी रसना (जिह्वा) को पवित्र कर लो।

(पृष्ठ 11 का शेष)

दोनों इकट्ठे सो जायें फिर गहरी नींद भी आती है तथा सपनों वाली भी आती है। सपना अज्ञान का रूप हुआ करता है, जब तक सपने आते हैं सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि सपने में कई उत्तम नीच घटनायें घटित होती है जैसे कि -

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी।
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी॥
अंग - 657

पर जब नाम अभ्यास बढ़ जाता है तो एक सुरत अन्दर और जागती है जिस पर माया का कोई लेप नहीं होता। उसे कभी भी नींद नहीं आती। वह सुरत माया की नींद से विलक्षण होती है। उसमें शरीर तो सो जाता है पर सुरत अपने स्वरूप में लीन होकर जागती है वहाँ अज्ञान का कोई अंश नहीं होता, वह सदीवी जाग में रहता है। शरीर अपनी नींद पूरी करके तत्पर हो जाता है। सुरत सदा ही जागने के कारण नींद के साथ कोई भी सम्बंध नहीं रखती। यह एक बहुत बिखड़ा (दुखों से भरा) अनुभव है जिसे जल्दी जल्दी माना नहीं जा सकता। सिख सम्प्रदाय में ही अनेक महात्मा हुये हैं जो सदीव ही जागते रहते थे। देह हंगता, उनमें न होने के कारण शरीर के जागने का या सो जाने के साथ उनका कोई मतलब नहीं था। वे आत्म पद में अरूढ़ हुये न ही शारीरिक नींद में आते हैं, न ही मायिक नींद के भ्रम में आते हैं। नाम के बल के कारण या योग साधन के बल के कारण नींद पर पूरी तरह से विजय प्राप्त की जा सकती है, ये अवस्थाएं, बन्दगी करने वालों ने प्रत्यक्ष रूप में देखी हैं। समाधि नींद नहीं हुआ करती, पूरी तरह से जाग्रत अवस्था हुआ करती है। मनोवैज्ञानिक, मन के तीन भाग बताते हैं। एक को 'जाग्रता' कहते हैं । यह वह मन होता है जो संसार से सम्बन्धित होता है। दूसरे को 'अर्ध चेतन' और तीसरे को 'मूर्च्छित मन' कहते हैं पर गुरमुखों का विचार इसके विपरीत है जो गुरमत के अनुकूल है वह यह है कि यह संसार के साथ सम्बन्ध रखने वाला मन अरबों-खरबों वर्षो से माया की नींद में सोया पड़ा है तथा स्वपनमयी अवस्था में जीवन बिता रहा है। इसके बारे में फ़रमान है -

सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ।
बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ।
आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ।
पूरन भए न काम मोहिआ माइआ।
किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ॥
अंग - 707

'चलता'

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ।।

सन्त वरियाम सिंह जी
संस्थापक वि. गु. रू. मिशन

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 43)

परमेश्वर के पास जीवात्मा कैसे जाएगी? क्योंकि यह तो मैल से भरी पड़ी है, मैले व्यक्ति को तो कोई भी अपने पास फटकने नहीं देता है, लेकिन जब तुम सन्तजनों की वचन रूपी धूल में स्नान करोगे और उसे पावन जान कर अपने मस्तिष्क के साथ लगाओगे, तो उससे जन्म जन्मान्तरों की मैल उतरनी शुरू हो जाएगी, कर्मों की मैल उतरनी शुरू हो जाएगी। वैसे कर्मों की मैल उतरनी बहुत मुश्किल है। कर्मों के फल तो भोगने ही पड़ते हैं। बड़े बड़े लोग हुए हैं जो कहते हैं कि मैं नहीं कर्म भोगूँगा, कर्म मेरे ऊपर कैसे आ जाएगा? मुझे पता है कि यदि ऐसा भोगना पड़ेगा तो फिर मैं नहीं भोगता। गुरू जी कहते हैं कि ऐ भद्रपुरुष! तुम्हें तो यह फल भोगना ही पड़ेगा। हाँ जो संचित कर्म हैं, उन्हें तुम जला सकते हो, लेकिन यदि तुम इसकी युक्ति को सीख लो। यदि तुम्हें युक्ति का पता चल जाए तो फिर तुम उन कर्मों को जो कि स्टोर में पड़े हुए हैं, उन्हें जला सकते हो। जब तुम उन्हें जला दोगे, तो फिर तुम्हारा अगला जन्म नहीं होगा। क्योंकि यदि फल देने वाला बीज ही जल जाए या उसे उचित सेक लगा जाए, यानि कि उसकी गर्मी निकल जाए तो फिर वह बीज उगेगा ही नहीं, चाहे तुम उसके लिए कितनी भी कोशिश क्यों न कर लो। इसी प्रकार से यदि तुम कर्मों को, नाम का सेक लगाने की युक्ति सीख लो तो फिर बीज उगने के योग्य ही नहीं रहता है। त्रिकुटी के ऊपर कर्मों का स्टोर पड़ा हुआ है। इसे करोड़ों जन्मों में भी भोगना ही पड़ता है। विभिन्न प्रकार की योनियों को धारण करके इसे भोगना पड़ता ही है -

भोगे बिन भागे नही करम गती बलवान। अंग - 937

इनके ऊपर हमारा कुछ भी वश नहीं चलता है, परन्तु यह बात अवश्य है कि वे नर्म पड़ जाते हैं, सन्तजनों या महापुरुषों के पास वीटो शक्ति होती है। गुरू अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करके कर्मों को नर्म कर देता है। वह चाहे कर्मों रूपी सूली की शूल बना दे और चाहे वह स्वप्न में ही समाप्त करवा दे क्योंकि परमेश्वर ने यह शक्ति गुरू को दी हुई है क्योंकि -

जो किछु करै सोई प्रभ मानहि
ओइ राम नाम रंगि राते॥
तिन्ह की सोभा सभनी थाइ
जिन्ह प्रभ के चरण पराते॥ *अंग - 748*

अत: इसके अतिरिक्त अन्य कोई तरीका नहीं है, बाकी सबको तो प्रारब्ध कर्मों को भोगना ही पड़ता है और क्रियामान कर्मों को तुम रोज करते हो, इसलिए बुरी चीजों को मत बोओ -

अैसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईअै॥
अंग - 915

इस प्रकार का काम मत करो जिससे तुम्हें पछताना पड़े-

अैसी कला न खेडीअै
जितु दरगह गड़आ हारीअै॥ *अंग - 469*

जिन कर्मों को करने से दरगाह में जाकर हार मिले तो उस प्रकार के कार्यों को करो ही मत। स्वयं को शक्तिशाली रखो। इस प्रकार के बीजों को मत बोओ, जिनके फलों को भोगते समय हमें परेशानी हो। व्यक्ति कर्मों को कर तो लेता है लेकिन जब उन्हें भोगना पड़ता है तो फिर वह रोता है -

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के अन्दर एक जनमेजा नाम के राजे का जिक्र आता है। वह इस बात पर अड़ गया कि यदि आदमी को भविष्य में होने वाली घटना के बारे में पहले से ही पता हो तो वह उसे होने ही नहीं देगा क्योंकि व्यक्ति भी बहुत शक्तिशाली होता है। उसके पास ऋषिराज व्यास जी जब आए तो वह कहने लगा, ऋषिराज! आप तो त्रिकालदर्शी हैं, आपको भूत, वर्तमान व भविष्य यानि सबके बारे में ज्ञान है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है जो बातें हजार या दो हजार वर्ष बात भी होने वाली हैं, उन्हें भी आप जानते हो। जब आपको सब कुछ पहले से ही पता था तो फिर आपने महाभारत का युद्ध होने ही क्यों दिया? ऋषिराज कहने लगे, राजन्! 'विनाशकाले बुद्धि विपरीते।'

होणहार हिरदे वसी गई सरीरों बुध।

जब होनी आकर बस गई तो फिर कुछ भी न हो सका। हम लोगों ने बहुत कोशिशें की श्री कृष्ण महाराज जी ने भी बहुत कोशिशें कीं लेकिन कुछ हो न सका लेकिन वह कहने लगा कि यह तो गलत बात है, जब आपको पता था तो फिर आपने युद्ध को होने ही नहीं देना था। कितना बड़ा अनर्थ हुआ? अट्ठारह दिनों में पैंतालिस लाख लोग मारे गए? भारतवर्ष की शक्ति ही समाप्त हो गई। इतना अनर्थ हुआ? और आप उसे रोक ही न सके? ऋषिराज जी कहने लगे, राजा जनमेजा! यह रुका नहीं करता है। वह कहने लगा, यह सब तो बाद की बातें हैं, जब कोई घटना घटित हो जाती है तो फिर कह दिया जाता है कि यह सब तो परमेश्वर की मर्जी है। यह तो कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं है? ये तो केवल स्वयं को ढाढ़स बंधाने वाली बातें ही हैं। इस प्रकार वह बहुत कुछ बोला जैसे कि हम लोग भी बोला करते हैं।

ब्यास ऋषिराज कहने लगे, राजन्! जो बात होनी होती है, वह किसी भी प्राकर से टला नहीं करती है। वह कहने लगा, ये तो कोई बात ही नहीं हुई। यदि मुझे पता हो कि यह बात मेरे ऊपर होने वाली है, तो मैं उसे होने ही नहीं दूँगा। ब्यास जी कहने लगे, अच्छा फिर ऐसा करो कि अपने लेखकों को बुलवा लो। उसने बुलवा लिया। व्यास जी बोले, देखो! तुमने एक घोड़ी खरीदनी है, उसने दक्षिण दिशा की तरफ जाना है, वहाँ पर तुम्हें प्यास लगनी है, तुमने जंगल में एक झोंपड़ी के पास जाकर पानी मांगना है। वहाँ पर अनार्य जाति की अत्यन्त सुन्दर लड़की होगी। वह जिस समय तुम्हें पानी पिलाएगी तो उस समय तुम उसके ऊपर मोहित हो जाओगे तथा उसे घोड़े पर बैठा कर अपने घर ले आओगे। राजन्! यह बात लिख ली? वह बोला, हाँ! ऋषिवर। उसके बाद ब्यास जी बोले, इस कृत्य के कारण तुम्हारी सारी प्रजा तुम्हारे ऊपर नाराज हो जाएगी कि उसने अन्य जाति की लड़की से शादी करके घोर पाप कर दिया है क्योंकि यह तो आर्यों की रहस्यात्मक बातों को पता करके, अनार्यों को बता देगी। उस समय में जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र हुआ करते थे जो शस्त्र चलाने वाले होते थे, वे मन्त्रों के द्वारा शस्त्रों को सिद्ध किया करते थे। आर्यों के मन्त्र सर्वाधिक शक्तिशाली होने के कारण ये जीतते ही चले आ रहे थे जबकि अनार्यों को इनके बारे में पता ही नहीं था।

आज के युग में भी यही बात है। आज के युग में अणु तकनीक का पता है, वे दूसरों को बताते ही नहीं हैं। जर्मनी को अपनी तकनीक के बारे में पता है, रूस को अपनी का बता है, फ्राँस व चीन को अपनी के बारे में पता है। कोई भी एक दूसरे को जरा सी भी नहीं बताता है। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को जरा सी भी तकनीक बेच दे तो उसे फाँसी की सजा दे देते हैं। इसलिए वे सोचने लगे कि यह तो उन लोगों से पता करके अनार्यों को बता देगी और हम लोग तो खत्म ही हो जाएंगे। इसलिए सभी लोग नाराज हो गए, सबने राजे के साथ बोलना बन्द कर दिया। उस समय उन्होंने कहा कि उसके बाद तुम यज्ञ करोगे और तुम्हारे यज्ञ के अन्दर कोई भी ब्राह्मण नहीं आएगा। न आने के कारण तुम ब्राह्मणों के बच्चों को ले आओगे। जिस समय वे लोग भोजन कर रहे होंगे तो उस समय वे अपनी किसी बात पर हँस रहे होंगे लेकिन तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा कि ये लोग मेरी रानी को देखकर हँस रहे हैं। उस समय तुम्हें इतना क्रोध आएगा कि तुम उन्हें उठाकर कड़ाहों में उबाल दोगे। इसका दोष यह होगा कि तुम्हें कोढ़ हो जाएगा। उस समय तुम मुझे याद करोगे और फिर मैं तुम्हें श्रीमद् भागवत की कथा सुनाऊँगा क्योंकि परमेश्वर का जो नाम है, वह समस्त बीमारियों का इलाज है -

धारना - तेरे सारिआं दुखां दी है दारू
इको नाम वाहिगुरू दा।

सरब रोगु कउ अउखदु नाम।

कहने लगे राजन्! जब तुम उस श्रीमद् भागवत की कथा को सुनोगे तो उस समय तुम्हारे अन्दर कुछ श्रद्धा आएगी लेकिन कुछ तर्क आ जाएगी। जब तुम्हारे अन्दर तर्क आ जाएगी तो उसके कारण इसका फल पूर्णतः समाप्त हो जाएगा, फिर तुम इस रोग के द्वारा काल को प्यारे हो जाओगे। मैंने यह सारा घटना चक्र तुम्हें बता दिया है और तुमने लिख लिया और मैंने लिखवा दिया है। अब तुम कुछ न कुछ प्रबन्ध कर लो। वह कहने लगा प्रबन्ध हो गया है, मैंने आज के बाद कोई भी घोड़ी ही नहीं खरीदनी है। चार वर्ष बीत गए सारे जरनैल इकट्ठे हो गए, वे कहने लगे, महाराज! सीमाओं पर जो राजे हैं, चीन के व ईरान के, उनके पास दो-दो लाख घोड़े हैं और आप घोड़े खरीद ही नहीं रहे हैं। चार साल पुरान घोड़े हो चुके हैं, घोड़ों की चुस्ती समाप्त हो रही है। अब यदि यही हाल रहा फिर तो हार अवश्यम्भावी है। कृपा करो आप घोड़े खरीदने की आज्ञा जारी कर दो

और घोड़ी मत खरीदो। राजा ने आदेश जारी कर दिया। एक घोड़ी इतनी सुन्दर आ गई कि सबने यह फैसला कर लिया कि यह घोड़ी किसी अन्य के अस्तबल में नहीं रहनी चाहिए। यह तो हमारे अस्तबल में ही होनी चाहिए। फलस्वरूप उन्होंने घोड़ी खरीद ली। राजा जनमेजा को कहने लगे, महाराज! आप इस घोड़ी के ऊपर मत चढ़ना। वह कहने लगा, ठीक है। समय गुजरता गया। एक दिन अस्तबल की देखभाल करने वालों ने कहा कि घोड़ी की तो सैर ही नहीं हो पाती है। इसलिए वह तो उदास होती जा रही है। इतना धन खर्च करके घोड़ी लेने का तो कोई लाभ ही नहीं है। सारे जरनैल इकट्ठे हुए कि क्या किया जाए? सब कहने लगे महाराज! तीन तरफ ही आप जाना, चौथी तरफ जाना ही नहीं। वह बोला, ठीक है। इस प्रकार वह घोड़ी पर चढ़कर जाने लग पड़ा। एक दिन उसे दिशा भ्रम हो गया, अब उसे पता ही न चला कि मैं किस दिशा की ओर जा रहा हूँ? वह दक्षिण दिशा की ओर ही चल पड़ा लेकिन उसे ऐसा लगा कि मैं पश्चिम दिशा की ओर जा रहा हूँ। इस प्रकार का दिशा भ्रम कई बार लोगों को हो जाया करता है। अब वह घोड़ी पर बैठा हुआ जा रहा है और बहुत दूर तक जंगल में निकल गया। उसे पानी की बेहद प्यास लगी हुई थी। वह बार बार अपने होंठों पर पानी फेरता जा रहा है लेकिन पानी तो कहीं पर भी प्राप्त नहीं हो पा रहा है। काफी दूरी पर उसे एक झोपड़ी दिखाई पड़ी। वह उस झोंपड़ी के पास पहुँचा तो उसने आवाज दी कि मैं राजा जनमेजा हूँ, मुझे पानी पिलाओ! झोंपड़ी के अन्दर से एक अत्यन्त सुन्दर लड़की निकली और उसने इसे जब पानी पिलाया तो, यह उस सुन्दरता की देवी को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठा। उस समय इसे अपनी सारी मर्यादाएं भूल गईं और इसने उस लड़की को खींच कर अपनी घोड़ी पर बैठा लिया तथा उसे लेकर अपने राज्य में ले आया। जब जनता को पता चला कि यह तो अनार्य लड़की को ले आया है तो वे लोग बहुत दुखी हो गए कि यह तो हमारे ही घर में सी. आई. डी. आ गई है। उस समय जनता ने बहुत अधिक ऐतराज व्यक्त किया। तत्कालीन जनता के अन्दर यह शक्ति हुआ करती थी कि वे लोग, राजा को राजगद्दी पर से उतार दिया करते थे। आखिर उसने अपने निकटवर्ती अधिकारियों से बात की कि अब क्या किया जाए? उन्होंने कहा कि आप अश्वमेघ यज्ञ कर दो। इस प्रकार धीरे-धीरे लोगों का ध्यान बदल जाएगा। राजा ने उसी घोड़ी के बछेरे पर काठी डाल कर तथा लगाम टांग कर सारे देश में घुमाना शुरू कर दिया, साल दो साल के कठिन परिश्रम के बाद घोड़ा वापिस आ गया और सारे राजे मातहित हो गए। उसके बाद यज्ञ शुरू हो गया। लेकिन यज्ञ के अन्दर कोई भी पण्डित न आए, सबने जवाब दे दिया। जहाँ बच्चे पढ़ रहे थे, वहाँ पर चला गया तथा उन बच्चों को ले आया कि ये भी तो ब्राह्मणों के ही बच्चे हैं। यज्ञ शुरू हो गया। उस समय की मर्यादा थी कि राजा व रानी दोनों धीरे धीरे घूम कर देखा करते थे कि जहाँ पर पंक्तियां लगी हुई हैं क्या सबको भोजनादि ठीक ठाक मिल रहा है। छत्तीस प्रकार के भोजन बने हुए थे। उस समय बलवान लोग होते थे, हम लोगों जैसे नहीं होते थे कि एक फुलका खा लिया और रवाना हो गए, उस समय की मर्यादा लिखी हुई है कि ब्रह्मचारी 32 ग्राहियां खाता था, गृहस्थी 24 ग्राहियां, वानप्रस्थी (50-75 वर्ष की आयु वाला) 16 ग्राहियां तथा सन्यासी आठ ग्राहियां खाया करता था। अधिक खाने वाला भी दोषी होता था तथा कम खाने वाला भी दोषी होता था। इस प्रकार जब लंगर का वितरण हो रहा है तो रानी बार-बार आ रही है लेकिन वह रानी कपड़े बदल-बदल कर आ रही है। एक विद्यार्थी कहने लगा कि इस राजा की बहुत सी रानियां हैं। दूसरा ब्राह्मण पुत्र बोला, नहीं, रानी तो एक ही है लेकिन वह कपड़े बदल लेती है। वह बोला, तुम्हें कैसे पता है? वह बोला, इस बार जब रानी आई थी तो मैंने अपने नाखून पर रख कर एक चावल मारा था, वह रानी के पैर के साथ लगा हुआ है। दूसरे बच्चों ने दूर से ही देख लिया कि वह चावल तो उसके पैर को वास्तव में ही लगा हुआ है। उस समय सारे बच्चे खिल खिलाकर हँस पड़े। उधर से हवा आई और रानी का पल्ला भी ऊपर उठ गया। राजा क्रोध में आ गया कि ये सब मेरी रानी को देखकर हँसे हैं। उसने सबको उठवा कर भट्ठी के अन्दर डाल दिया। श्री गुरू जी कहने लगे -

रोबै जनमेजा खुड़ गड़आ॥
एकी कारणि पापी भइआ॥ *अंग - 954*

18 गोत्रों के ब्राह्मणों को मारकर राजा पापी बन गया, उसके बाद वेद व्यास जी आए, वे कहने लगे, देखा राजन्! तुम कह रहे थे कि मैं विधाता के विधान को बदल दूँगा, बस उसके बारे में मुझे पता लग जाए लेकिन राजन्!

इस का बलु नाही इसु हाथ॥
करन करावन सरब को नाथ॥

आगिआकारी बपुरा जीउ॥
जो तिसु भावै सोई पुनि थीउ॥ *अंग - 277*

यदि इसके अपने हाथ में हो तो यह तो आज ही राज तख्त पर बैठ जाए। यहाँ पर तो बस परमेश्वर का खेल ही चल रहा है। कर्मों के हिसाब-किताब को बराबर किया जा रहा है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो कि कर्मों की गति को बदल देने का देवा कर सके। अतः वेद व्यास जी कहने लगे, देखो! अब एक आखिरी मौका है। मैं श्रीमद् भागवत की कथा करूँगा और तुम उसे प्यारपूर्वक श्रवण करना। आप कथा करने लग गए और यह श्रवण करने लग गया। आगे एक प्रकरण आ गया। व्यास जी कहने लगे, राजन् अब मैं मन्त्र बल बताने लगा हूँ, तुम इसे श्रद्धापूर्वक ही श्रवण करना अर्थात किसी बात पर तर्क मत करना। तर्क तो प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को ही आ जाया करती है। अच्छे-अच्छे लोगों को तर्क आ जाती है, गुरवाणी पर भी असंख्य लोगों को तर्क आ जाती है कि गुरू साहिब ने यह क्या कह डाला? हम लोग तो गुरू साहिब से भी ऊपर निकल जाते हैं। अब जरा सी तो अक्ल होगी लेकिन वह भी गुरू को टोक देगा, गुरू पर तर्क करेगा।

जिस समय उस प्रकरण पर आया और ब्यास जी ने उसके नेत्रों की तरफ देखा तो आप मुस्कुरा पड़े और कहने लगे, राजन्! लो जो बात मैंने तुमको कही थी, वही आ गई है। अब तुम इस बात को अस्वीकृत करते हुए इस पर तर्क करोगे। वहाँ पर प्रकरण यह था कि भीम को भीलों ने घेर लिया तो इसके पास शस्त्र कोई नहीं था, उन्होंने भीम को हाथियों के घेरे में ले लिया। उस समय भीम ने हाथियों को घुमा घुमा कर आसमान में ऐसा फेंका जो कि आज तक ऊपर ही घूम रहे हैं। इसने नाक भौं सिकोड़ डाली कि यह कैसे हो सकता है? अर्थात इसने इस बात पर तर्क कर दी। ब्यास जी बोले, क्यों राजन्! मन में तर्क आ गई? कहने लगा, हाँ। ब्यास जी बोले, क्यों? राजा कहने लगा, मनुष्य के अन्दर इतनी शक्ति कहाँ हो सकती है? ब्यास जी बोले, लो हम योग बल से सारे हाथियों के अस्थिपिंजर नीचे उतार देते हैं। उस समय उन हाथियों के अस्थिपिंजरों के ढेर लगा दिए। ब्यास जी बोले, क्यों अब यकीन हो गया? वह बोला, हाँ, महाराज। ब्यास जी कहने लगे, लेकिन राजन्! तुमने तर्क कर दी है, इसलिए अब तो तुम्हारा मरना तय है। नाक के ऊपर कोढ़ रह जाने से उसकी मृत्यु हो गई। गुरू जी कहते हैं -

राजा जनमेजा दे मती
बरजि बिसि पड़ाइआ॥
तिनि करि जग अठारह घाए
किरतु न चलै चलाइआ॥ *अंग - 1344*

रोक-रोकर कर, समझा-समझा कर व्यास जी ने उसे पढ़ाया लेकिन उसने अट्ठारह गोत्रों के ब्राह्मणों को मार डाला। इस प्रकार परमेश्वर द्वारा लिखी बात को कोई भी वापिस न कर सका, उसे कोई भी बदल न सका।

जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि॥
अंग - 74

अब किया क्या जाए? इतना सख्त है परमेश्वर का हुक्म व उसकी कलम। हम लोग गरीब आदमी उसके शिकंजे में फँसे हुए हैं। क्या इससे बचने का कोई तरीका भी है? गुरू जी कहते हैं कि यह तो मुश्किल बात है। इस प्रकार पढ़ लो -

धारना - लेख ना मिटही हे सखी,
जो लिखिआ करतारि।

इतनी मजबूत है वह कलम। उसे तो कोई मिटा ही नहीं सकता है, फिर हम तो बुरी तरह से फँस गए हैं? अब किया क्या जाए? अब यदि किसी के पास वीटो शक्ति है तो केवल वह गुरू के पास ही है -

मेरी बांधी भगतु छडावै
बांधै भगतु न छूटै मोहि॥
एक समै मो कउ गहि बांधै
तऊ फुनि मो पै जबाबू न होइ॥ *अंग - 1253*

केवल साधुओं के अन्दर यह शक्ति हुआ करती है कि वे मेरी बात को काट सकते हैं लेकिन साधुओं की बात को मैं नहीं काट सकता हूँ।

गुरू पाँचवें महाराज जी के पास सकेत मण्डी का राजा आ कर ऐतराज करता है कि महाराज! मैं आपके पास दो लाख रुपया लेकर आया हूँ, परन्तु यदि मेरा लेख ही न मिट सका तो फिर उसका क्या लाभ है? महाराज जी कहने लगे, अच्छा फिर तुम यहाँ पर तीन दिनों तक ठहरो। रात्रिकाल में राजा को स्वप्न आता है, उसे सारा कुछ स्वप्न में ही भुगता दिया। उसने महाराज जी के पास आकर स्वप्न के बारे में बताया महाराज जी कहने लगे, राजन्! यह सब कुछ तुम्हारे साथ ऐसा ही होना था लेकिन तुमने आकर गुरू की शरण ले ली फलस्वरूप सारी चीजें स्वप्न में ही चली गईं, इसलिए अब तुम्हें चण्डालों के घर जन्म नहीं मिलेगा। गुरू जी कथन

करते हैं -

जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु॥ अंग - 135

इस प्रकार से अहंभाव का भी नाश हो जाता है -

कामि करोधि न मोहीअै बिनसै लोभु सुआनु॥

अंग - 135

ये जो पाँच चोर हैं, ये भी तुम्हें मोह नहीं सकते तथा जो लोभ रूपी कुत्ता है, वह भी खत्म हो जाता है।

सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु॥

अंग - 135

सारे संसार में जै जैकार हो जाती है -

अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु॥

अंग - 135

जो जीवों पर दया करता है, उसकी दया का ही इतना अधिक फल हो जाता है जितना कि अड़सठ तीर्थों का फल हुआ करता है।

जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु॥

अंग - 135

जिसके ऊपर वाहिगुरू कृपा कर दे वह सुजान है। अपने आप को सुजान कोई न बनाए।

जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु॥

अंग - 136

इस प्रकार से इस महीने का जो महात्म्य है, वह बहुत से प्रकार से है। बहुत सारे प्रेमी तो यह प्रण कर लेते हैं कि महीना भर हमने इस नदी पर स्नान करना है। इस नहर पर स्नान करना है। प्रातःकाल में ठंड बहुत होती है। वे सुबह से ही किसी साधू के साथ मिले हों तो वह कह देता है कि तुम प्रातःकाल तक वाहिगुरू-वाहिगुरू करने से मत हटना तो उसे इस स्नान का फल मिल जाता है और वैसे भी इस स्नान का फल होता है। इसी प्रकार से कोई जाप रख लेता है कि मैंने माघ के महीने में आकर जाप करना है। कोई वाणी पढ़ता है, कोई सुखमनी साहिब का पाठ कर लेता है। सारी अच्छी चीजें हैं, कोई बुरी चीजें नहीं हैं। जो इस नियम को करते हैं, वे सब बहुत ठीक है, लेकिन श्री गुरू जी तो हमें शिखर वाली बात बताते हैं। वे कहते हैं कि यदि तुमने पूरा-पूरा फल लेना है, फिर तो तुम अन्दर के तीर्थ में स्नान करो, उसे जानने का यत्न करो। जब तुम उसमें नहा लोगे तो फिर तुम पवित्र से भी पवित्र हो जाओगे। अब समय अनुमति नहीं दे रहा है इसलिए अब मैं यहीं पर समाप्त करता हूँ। जो विनतियां की गई हैं, उन्हें समझने का यत्न करो। जो अमृतसर का स्नान हमारे लिए बताया गया है, वह करो -

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रितसरि नावै॥ *अंग - 305*

वह रास्ता तो हमारे अन्दर ही है लेकिन हमें इसका कोई पता नहीं है क्योंकि हमारे पास कोई नक्शा नहीं है। इसका फार्मुला यह है कि पहले तो गुरू वाले बन जाओ। जब तक गुरू वाला नहीं बनता है, तब तक मार्ग नहीं मिल पाता है। जब तुम गुरू वाले बन जाओगे तो फिर श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी कहते हैं कि तुम स्वीकार्य रूहों यानि कि गुरुमुखों की मदद ले लो। गुरमुखजनों को तुम चाहे सन्त कह लो, चाहे साधू कह लो। सन्त कहने में बहुत लोगों को एलर्जी है, इसका तो पता नहीं क्या कारण है? यदि इनका वश चले तो शायद ये श्री गुरू ग्रन्थ साहिब के अन्दर से सन्त शब्द को ही निकाल दें। कभी घबराहट में ये लोग कहते हैं कि सन्त तो केवल श्री गुरू नानक देव जी ही थे, उनके अतिरिक्त अन्य कोई सन्त हुआ ही नहीं है। गुरवाणी के अन्दर जिक्र आता है -

किआ अपराधु संत है कीना॥
बांधि पोट कुंचर कउ दीना॥ *अंग - 870*

जहाँ पर गुरू का जिक्र आता है, वहाँ पर कबीर साहिब के सद्गुरू का जिक्र आता है कि उसका गुरू पूरा था। जब कबीर साहिब ने दर्शन किया और गुरू के चरणों को इसके शरीर का स्पर्श हुआ तो कबीर साहिब के शरीर में इतनी करंट आ गई कि उसे न सुध रही, न बुध रही, न मति रही न ज्ञान रहा। उसके अन्दर से झरना झरने लग पड़ा। उसके अन्दर से ही अनहद शब्द बजने लग पड़े। दसवां द्वार खुल गया। कबीर साहिब के गुरू रामानन्द जी इतने प्रबल गुरू थे। वे पूर्ण समर्थ गुरू थे। अतः इस प्रकार के गुरुओं के दायरे को हम सीमित करते जाते हैं। गुरू तो असीमित होता है। इस प्रकार करके तो हम अपने आप को ही धोखा देते जा रहे हैं। हम लोग श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी को गुरू मानते हैं। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी कहते हैं कि यदि तुम्हें सन्त कहने में कोई आपत्ति है तो फिर तुम गुरसिक्ख कह लो। लेकिन यह तो सार्वभौमिक सत्य है कि बिना गुरुमुखों को पूछने से तुम्हें वास्तविक मार्ग नहीं मिल सकेगा। क्योंकि यह मार्ग गुप्त

है, प्रकट नहीं।

इस प्रकार गुरुमुखजन या गुरुमुख कहते हैं कि ऐ प्रेमीपुरुष! पहले तुम गुरू वाले बन जाओ और पाँच प्यारों से नाम ले लो और उसके बाद उस पर निश्चय रखना। यह नहीं कि कभी किसी सन्त के पीछे भाग लिए कि वहाँ पर भजन मिलता है या वहीं पर नाम मिलता है। कभी ये ले लिया तो कभी वह ले लिया। वह सब एक ही बातें होती हैं। गुरुमन्त्र ले लो। जब तक तुम गुरुमन्त्र नहीं लोगे तब तक अध्यात्मिक उन्नति असम्भव है। क्योंकि -

गुर मंत्र हीणस जो प्राणी धिगंत जनम भ्रसटणह॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह॥
अंग - 1356

इस प्रकार पाँचों प्यारे कहते हैं कि हम तुम्हें मूल मन्त्र देते हैं। पाँचों प्यारे इकट्ठे होकर मूल मन्त्र प्रदान करते हैं। मूलमन्त्र यह है -

१ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि जपु॥
आदि सचु जुगादि सचु॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ *अंग - 1*

गुरू जी कथन करते हैं कि यह तो मूल मन्त्र हो गया अर्थात ऐ भद्रपुरुष! यह तो परमेश्वर की शक्ल है। इसकी विचार यदि सारी जिन्दगी में भी कर लो तो भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। परमेश्वर की यह रूप रेखा है। इसके बाद वे कहते हैं कि अब हम तुम्हें वह मन्त्र देते हैं, जिसके द्वारा तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो सकोगे। वह मन्त्र (गुरमन्त्र) है - वाहिगुरू। वह काम क्या करेगा? वह तुम्हारे अहंभाव का नाश करेगा।

धारना - जपु हउमै खोई जी,
वाहिगुरू गुरमंत्र है।

गुरू जी ने उपचार बतला दिया कि जो अहंभाव की दीवार है, वह वाहिगुरू मन्त्र के बिना अन्य किसी विधि से टूटने वाली नहीं है। अब इस मन्त्र को लेकर करना क्या है? गुरू जी कहते हैं कि पहले तो तुम जिह्वा के द्वारा जपो। जपते चले जाओ। बैखरी वाणी में जपो, जब मध्यमा में जपोगे तो फिर इसका फल सौ गुणा बढ़ जाता है। इसी प्रकार जब तुम हृदय में जाकर पसन्ती वाणी में जपोगे तो फिर उसका फल हजार गुणा बढ़ जाएगा। यानि कि यदि आप बैखरी वाणी में एक हजार बार नाम जपते हो तो वह पसन्ती वाणी में एक बार जपने के समतुल्य है। इसी प्रकार जब तुम नाभि में नाम का जप करोगे तो वह बैखरी वाणी की अपेक्षा दस हजार गुणा अधिक फलदायक होता है। ये सब तरीके हैं, जिनके द्वारा यह यात्रा जल्दी से तय हो जाती है। दूसरा महाराज जी ने कहा है कि जो यह श्वास आता और जाता है, इसके अन्दर आने के समय भी वाहिगुरू करो तथा बाहर जाने के समय भी वाहिगुरू करते रहो। यदि यह ठीक नहीं लगता है तो आधा अन्दर को जाते समय कहते जाओ और आधा बाहर को जाते समय कहते जाओ। गुरू जी इस प्रकार से कथन करते हैं -

सासि सासि सिमरहु गोबिंद॥
मन अंतर की उतरै चिंद॥ *अंग - 295*

श्वास से आगे यह होता है कि न तो होंठ हिलें और न ही श्वास सुनाई पड़े तथा न ही नाम की धुन सुनाई पड़े। जो हमारे अन्दर शब्द स्वतः ही बज रहे हैं, यानि कि जो अनहद शब्द बज रहे हैं उनकी मदद से नाम का उच्चारण करते जाओ। इस प्रकार कदम-दर-कदम उन्नति करते हुए जब आन्तरिक तरक्की करता हुआ त्रिकुटी को पार कर जाता है, तो यह सहस्त्रार दल कमल को पार करके फिर विवेक मण्डल में प्रवेश कर जाता है। उस विवेक मण्डल में जब हमारी सुरति पहुँचती है, तो वहाँ पर ज्ञान की झलक दिखाई पड़ती है। वह ज्ञान जब महापुरुषों की मदद से प्रकट हो जाता है तो फिर उस समय अहंभाव की दीवार गिर जाती है। अतः ये सारे तरीके नाम जपने के हैं। इन सब विधियों को 'सुरति सबदि मारगि' नामक पुस्तक में सविस्तार बताया गया है, इसके अतिरिक्त प्रस्तुत आत्म मार्ग मासिक पत्रिका में भी प्रायः इन विधियों को स्पष्ट रूप से बताने की कोशिश की जाती है। आप इन सबको पढ़ो, समझने के यत्न करो तथा इनके मुताबिक साधन करो। जब हम इस प्रकार से अपनी अध्यात्मिक यात्रा को तय करेंगे तो फिर हमें यह अवस्था, जिसका वर्णन श्री गुरू जी करते हैं, प्राप्त हो जाएगी। यथा-

माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु॥
अंग - 136

यदि गुरू की कृपादृष्टि हो जाए, तो फिर गुरू जी कहते हैं कि वे पुरुष माघ के महीने में नहीं बल्कि सदैव के लिए ही सुच्चे हो जाते हैं। अब यहीं पर समाप्ति है, कृप्या सारे प्रेमीजन श्री आनन्द साहिब में बोलने का कष्ट करें।

आत्म ज्ञान

सन्त वरियाम सिंह जी
सम्पादक - प्रो. गुरदेव सिंह

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक सितम्बर, पृष्ठ - 46)

उसने बहुत ही विनम्रतापूर्वक गुरू महाराज जी के आगे विनती की। उसके बोलने में दर्द था तथा नेत्रों में जल था। सतगुरू जी ने भांप लिया कि इसे बहुत ही गहरी हार्दिक चोट लगी हुई है और वास्तव में ही कोई वास्तविक जिज्ञासु है। रूहानी मार्ग पर चलने का यह उसूल है कि जब तक जिज्ञासु पूरा न हो तब तक महापुरुष बात नहीं किया करते हैं। दरअस्ल नाम का ग्राहक कोई विरला ही हुआ करता है। संसार के अन्दर यदि कोई बेशकीमती चीज है तो वह है - नाम। इसीलिए कहा जाता है देखना कहीं किसी अनजान व्यक्ति के पास नाम की गठरी मत खोल देना, जिसके पास कि न तो वैराग्य है, न विवेक है, न षटसम्पति है, न दृढ़ विश्वास है, न सुनने की शक्ति है, न मनन करने की शक्ति और न ही निध्यासन करने का कोई उत्साह है। महाराज जी कहते हैं कि यदि तुम ऐसे व्यक्ति के पास नाम की गठरी खोलोगे तो फिर वहाँ पर यह करोड़ों का नाम रूपी हीरा कौड़ियों का सा बनकर रह जाएगा क्योंकि संसार इसका ग्राहक नहीं है। संसार तो माया का ग्राहक है -

विणु गाहक गुण वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥
गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥
अंग - 1086

कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥
बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥ अंग - 1372

संसार साधुओं के पास आकर भी माया मांगता है तथा साधुओं का यह काम नहीं होता है, वह लोगों को मुँह मांगी मुरादें देकर उन्हें खुश करता रहे। सन्तजनों का कार्य यह होता है कि वह जीवों को परमेश्वर के साथ मिलाकर उनके दुखों का समूल नाश कर दे लेकिन संसार सस्ती चीज का ग्राहक है। ग्राहक की भी कई प्रकार की विशेषताएँ होती हैं और फिर कभी न कभी महंगा मूल्य देने वाला ग्राहक भी आ जाता है। यही कारण है कि सन्तजन वास्तविक वस्तु को संभाल कर रखते हैं -

कोई आणि मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि॥
अंग - 1376

उस ग्राहक में बहुत सारे गुण होते हैं। केवल यह नहीं कि उसे आत्म-समर्पण करना पड़ता है बल्कि उसे अपने जीवित भाव को भी समाप्त करना पड़ता है। जीवित भाव के साथ-साथ हमारे जितने भी सम्बन्ध हैं जितनी भी हमारी सोच है, जितनी भी हमारी मान्यताएँ हैं, उन सबको समाप्त करना पड़ता है। इसके द्वारा एक नई प्रकार का जन्म मिलता है जिसे कि उसे जीना पड़ता है। इसका मूल यह है कि उसे मुर्दा बनकर कुछ विशिष्ट नियमों का पालन करना पड़ता है। यथा -

मुरदा होइ मुरीद न गली होवणा,
साबरू सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
गोला मुल खरीदु कारे जोवणा।
ना तिसु भुख न नीद ना खाणा सोवणा।
पीहणि होइ जदीद पाणी ढोवणा
पखे दी तागीद पग मलि धोवणा।
सेवक होइ संजीदु न हसण रोवणा।
दर दरवेस रसीदु पिरम रस भोवणा।
चंद मुमारख ईद पुग खलोवणा।
भाई गुरदास जी, वार 3/18

प्रेमीजनो! यदि परमेश्वर को मिलने की तीव्र उत्कंठा है तो फिर इन नियमों का पालन करना शुरू कर दो। श्री गुरू अंगद साहिब जी ने यह देख लिया कि आज जो गुरसिक्ख जिज्ञासु आया है इसके अन्दर सच्ची लगन है। अतः यह पूर्ण जिज्ञासु है और पात्र है। उस समय गुरू महाराज जी कहने लगे, प्रेमीपुरुष! सिक्ख बनना तो बहुत कठिन है। जो तुमने अपनी बुद्धि को प्रकाशित करने की बात कही है उसके लिए तुम्हें कुछ विशिष्ट नियमों का पालन करना पड़ेगा। जब तक तुम इन नियमों का पालन नहीं करोगे तब तक तुम्हारे अन्दर सत्य का प्रकाश हो पाना नामुमकिन है। इसके लिए तुम सबसे पहले गुरमति को धारण करो क्योंकि गुरमति को धारण करके ही मनमति के बारे में पता चल पाता है। मनमति को छोड़कर मुर्दा बनना पड़ता है, वैसे ही कहने मात्र से ही सिक्ख नहीं बन जाता है। जब तक यह व्यक्ति आन्तरिक तौर पर मरता नहीं है, तब तक बात नहीं बन पाया करती है। मनमति से पीछा तभी छूट पाएगा जिस समय तुम अपना मन गुरू को अर्पित कर दोगे। कल को कोई कुछ कहेगा, कोई कुछ कहेगा। निरादर भी होगा। यदि तुमने अपने मन में

नाराजगी को धारण करना है तो फिर यह जीवित लोगों की जगह तो है ही नहीं। क्योंकि केवल बातें करने से तो कुछ भी होने वाला नहीं है। सब्र व सन्तोष रखकर स्वयं को गंवा कर गुलामों की भांति सेवा करनी पड़ेगी। जो गुलाम हो वह तो पशुओं की भांति बिका हुआ होता है, उसके पास अपना तो कुछ भी नहीं होता है। इस प्रकार से जो अपना मन गुरू को बेच दे तो फिर उस सिक्ख का कार्य सिद्ध हो जाता है। यथा -

मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥ *अंग - 286*

मन क्या है? मन में सारा संसार है और सारा शंकाओं से भरा पड़ा है। यह सारा कुछ उठा कर जिसमें मैं, मेरी, मान, अपमान, वैरी, मित्र, अपने, बेगाने, सब कुछ गुरू चरणों में भेंट करके स्वयं पूर्णतः खाली हो जाओ।

एक बार बुद्ध जी के दर्शनार्थ एक सम्राट उनके पास आया और कहने लगा, महाराज जी! मुझे आपके वचन बहुत अच्छे लगे हैं, कृप्या मुझे निर्वाण पद में पहुँचने की कोई युक्ति बताने की कृपा करें। महात्मा जी कहने लगे, सम्राट! तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह हमें सौंप दीजिए। उस सम्राट के पास जो कुछ भी धन-दौलत थी, उसने वह सब कुछ निकाल कर महात्मा बुद्ध जी के चरणों में रख दिया और उसके मन में यह ख्याल भी नहीं आया कि इसने मेरी सारी धन दौलत ले ली है। फिर महात्मा जी ने कहा कि अपने वस्त्र उतार कर दे दो। सम्राट ने अपना एक वस्त्र छोड़कर अपने सारे वस्त्र दे दिए। जब वह नजदीक आने लगा तो महात्मा ने कहा, सम्राट! मुझसे दूर रहो क्योंकि अभी तो तुमने मुझे कुछ दिया ही नहीं है। वह कहने लगा, महाराज जी! मैंने तो अपना सब कुछ आपको सौंप दिया है और अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है? महात्मा जी बोले, अभी तुम्हारे पास शरीर है। सम्राट कहने लगा, जी! वह भी मैंने आपको सौंप दिया है। कृप्या अब आप युक्ति बतलाने की कृपा करें। महात्मा जी कहने लगे अभी तो तुम्हारे पास बहुत कुछ पड़ा है जैसे कि मैं सम्राट हूँ, मेरी हस्ती है आदि। केवल शरीर दे देने से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, जबकि मन, चित्त, बुद्धि व अहंभाव आदि सब कुछ तो तुम्हारे पास ही पड़े हुए हैं। ये चारों चीजें मुझे सौंप दो, यदि तुम इस रूहानी मार्ग के बारे में जानना चाहते हो? उसे सारी बात समझ में आ गई और उसने चारों चीजें सौंप दीं। अब वह चुपचाप बैठ गया और उठता ही नहीं है। बोलना भी बन्द हो गया क्योंकि कुछ शेष ही न रह गया। उसके संकल्प-विकल्प समाप्त हो गए और अब शेष रह गया केवल परमात्मा। जब वह उठा तो बदला हुआ था क्योंकि वास्तविक प्राप्ति हेतु उसने वचन मानकर अपने आप को बेच दिया। हम लोग सिक्खी को धारण करने के बाद जब दूसरों के साथ वाद-विवाद करते हैं कि तुम्हारे नियम व मर्यादाएँ ठीक नहीं हैं, अपितु कच्चे हैं जबकि मेरे पक्के हैं या मैं तो इतनी वाणियाँ पढ़ता हूँ, जबकि तुम तो इतनी ही पढ़ते हो। यहीं पर हमारी सिक्खी में दोष पड़ना शुरू हो जाता है। प्रेमीजनो! ऐसा करके तुमने कोई भी आत्मिक उन्नति नहीं की है, बल्कि दोनों वहीं पर खड़े हुए हैं। दरअस्ल स्वयं को तो दोनों ने ही गुरू के पास बेचा ही नहीं है, 'मैं' को तो अपने साथ ही लिए घूम रहे हो।

श्री गुरू अंगद साहिब जी कहने लगे, देखो भाई धिंग! तुम्हें अपनी 'मैं' गुरू के चरणों में अर्पित करके गुरू की मति धारण करनी पड़ेगी। मनमति का त्याग करके, तर्कों-वितर्कों को छोड़कर गुरू की मति को धारण कर लो। इसके द्वारा पाँचों क्लेशों का नाश हो जाएगा। अपनी दृष्टि शेर जैसी रखो, जैसे कि शेर, शिकारी पर नजर रखकर सीधी झपट मारता है। इस संसार को छोड़कर अगले संसार में जाना है, वहाँ पर निगाह को रखो, जहाँ पर जाकर धन्य-धन्य होनी है। जिन कार्यों में कोई गुण नहीं है, उन कार्यों को तिलांजलि दे दो क्योंकि इनके द्वारा तो दरगाह में जाकर शर्मिन्दा होना पड़ेगा। मनमति तो प्रत्येक समय राग व द्वैष रखती है, विरोध पालती है, पृथकता रखती है। इस कारण से क्लेश बने रहते हैं कि यह मेरा वैरी है, इसने मुझे फलां समय पर यह बात कही थी, इसलिए इसे माफी नहीं देनी है। महाराज जी कहते हैं कि भद्रपुरुष! तुम गलत बातों में क्यों पड़े हुए हो? गुरवाणी पढ़ते हो? कहता है हाँ जी मैं पढ़ता हूँ, सुखमनी साहिब भी पढ़ता हूँ। गुरू जी कहने लगे कि तुम सुखमनी साहिब तो पढ़ते हो लेकिन सचेत होकर नहीं पढ़ते हो और इसीलिए वास्तविक गुरमति से कोसों दूर हो। गुरमति की पढ़ाई तो गुरसिक्ख को संसार से परे की समझ प्रदान करके दूर दृष्टि रखना सिखाती है -

फरीदा जिन्ी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि ॥
अंग - 1381

जब धारै कोउ बैरी मीतु ॥
तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ *अंग - 278*

महाराज जी कहने लगे, भाई धिंग! इस संसार पर दृष्टि नहीं रखनी है क्योंकि यहाँ पर आकर तो मनमुख व्यक्ति ऐसी सोच रखते हैं कि खाओ, पियो और ऐश करो क्योंकि दोबारा तो यहाँ पर आना नहीं है। सत्य का जीवन व्यतीत करना है

(शेष पृष्ठ 39 पर)

मुंबई में गुरमति प्रचार फेरी के दौरान सन्त बाबा लखबीर सिंह जी जत्थे समेत कीर्तन करते हुए

शहीदी जोड़ मेल श्री फतहगढ़ साहिब

ठीकरी वाल (गुरदासपुर)

सालाना समागम, दाना मण्डी, घनौर (पटियाला)

गुरुद्वारा दशमेश दरबार, बॉकरसफील्ड (bakersfield), अमेरिका में सन्त बाबा हरपाल सिंह जी
समस्त श्रद्धालुजनों को कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

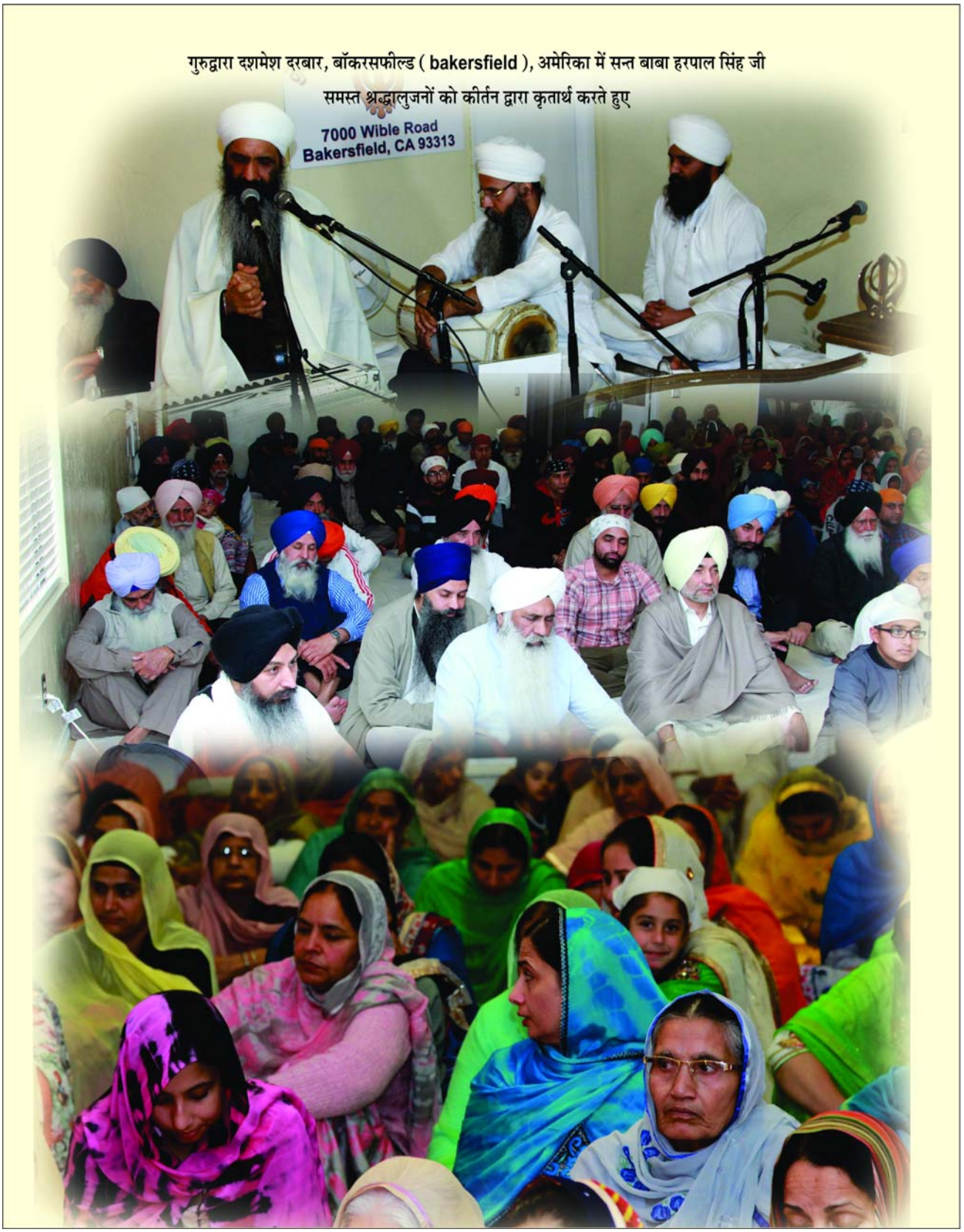

गुरुद्वारा सिक्ख संगत सैनहोजे, अमेरिका में सन्त बाबा हरपाल सिंह जी
समस्त श्रद्धालुजनों को कीर्तन द्वारा कृतार्थ करते हुए

सैनहोजे कैलेफोर्निया, इण्डियाना, बॉकरसफील्ड, मैरीलैंड व अमेरिका के पृथक-पृथक शहरों में सन्त बाबा हरपाल सिंह जी द्वारा 'आसा दी वार' के कीर्तन तथा प्यारे महापुरुषों की पावन स्मृति में आयोजित कीर्तन समागमों में श्रद्धालुजनों की एकत्रता के पृथक-पृथक दृश्य

शहीदी सभा - श्री फतहगढ़ साहिब में आत्म मार्ग स्टाल के सेवादारों के साथ सुशोभित सन्त बाबा लखबीर सिंह जी

रतवाड़ा साहिब द्वारा प्रकाशित गुरमति के गूढ़ विषयों पर आधारित पुस्तकें, आत्म मार्ग मैगजीन, आडियो-वीडियो कैसेट्स के, प्रेमीजनों द्वारा लगाए गए निःशुल्क स्टालों के दृश्य

गुरुद्वारा गुरुगढ़िया मिलवुड एडमिंटन (कनाडा) में भाई लाल सिंह, भाई अंग्रेज सिंह, बाबा मलकीत सिंह तथा उनके साथीगणों द्वारा गुरमति समागम के दौरान लगाए गए आत्म मार्ग के निःशुल्क स्टाल के एक दृश्य

(पृष्ठ 30 का शेष)

और निगाह को आगे रखना है कि यदि मैंने यह कार्य किया तो आगे जाकर मुझे यह फल या सजा मिलेगी। इस प्रकार से दूर दृष्टि रखनी पड़ेगी। इस प्रकार की सत्य बातें गुरमति हमें अधोलिखित प्रकार से सिखाती है।

नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥
लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥
तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥
आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥
कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ 2 ॥
अंग - 953

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मै जोबनवंतु ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥ ***अंग - 278***

जो कहता है कि मैं तो सुन्दर यौवन से भरा हुआ हूँ, मैं तो अत्यन्त सुन्दर हूँ, मेरे जैसा कोई अन्य नहीं है और किसी को राजनैतिक शक्ति का घमंड है, गुरू जी कहते हैं कि इस प्रकार के लोगों को कुत्ता बनना पड़ेगा। जन्म से पहले की जो अवस्था थी उसे याद करो कि मैं कहाँ से आया था? मैं क्या था? मेरी यात्रा किस प्रकार से तय हुई है? इत्यादि बातों को ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक है। इसके साथ ही इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि इस जीवन के बाद मौत और मौत के बाद अगला संसार होगा। उसके ऊपर निगाह रखनी चाहिए। गुरमति जीवन के अन्दर अहिंसा, क्षमा, धैर्य, सन्तोष तथा मीठे बोल उत्पन्न करती है। गुरमति-मर्यादा श्रद्धा, दास्य भाव, चित्त वृत्तियों का संयम तथा मन की एकाग्रता सिखाती है। गुरमति - अविद्या, अस्मिता, अभिन्नवेश, राग व द्वैष को दूर करती है जैसे कि हमेशा दृष्टिमान में ही मस्त रहना, प्रत्येक समय देखने वाली चीजो में ही लीन रहना, इससे ऊपर की अवस्था में जरा सा भी प्रवेश न करना। वाहिगुरू जी को सदैव भूले रहना, मृत्यु से डरकर घबराहट का पैदा होना, मैं, मेरी को धारण करना, सांसारिक पदार्थों के साथ जुड़े रहना तथा दूसरों को बेगाने समझ कर उनसे ईर्ष्या करते रहना, आदि से निर्लिप्त रखती है। गुरमति के द्वारा आशा, शंकाएँ, तृष्णा, वैर-विरोध, पाँचों चोरों व पाँचों विषयों से अलेपता रहती है तथा पाँचों ठगों से सावधानी रहती है। गुरमति चारों प्रकार की आगों यानि कि हंस, हेत, लोभ व कोप से बचाती है तथा मल, विषशेप तथा आवरण से दूर करती है। जिस परम पुरुष से मिलने के लिए बड़े-बड़े यत्न किए जाते हैं और वह फिर भी नहीं मिलता है लेकिन यदि वही व्यक्ति सही ढंग से गुरमति धारण कर ले तो फिर गुरमति उस प्यारे के साथ मिला देती है। अतः भाई धिंग! हम तुम्हें एक बात बताते हैं देखो! तुम्हारे ही भाईचारे में से एक सैण नाम का सिक्ख था। उसने इतनी बन्दगी की कि प्रभु जी ने उसका रूप धारण करके उसकी जगह पर डयूटी निभाई। वह प्रत्येक दिन बदनगढ़ के राजा की सेवा किया करता था। इस राजा के शरीर पर एक फोड़ा था जो कि लाइलाज था और उसे सहलाने पर राजा को बहुत आराम मिला करता था। जब उसकी जगह पर परमेश्वर ने स्वयं आकर राजा की तेल मालिश की तो परमात्मा के हाथ लगने की देर थी कि उसका शरीर पूर्णतः स्वस्थ हो गया।

हुते कितन गुण नीच सेवकाई।
के प्रमेसर सैन रूप धर के अतराई।
आइआ राजे राम समीपै।
लगे लगावन तेल महीपै।
परसूत करि तनु ते सभ रोगू।
तरनत मिलिओ सुख भोगू॥ ***(सूरज प्रकाश)***

जब सैण जी भक्तजनों को विदा करके राज दरबार पहुँचे तो राजा उसे दूर से ही देखकर तख्त से उठकर खड़ा हो गया और उसने अपनी कीमती पोशाक सैण जी को पहना दी और उसने ऊँची आवाज में सबको सुनाकर कहा कि भक्त जी ने आज मेरा रोग दूर करके मुझे अपने वश में कर लिया है जिसके बारे में भाई गुरदास जी इस प्रकार से कथन करते हैं -

सुणि परताप कबीर दा दूजा सिख होया सैण नाई।
प्रेम भगति राती करै भलके राज दुआरै जाई।
आए संत पराहुणे कीरतन होआ रैण सबाई।
छड न सकै संत जन राज दुआर न सेव कमाई।
सैण रूप हरि होइ कै आया राणे नों रीझाई।
साध जनाँ नो विदा करि राज दुआर गइआ शरमाई।
राणे दूरहूं सद कै गलहुं कवाइ खोल पैनाई।
वस कीता हउ तुध अज बोलै राजा सुणै लुकाई।
परगट करै भगत वडिआई।
(वार भाई गुरदास जी, वार 10/16)

'चलता'

इंग्लैंड संगत टी.वी. पर साक्षात्कार

सन्त बाबा हरपाल सिंह जी

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 47)

प्रश्न - बाबा वरियाम सिंह जी के जीवन गाथा की कोई अन्य विशेष बात?

बाबा जी - यदि हम बाबा जी के जीवन पर दृष्टिपात करें तो बाबा जी का जीवन इस प्रकार का था -

राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरू ग्रिहसत महि भोगी ॥
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥

अंग - 286

हम लोग जैसे कि विहंगम (अविवाहित) हैं, हमने विवाह नहीं करवाए इसलिए हमारे जीवन का एक पक्ष अधूरा है हमें गृहस्थाश्रम की प्रधानता के बारे में कोई अनुभव नहीं है। महापुरुषों की विलक्षणता यह थी कि जहाँ पर एक तरफ उन्होंने अपने पारिवारिक व सांसारिक उत्तरदायित्वों को बखूबी निभाया, बच्चों को पढ़ाया, लिखाया, उनकी शादियाँ कीं, उन्हें विदेशों में सेट किया वहीं दूसरी तरफ उनका रूहानियत पक्ष भी अत्यन्त सुदृढ़ रहा। गुरमति का प्रचार, सेवा, सिमरन का पक्ष भी पूरा रहा। आपने गृहस्थाश्रम में से आकर कितनी बड़ी संस्था खड़ी कर दी जिसके माध्यम से सारे संसार में नाम-बाणी का प्रचार फैला व फैल रहा है। उन्होंने इस संस्था के साथ अपने किसी निजी हित को भी सम्बद्ध नहीं किया। गृहस्थाश्रम में आम व्यक्ति अपने घर-परिवार के लिए बहुत ज्यादा हित रखता है लेकिन वे हमारे लिए एक ऐसे आदर्श स्वरूप हैं जो कि गृहस्थ में रहते हुए उदास थे यानि कि सब कुछ करते हुए निर्लिप्त रहना। गुरवाणी का कथन है 'सो गिरही जो निग्रहु करै।।' सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए सब कुछ परमेश्वर का समझना और सेवा सिमरन के साथ जुड़े रहना यह आदर्श उनके जीवन में से प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होता था।

प्रश्न - सन्त वरियाम सिंह जी तो गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी बहुत बड़े त्यागी थे। उन्होंने अपना पूरा फार्म बेचकर तथा पैतृक सम्पत्ति को बेचकर ट्रस्ट के नाम लगवा दिया। उन्होंने जो यह 'विश्व गुरमति रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट' स्थापित किया यह लोक कल्याण के कौन कौन से कार्य कर रहा है?

उत्तर - जो आज का माहौल है, जो आज का वातावरण है, इसमें हमारी सरकारें स्वास्थ्य व शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बुरी तरह से फेल हो चुकी हैं और इनका व्यापारीकरण हो चुका है। यही कारण है कि महापुरुषों को जहाँ कहीं भी किन्ही दानी सज्जनों ने जमीनें दान कीं तो उन सभी जगहों पर आप कहते थे कि बहुत अधिक सोना न लगाओ, संगमरमर न लगाओ बल्कि स्कूल, कालेज बना दो, कोई शिक्षा का केन्द्र बना दो, कोई अस्पताल बना दो। इस विधि से सबका भला साधारण रूप में ही होता रहता है। जो आने वाली पीढ़ी है उसमें ईसाई मिशनरियों की भांति मिशनरी पैदा करो क्योंकि गुरू घर में पुजारी वर्ग को कोई अहमियत नहीं दी गई है। यदि प्रचारकों के अन्दर मिशनरी की भावना होगी तो उसके द्वारा गुरवाणी का प्रचार चहुँओर फैलेगा इसीलिए आपने इस बात पर अधिक बल दिया कि स्कूल-कालेज बनाओ, अस्पताल बनाओ और अपने अन्दर मिशनरी स्पिरिट (भावना) को उत्पन्न करो।

प्रश्न - इस ट्रस्ट के अन्तर्गत कितने स्कूल-कालेज हैं?

उत्तर - इस ट्रस्ट के अधीनस्थ 10 स्कूल सेवारत हैं, जिनमें लगभग 10,000 बच्चे उच्च कोटि की शिक्षा हासिल कर रहे हैं जो रतवाड़ा साहिब स्थान है, यहाँ पर दो स्कूल व दो कालेज चलते हैं। बी.एड. कालेज है, नर्सिंग कालेज है। वृद्धाश्रम है, जिसके अन्तर्गत सारी सुविधाएँ हैं। अस्पताल के अन्तर्गत डाक्टर नि:शुल्क सेवा करते हैं, वे सब रिटायर्ड डाक्टर हैं। अस्पताल में दवाइयाँ भी नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं तथा टेस्ट भी नि:शुल्क किए जाते हैं। इसी प्रकार से जो वहाँ पर बच्चियाँ होस्टल में रहती हैं, उनसे होस्टल फीस नहीं ली जाती है, वे लंगर में से भोजन ग्रहण कर लेती हैं तथा सेवा कार्यों में यथासम्भव हाथ बँटा देती हैं। इस विधि से उनके अन्दर ऐसे संस्कार पैदा किए जाते हैं ताकि वे अपने जीवन में भी इसी प्रकार से जन-सेवा में अपना सहयोग करती रहें। लगभग 2300 बच्चे हमारे सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा लगभग 1200 बच्चे पी.एस.ई.बी से मान्यता प्राप्त स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन स्कूलों में बच्चों को रूहानियत की शिक्षा भी सांसारिक शिक्षा के साथ ही साथ प्रदान की जाती है। इसी प्रकार से बच्चों को तकनीकी शिक्षा प्रदान करने पर भी विशेष बल दिया जाता है। यह बाबा जी का उन समयों का अनुभव था कि उन्होंने इन्फरमेशन टैक्नालॉजी का कालेज

स्थापित किया ताकि बच्चे इसमें बी.सी.ए तथा एम.सी.ए. के कोर्स करके देश या विदेश में स्वयं को स्थापित कर सकें। ये कोर्स महापुरुषों ने आज से 20-25 वर्ष पहले शुरू करवाए थे जबकि अभी इस दिशा में अधिक जागरूकता नहीं आ पाई थी।

प्रश्न - आपके यहाँ जो अस्पताल हैं, उनके अन्दर चैक-अप ही निःशुल्क किए जाते हैं या फिर मरीजों को दवाइयाँ भी निःशुल्क ही प्रदान की जाती हैं?

उत्तर - सिविल तथा मिलिट्री के रिटायर्ड डाक्टर हैं जो कि हमें निःशुल्क ही सेवा के तौर पर मिल जाते हैं, वे अपनी निष्काम सेवाएँ, ट्रस्ट के माध्यम से मरीजों को उपलब्ध करवा रहे हैं। प्रतिदिन स्पेशलिस्ट (डाक्टर) आते हैं। उनके दिन निर्धारित किए हुए हैं कि अमुक दिन अमुक स्पेशलिस्ट (डाक्टर) ने आना है। आज के समय में यदि किसी स्पेशलिस्ट के पास जाओ तो फिर उनकी फीस ही बहुत अधिक होती है, दवाइयों के खर्च बहुत ज्यादा हैं। इसीलिए बड़े-बड़े अस्पताल खुल गए हैं। लेकिन यहाँ पर दूसरी तरफ नाम-वाणी का अभ्यास करवा कर कम्बाइन थेरेपी प्रयोग में लाई जाती है ताकि मरीज आन्तरिक तौर पर स्वस्थ हो जाएँ। दरअस्ल जो नाम रूपी दवाई है यानि कि जो 'सरब रोग का अउखद नामु' है वह सबके अन्दर मौजूद है लेकिन-

सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ ***अंग - 102***

यही कारण है कि पास में होते हुए भी हम दवाई की तलाश बाहर ही करते रहते हैं जैसे कि शायद 'नाम' कहीं बाहर से ही प्राप्त होगा। नाम तो हमारे अन्दर है। दरअस्ल शरीर के सारे नौ दरवाजे बाहर की तरफ खुलते हैं और यह दसवां दरवाजा अन्दर की तरफ खुलता है। जब आप बाहर के नौ दरवाजों को बन्द करके अन्दर जाने के रास्ते को खोलने का प्रयास करते हो तो इसे आत्म मार्ग कहा गया है। इसीलिए महापुरुषों ने मैगजीन का नाम 'आत्म मार्ग' रखा है क्योंकि यह आत्मा का मार्ग है और इसके अन्दर ही वास्तविक शान्ति है।

प्रश्न - बाबा जी! आप रूहानियत की बात करते हो, साथ-साथ शबद के प्रचार की बात करते हो, अस्पताल चला रहे हो, स्कूल चला रहे हो, समय तो आपका विभिन्न कार्यों में बँटा हुआ है और यदि इतने काम किसी संस्था के पास हों तो उसके पास ज्यादा समय तो बचता ही नहीं है। आपका यहाँ इंग्लैंड में आना तो ज्यादा समय लगाने वाली बात है और यह इस तरह तो हो नहीं सकता कि चलो कहीं सैर कर आते हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि इसका कोई न कोई प्रयोजन तो अवश्य होगा। आप क्या प्रयोजन लेकर इंग्लैंड आए हो? यहाँ आने का आपका क्या उद्देश्य है?

उत्तर - हमारा 'आत्म मार्ग ट्रस्ट' यहाँ पर भी रजिस्टर्ड है। इस ट्रस्ट के प्रधान हैं **K.T.C. Edible Oils** वाले स. सुखजिन्द सिंह 'जिन्दी' इनके साथी और भी हैं, राज है, मक्खन है, जग्गी है। ये सभी रतवाड़ा साहिब जाकर भी सेवा करते हैं। यहाँ से अपनी मेहनत की कमाई में से दसवन्द निकाल कर ये वहाँ पर भी सेवा कार्यों में हाथ बँटाते हैं। यहाँ पर हमारे आत्म मार्ग के सदस्य भी काफी हैं, यदि उन्हें न मिला जाए, उन्हें शबद का पर्चा न डाला जाए तो समय के अन्तराल से वे सब भूल जाते हैं, इसलिए हम भी छः साल बाद यहाँ पर आए हैं। पहले 2011 ई. में यहाँ आए थे। बाकी असली बात होती है -

नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥
जहा दाणे तहाँ खाणे नानका सचु है ॥ ***अंग - 653***

व्यक्ति के अपने वश में तो कुछ होता नहीं है। अब जब आप लोग यहाँ आए थे तो आपका जीविकोपार्जन आपको यहाँ खींच लाया। कोई कहीं से आया है और कोई कहीं से और सात समुद्र पार यहाँ पर आकर सेट हो गए। इसी तरह से अपने वश में कुछ नहीं होता है क्योंकि ऊपर से कादर (परमात्मा) की कुदरत (प्रकृति) का कानून सारी सृष्टि को चला रहा है -

ना को मूरखु ना को सिआणा ॥
वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ ***अंग - 98***

इसलिए हमारी यह कोई बहुत अधिक प्रयोजन वाली बात नहीं होती है कि हमें यहाँ क्यों आना पड़ा। हमारी जो संस्था है, उसके जो उसूल हैं, उन उसूलों पर ही संस्था चलती है। बस सारी प्यार की ही बात है। प्यार के मार्ग में जहाँ कहीं भी कोई याद करता है तो वहाँ पर जाना ही पड़ता है।

प्रश्न - रतवाड़ा साहिब संस्था की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? क्योंकि सेवाएँ तो अन्य सभी संस्थाएँ या सम्प्रदाय भी कर ही रहे हैं यानि कि कीर्तन-कथा किए जा रहे हैं, गुरुपर्व मनाए जा रहे हैं, महापुरुषों की पावन यादें मनाई जा रही हैं। स्कूल, कालेज भी चल रहे हैं, आपकी जो शबद का लंगर चलाने की विशेष बात चल रही है, तो यह सेवा तो श्री गुरू नानक देव जी के समय में ही शुरू हो गई थी और एक तरह से श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी के समय तक आते-आते शिखरों पर पहुँच गई थी। भाई मनी सिंह जी, बाबा दीप सिंह जी, देखो कितने बड़े शहीद हुए। वे भी हाथों से लिखकर गए। इतिहास में जिक्र मिलता है कि गुटके और

पोथियाँ वे अपने हाथों से लिखकर सिक्खों को दिया करते थे। उनकी इतनी बड़े सेवा उन समयों में हुआ करती थी, इस प्रकार की सेवा उन युद्धकालीन समयों में भी होती रहती थी। यह ठीक है कि कुछ सम्प्रदाय या संस्थाएँ इस सेवा को नहीं निभा रही हैं क्योंकि मैं स्वयं इस तरफ जुड़ा हुआ हूँ। आपके बारे में हमने देखा है कि आप लोग बहुत बड़े पैमाने पर इस दिशा में जुड़े हुए हो। क्या आज के समय में इस सेवा की कोई आवश्यकता भी है क्योंकि आजकल लोगों के अन्दर पढ़ने की रुचि घटती जा रही है? जन साधारण को इस दिशा में कैसे चलाया जा सकता है? गुरमति का प्रचार किस प्रकार से किया जा सकता है? मैं खास तौर पर शबद लंगर की बात कर रहा हूँ।

उत्तर - दरअस्ल हम लोगों की खास तौर पर पंजाबियों की यह फितरत है कि हम लोगों में पढ़ने की रुचि बहुत ही कम है। दूसरी तरफ ध्यान का आधिक्य होने के कारण इस तरफ ध्यान कम हो जाता है और यही कारण है कि जो भी रूहानी मैगजीन विभिन्न संस्थाओं ने चलाए वे प्रायः चल ही नहीं पाए। बाबा जी भी यह बात सोचते थे कि मैगजीन जो भी चले, एक तो इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो यानि कि इनके पास धन-दौलत की तंगी न आए, दूसरा जो इसके अन्दर मैटर छपे वह अच्छा होना भी अत्यन्त आवश्यक है। जो आज का बुद्धिजीवी वर्ग है, प्रोफेसर या आचार्य लोग हैं, उन्होंने बुद्धिमण्डल की ही बात करनी होती है, हम लोग इसमें डा. भाई वीर सिंह जी की रचनाओं को प्रकाशित करते हैं या फिर ऐसे अनुभवी महापुरुषों के लेखों को प्रकाशित करते हैं जिनके पास सांसारिक विद्या के साथ-साथ अनुभवी रूहानी विद्या के भी प्रचुर भण्डार हों यानि कि जिनके पास परा और अपरा विद्या दोनों मौजूद हों यानि कि ये दोनों इकट्ठी ही चलती हैं।

वास्तव में जो केवल ज्ञान है यह शुष्क हो जाता है और यह व्यक्ति को कहीं पर, ले जा नहीं पाता है। पहले 'अहं ब्रह्मास्मि' के सिद्धान्त चला करते थे, वे लोग कहते थे कि आत्मा को कोई दोष नहीं लगता है यानि कि केवल ज्ञान के अन्दर व्यक्ति प्रायः भूल जाता था और उस पर माया का प्रभाव हावी हो जाता था। अपने घर की यह विशेषता है कि अपने यहाँ भक्ति सहित ज्ञान है। इसीलिए यहाँ रसिक बैरागी होते हैं, रसिक पुरुष होते हैं न केवल फोकट के ज्ञानी। जो केवल ज्ञानी हैं, उसे माया मोह लेती है। यदि ज्ञान के साथ-साथ भक्ति भी हो, अन्दर लबालब प्रेम भरा हुआ हो, रसिक पुरुष हो तो फिर उसका जीवन दूसरों के लिए भी प्रेरणा का माध्यम बन जाता है।

डा. वीर सिंह जी ने कोई बहुत बड़ा लैक्चर नहीं दिया। यदि एक दो बार उनसे बोलने के लिए कहा गया तो उन्होंने केवल फतहि ही बुलाई थी, लेकिन जो उन्होंने साहित्य लिखा तो वह आज भी हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है निःशंक रूप से वे शारीरिक तौर पर हमारे बीच मौजूद नहीं हैं। जब आप उनके लेखों या रचनाओं को पढ़ेंगे तो आपके अन्दर भी रस आ जाएगा, रसना, रस से भर जाएगी, नाम की रौ आपके अन्दर चलने लग जाएगी। इसलिए हमारी जो संस्था है बाबा जी की जो सोच थी उन्होंने सोचा था कि यह मैगजीन सौ सालों तक बन्द न हो सके। प्रत्येक माह यह मैगजीन हिन्दी, पंजाबी व अग्रेंजी तीन भाषाओं में प्रकाशित होती है। उन्होंने इस मैगजीन के नाम एफ.डी.आर भी करवाए ताकि उस रकम के ब्याज से ही यह मगैजीन चलता रहे। इसके साथ ही उन्होंने साहित्य को सम्भालने के लिए आडियो वीडियो लाइब्रेरी बनाई। उन दिनों में ज्यादा ऑडियो कैसेट्स ही हुआ करती थीं। आपने 3000 कैसेट्स बनवाईं। उन सबमें आपने गुरवाणी के विषयों पर ही व्याख्यान दिए हैं, इसी प्रकार से आपने 1300 वीडियो फिल्में बनवाईं। धीरे-धीरे यह डिजिटल लाइब्रेरी बन गई। आज की जो एडवांस टैक्नालाजी है, उसके अनुसार जो हार्ड डिस्क और इंटरनेट आदि है, उनका प्रयोग बखूबी किया जा रहा है क्योंकि इनका प्रयोग तो निरन्तर किया जा सकता है जबकि एक शरीर अकेला कितना प्रचार कर सकता है? वह तो एक जगह या दो जगह पहुँच सकता है, लेकिन मीडिए के माध्यम से इसे बहुत अधिक विस्तार में ले जाया जा सकता है। अब जैसे कि आपका यह चैनल ही है, इसे न जाने कितने लोग देखेंगे। जब इस कार्यक्रम को कोई देखेगा तो 84 प्रतिशत तो केवल देखने से ही असर होता है। आजकल मैडिकल साइंस ने यह बात सिद्ध कर दी है कि 84 प्रतिशत देखने से, 14 प्रतिशत सुनकर, 1 प्रतिशत स्पर्श का तथा 1 प्रतिशत सूँघने से असर होता है। देखने का प्रभाव सबसे अधिक होता है और इसीलिए मीडिए का महत्व बहुत अधिक है तथा रतवाड़ा साहिब ट्रस्ट भी मीडिए का प्रयोग यथासम्भव कर रहा है।

प्रश्न - बाबा जी! आपने साहित्य की बात की है कि 'आत्म मार्ग' में उन लिखितों को प्रकाशित किया जाता है जो कि जन साधारण को जोड़ने वाली हैं, जिनके द्वारा रसना पर रस आ जाए, जीवन में रस आ जाए। डा. भाई वीर सिंह जी का आपने जिक्र किया और बाबा वरियाम सिंह जी की लिखितें भी इसी प्रकार की थीं। दूसरी तरफ आज के समय में कई लोग इस प्रकार का लिख रहे हैं जो कि तुम्हें तोड़कर रख देते हैं। उनके बारे में आप क्या कहोगे? उनसे किस प्रकार बचना चाहिए?

उत्तर - हमें गुरवाणी के अनुसार चलना चाहिए और राग-द्वैष से हटकर प्यार वाली जिन्दगी जीनी चाहिए। इसमें तुम्हें कोई दूसरा दिखाई नहीं पड़ता है। गुरू घर की यही विलक्षणता है कि यहाँ पर किसी को भी बुरा नहीं कहा जाता है। जब आप गुरवाणी की परिधि के अन्दर चलते हो तो यह किसी को बुरा कहने भी नहीं देती है क्योंकि -

मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ अंग - 866

इसलिए जब आप अपनी रेखा को बड़ी खींच लेते हो तो दूसरे की स्वतः ही छोटी हो जाती है, फिर उसे बुरा कहने की कोई जरूरत ही नहीं रह जाती है।

प्रश्न - बाबा जी! अपने लोगों ने बात की थी कि श्री गुरू नानक पातशाह जी का साढ़े पाँच सौ वर्षीय समारोह आ रहा है जिसके लिए कुछ विशेष तैयारी करने की भी बात की थी। आपने यह भी जिक्र किया था कि गुरू नानक साहिब जगत गुरू हैं, संसार के सांझे गुरू हैं लेकिन यदि हम अपने आस-पास गौर से दृष्टिपात करें तो जो संस्थाएँ या सम्प्रदाय स्वयं को 'गुरू नानक नाम लेवा' कहलवाती है वे भी आज के समय में इकट्ठी होकर नहीं चल रही हैं। श्री गुरू नानक देव जी के साढ़े पाँच सौ वर्षीय प्रकाश पर्व के समारोह के सुअवसर पर क्या सबको मिलजुल कर कुछ ऐसे प्रयास नहीं करने चाहिए जिनके माध्यम से सारे सम्प्रदाय इकट्ठे बैठ सकें और सिक्खी का बोलबाला चहुँओर हो सके?

उत्तर - वास्तविक बात यह है कि 'आपु सवारहि मै मिलहि मैं मिलिआ सुख होइ।।' यदि अब आप दुनिया को सुधारने के लिए निकलते हो लेकिन स्वयं का सुधार नहीं करते हो तो वह सब प्रयास विफल हो जाएंगे क्योंकि उस तथाकथित प्रचार का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ेगा। इसलिए सर्वप्रथम अपने अन्दर की बुराइयों को अच्छाइयों में बदलो, बुराइयों को अपने अन्दर से बाहर निकालो। जैसे कि आपने गहरे श्वास की बात की है इस बारे में आपका प्रयोगात्मक अनुभव है। क्योंकि जितना हमारे अन्दर का कूड़ कबाड़ है, जब गहरा श्वास भर कर, बाहर छोड़ना है तो वह बाहर निकल जाता है, उसके बाद ही अन्दर अच्छी बात समाएगी-

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥

अंग - 474

जब तक व्यक्ति अपने आपका ही सुधार नहीं करता है तब तक इसका उपचार कुछ भी नहीं है क्योंकि मैडिटेशन ही मैडिसन बनती है। इस प्रकार जब आप अपना सुधार कर लोगे तो उस जीवन को देखकर ही कितने लोगों का जीवन बदल जाएगा। जब तक तुमने अपने दुश्मनों पर ही नियन्त्रण नहीं किया है, तब तक आप दूसरों पर किस प्रकार से विजय प्राप्त कर सकोगे? अतः सबसे पहले अपनी सफाई जरूरी है, उसके बाद ही खुदाई है।

प्रश्न - बाबा जी! आप कितने समय के लिए इंग्लैंड आए हो?

उत्तर - हम दस दिन के लिए यहाँ आए हैं।

प्रश्न - इन दिनों में किसी गुरुद्वारे में दीवान वगैरह भी दिए हैं?

हाँ जी, ये जगतार सिंह 'जग्गी' जी और इनके साथीगण ये सब कुछ प्रबन्ध कर रहे हैं, इन्हें ही इस सम्बन्ध में पता है।

बाबा जी! सतगुरू जी कृपा दृष्टि रखें, आने वाले समय में बाबा जी के दीवान जहाँ कहीं भी हों उनमें सभी जरूर हाजिरी भरना।

बाबा जी - यदि कोई बात रह गई हो जो कि बाबा वरियाम सिंह जी के बारे में हो या बाबा लखबीर सिंह जी के बारे में हो, जो कि आपके वर्तमान समय में चेयरमैन हैं, उनकी कोई बात या कोई महत्वपूर्ण सन्देश जो कि आप संगत को देना चाहें अथवा अन्य कोई खास बात जो कि आपको लगता हो कि यह बात रह गई है, तो उसे आप संगत के साथ सांझा कर सकते हो।

उत्तर - सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे घर का जो सन्देश है, वह प्रेम का ही है।

जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।

प्यार ही प्रमात्मा है, और प्रमात्मा ही प्यार है। अब भी जो हमारे ट्रस्ट के वर्तमान चेयरमैन हैं, उनकी देखरेख में 30, 31 अक्टूबर तथा 1, 2 नवम्बर को बहुत बड़ा गुरमति समागम हो रहा है, जिसमें देश व विदेशों से संगत पहुँचती है। वहाँ पर सभी वक्ताओं को विचार रखने के लिए विषय प्रदान किए जाते हैं, उनके ऊपर बोला जाता है, साथ ही अन्य परोपकार के कार्य आरम्भ किए जाते हैं। इसलिए आप सबके चरणों में सविनम्र निवेदन है कि जब भी कभी समय बने तो उस स्थान पर दर्शन देने की कृपा करनी।

जो संगत टी.वी. के बारे में बताया गया है कि भाई साहिब भाई महिन्दर सिंह जी बहुत बड़े महापुरुष हैं, करीचो वाले सन्त अफ्रीका से आकर जैसे यहाँ पाँचों तख्तों से सेवा हुई। चल रही सेवाओं में बड़ा योगदान जो संगत टी.वी. के द्वारा किया जाता है वह उल्लेखनीय है। जब ये नेपाल में हमारे साथ आए थे तो वहाँ पर भी इन्होंने बहुत बड़ी सेवा की -

....विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥ अंग - 94

(शेष पृष्ठ 60 पर)

अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी

भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरू धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरू धरीजै ॥
सिरू दीजै काणि न कीजै ॥ ***अंग - 1412***

सिक्खी का सफर गुरवाणी से शुरू होकर कुर्बानियों तक जाता है। यह सफर रवाब की तार से शुरू होकर खण्डे की धार तक पहुँचा। कथन की गई इस विचारधारा में सिक्खी को निरूपण करने वाली गहरी फिलासफी छिपी हुई है। यही सफर भाई मरदाना जी से शुरू होकर भाई साहिब भाई दया सिंह जी तक चलता हुआ आधुनिक रूप में हमारे सामने है। सिक्खी का सारा सफर 'मुरदा हुई मुरीद न गली होवणा, सबर सिदक शहीद भरम भउ खोवणा' के सिद्धान्त तक चलता है। इस सिद्धान्तानुसार शहीद के अन्दर दो गुणों का अस्तित्व विद्यमान होता है और ये दो गुण हैं - सब्र व सिदक। गुरू का सिक्ख सब्र में रहता हुआ सिदक को प्राप्त होता है। इसके साथ ही शहीद के अन्दर दो चीजें नहीं होती हैं यानि कि दो नकारात्मक मनोवृत्तियां उसके जीवन के अन्दर कभी भी नहीं आती हैं और ये दो चीजे हैं - भ्रम तथा भय। भ्रम तथा भय दोनों चीजें शहीद के नजदीक नहीं आती हैं। इसी प्रकार की वृत्ति के परिचायक हैं - अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी। उनका सारा जीवन सब्र व सिदक से भरा पड़ा है। भ्रम तथा भय उनके जीवन में कदाचित भी नहीं था। भले ही सिक्ख इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ शहीदों के खून से लथपथ है लेकिन अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी का इस इतिहास में विशेष स्थान है। आप जी की शहादत सिक्खी के एक बड़े सिद्धान्त का निरूपण व्यावहारिक रूप में करती है। यह दिव्य नाद, सिद्धान्त व व्यवहारिक जीवन की एकरूपता है, एकसुरता है।

बाबा दीप सिंह जी का जन्म 1682 ई. में जिला अमृतसर के गाँव पहुविंड में हुआ। आप जी के पिता जी का नाम भाई भगता जी तथा माता जी का नाम माता जिऊणी जी था। धार्मिक विचारों व सिक्खी की गुढ़ती आपको बचपन से ही यानि कि घर से ही मिली थी। नगर के गुरुद्वारा साहिब में ग्रन्थी सिंह जी के माध्यम से आपने गुरुमुखी सीखी तथा श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की वाणी पढ़ने की लगन आपको लगी। ग्रन्थी जी के द्वारा गुरमति का ज्ञान तथा सिक्ख इतिहास श्रवण करके आपके अन्दर गुरसिक्खी के प्रति प्यार तथा लगन में बढ़ोत्तरी हुई, फलस्वरूप गुरमुखों की तरह जीवन जीने की या वाणी व बाणा (वेशभूषा) धारण करने की लगन आपको लगी। बचपन से ही आप जी का शरीर सुडौल व शक्तिशाली था। पिता जी के साथ खेतीबाड़ी के कार्यों में उनकी मदद करनी, कसरत करनी तथा कुश्तियाँ लड़ने का शौक रखते हुए आप जी ने बचपन से जवानी की तरफ बढ़ना शुरू किया। पिता जी घुड़सवारी में माहिर होने का कारण आप जी एक अच्छे घुड़सवार बन गए।

बैसाखी के अवसर पर अपने माता पिता जी व संगत के साथ आप श्री आनन्दपुर साहिब, श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी के दर्शनार्थ गए और दर्शन करके आप निहाल हो गए। आपका परिवार साढ़े तीन महीने गुरू साहिब जी के पास रहा। इसी समय बाबा दीप सिंह जी ने अमृतपान किया। आप जी के ऊँचे-लम्बे कद, शक्तिशाली व सुदृढ़ शरीर तथा चमकते हुए चेहरे की तरफ देखकर सतगुरू जी बहुत प्रसन्न हुए। गुरू जी ने उन्हें अपने पास बुलाकर उनका नाम पूछा। आपने बड़ी ही विनम्रतापूर्वक बतलाया जी! 'दीपा'।

अच्छा? साहिब मुस्कुराए और फुरमान किया कि तुम सचमुच ही खालसा पन्थ के दीप बनोगे। शस्त्र विद्या के बारे में दशमेश जी के द्वारा पूछने पर आपने कहा जी! शस्त्र चलाने सीखे तो हैं लेकिन अभी निपुणता नहीं है। महाराज जी ने वचन किया, कोई बात नहीं निपुणता भी आ जाएगी। तुम घुड़सवारी में भी निपुण हो जाओगे। सतगुरू जी की खुशियाँ प्राप्त करके आप कुछ समय श्री आनंदपुर साहिब रहे। आपने सतगुरू जी की सेना के विख्यात योद्धाओं के द्वारा कई प्रकार फौजी अभ्यास भी सीखे। सैनिक प्रशिक्षण को अच्छी तरह से ग्रहण कर लेने के बाद आप एक बेहतरीन सैनिक बन गए।

सतगुरू जी की आज्ञा पाकर आप अपने नगर को वापिस लौट आए तथा सतगुरू जी के हुक्मानुसार अपने क्षेत्र में गुरमति का प्रसार आरम्भ कर दिया। आप दिन-रात सिक्खी के प्रचार व प्रसार हेतु तत्पर रहे। गुरवाणी की सूझबूझ प्रदान करने के साथ-साथ क्षेत्रीय युवाओं को आपने शस्त्र विद्या का प्रशिक्षण भी प्रदान किया। नवयुवकों को आप घुड़सवारी

में निपुण करते रहे। इस प्रकार से सतगुरू जी के हुक्म की पालना करते हुए आप जी अपने पिता जी के साथ घर के कामकाजों व खेती-बाड़ी के कार्यों में हाथ भी बँटाया करते तथा साथ ही खालसा दल बनाकर गुरसिक्खी का प्रचार भी करते रहे। कुछ समय बाद आपको सतगुरू जी के द्वारा श्री आनन्दपुर साहिब को छोड़ने की तथा पूज्यनीय माता गुजर कौर तथा साहिबजादों व सिंहों की शहादतों की खबरें सुनाई पड़ीं। आपको यह भी पता चला कि सच्चे पातशाह श्री गुरू गोबिन्द सिंह महाराज जी चमकौर की गढ़ी के बाद माछीवाड़े के जंगलों के बीच से होते हुए खिदराणे की ढाब पहुँचे तथा वहाँ आपने चालीस सिक्खों को मुक्ति प्रदान की है। उसके बाद महाराज जी दमदमा साहिब साबो की तलवंडी पहुँचे। तलवंडी पहुँच कर सतगुरू जी ने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की नई 'बीड़' तैयार करने का विचार बनाया। आप जी की लिखावट बहुत सुन्दर होने के कारण भाई मनी सिंह जी के माध्यम से आप जी को नगर पहुविंड से तलवंडी बुलाया गया। सतगुरू जी का आदेश प्राप्त होने पर आप जी खुशी-खुशी तलवंडी पहुँच गए।

आप जी के साथ कुछ अन्य नौजवान भी सतगुरू जी की हुजूरी में पहुँचे। सुबह-शाम सतगुरू जी के दीवान तलवंडी में सजा करते थे और साथ ही साढ़े नौ महीनों में सतगुरू जी ने श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बीड़ लिखवाई। बाबा दीप सिंह जी इस महान कार्य में शामिल रहे। इस प्रकार से चार 'बीड़ों' (सतगुरू श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पावन स्वरूप) को लिखने की सेवा सतगुरू जी ने आपसे ली। सतगुरू जी इस मालवे की संगत का उद्धार करते हुए अब अगले पड़ाव के लिए यानि कि दक्षिण दिशा के लिए रवाना होने लगे और अब आपने श्री दमदमा साहिब जी की सेवा-सम्भाल का दायित्व बाबा दीप सिंह जी को सौंप दिया। दमदमा साहिब की स्थापना 'गुरू की काशी' के तौर पर हुई। बाबा दीप सिंह जी प्रत्येक समय गुरसिक्खी के प्रचार में रहकर संगत को गुरवाणी के साथ जोड़ने का महान कार्य करते रहते। बाबा जी द्वारा छोटे-छोटे दल बनाकर पृथक-पृथक क्षेत्रों में सिक्खी का प्रचार किया गया। जोर-जुल्म यानि कि अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आप जी के दल सदैव सत्य का प्रचार करते रहे। अब दमदमा साहिब सिक्खी का प्रचार केन्द्र बना हुआ था लेकिन अचानक आप जी को सतगुरू जी द्वारा ब्रह्मलीन होने की खबर प्राप्त हुई। यह खबर आपके लिए असह्यनीय थी क्योंकि -

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥
धिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥ अंग - 83

आप जी बहुत अधिक वैराग्य भाव में आ गए। बाबा जी को अब स्वयं को बिछोड़े के दुख में सम्भालना कठिन हो गया था क्योंकि -

जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥
बूंद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥
नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥
भवरू लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥
तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥
अंग - 708

इस प्रकार की आपकी अवस्था हो गई थी। गुरू जी के द्वारा ब्रह्मलीन होने की खबर आपने सविस्तार सुनी। आप जी ने बाबा बन्दा सिंह बहादर पर जो कृपा हुई, उस वार्ता को भी ध्यानपूर्वक सुना। अब सतगुरू जी के पाँच भौतिक शरीर की अन्तिम क्रिया के बाद आप जी को पता चला कि बाबा बन्दा सिंह बहादर ने सोनीपत, समाणा, कपूरी, सढौरा, लोहगढ़ तथा सरहिन्द पर आक्रमण करके जीत हासिल कर ली है। वजीदे (सूबा वजीद खान) व झूठे नन्द (सुच्चानन्द) को सजा दे दी है। बाबा दीप सिंह जी इन कई युद्धों में आगे होकर लड़ते रहे तथा शेरों की भांति गरजते व दुश्मनों का संहार करते रहे। आप जी को बाबा बन्दा सिंह जी तथा सारे पन्थ की तरफ से 'जीवित शहीद' की उपाधि प्रदान की गई।

समय अपनी चाल से चलता रहा। अब खालसा, बेदयी खालसा तथा तत्व खालसा दो भागों में विभक्त हो गया। बाबा बन्दा सिंह बहादर की शहीदी ही गई। इसके बाद सिक्खों पर सख्ती का दौर पुनः शुरू हो गया और सिक्खों के सिरों के मूल्य पड़ने लग पड़े। सिक्खों ने अब गुरिल्ला युद्ध नीति के माध्यम से दुश्मनों पर हमले करने व जीत प्राप्त करनी शुरू कर दी। इधर बाबा दीप सिंह जी दमदमा साहिब में सिक्खी के प्रचार कार्य में जुटे रहे। आप गुरवाणी की अनेकों पोथियाँ लिख-लिख कर पृथक-पृथक क्षेत्रो में भेजते रहे।

समय के अन्तराल के साथ सन् 1734 ई. में सरदार कपूर सिंह ने अमृतसर में सिक्खों को एकत्र किया। अब सिक्खों के दो दल बन गए। एक था 'तरना दल' और दूसरा था 'बुड्ढा दल'। तरना दल के पाँच जत्थे बनाए गए और प्रत्येक जत्थे का एक जत्थेदार बनाया गया। पहले जत्थे का जत्थेदार बाबा दीप सिंह जी को नियुक्त किया गया। बाबा जी ने अपने जत्थे का विस्तार किया। सिक्खों पर बढ़ते हुए अत्याचारों और सख्ती की खबरें बाबा जी को दमदमा साहिब में प्राप्त होती थीं। भाई मनी सिंह जी की शहादत को सुन कर आप जी तथा आपके जत्थे के सिक्खों का खून खौलने लग पड़ा।

भाई मनी सिंह जी की शहीदी के बाद सिक्खों पर अत्याचारों का दौर बहुत अधिक बढ़ गया। फलस्वरूप सिक्ख दोबारा जंगलों की तरफ निकल गए। सन् 1738 ई. में अफगान बादशाह नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण कर दिया। इस क्रूर बादशाह ने दिल्ली को लूटा और जब यह लूटी हुई धन-दौलत के साथ-साथ यहाँ की बहू-बेटियों को लेकर वापिस जा रहा था तो सिक्खों ने बन्दी औरतों को छुड़ाकर उनके घरों पर पहुँचाया। आप जी को यह खबर मिली कि भाई महिताब सिंह तथा भाई सुक्खा सिंह ने मस्सा रंघड़ का सिर कलम कर दिया है और हरिमन्दिर साहिब की मर्यादा व पवित्रता को कायम कर दिया है। इसके बाद आपको सिक्खों की अन्य शहादतों के बारे में भी खबरें प्राप्त हुईं। भाई बोता सिंह तथा भाई गरजा सिंह जी की शहीदी के बारे में आपने सुना। इन तमाम शहादतों की खबरें सुनकर बाबा जी ने स्वंय रणभूमि में उतरने का निर्णय लिया। इस समय अहमदशाह अब्दाली के हमलों से पंजाब में उथल-पुथल मची हुई थी। सिक्खों के जत्थों ने अहमदशाह की फौजों पर हमला करके धन-माल का एक बड़ा भाग प्राप्त कर लिया। मीर मन्नू ने सिक्खों पर अत्याचारों की बाढ़ शुरू कर दी लेकिन सिक्ख, सिक्खी में दृढ़ रहते हुए बहादुरी के साथ जूझते रहे। अब जहाँन खान, सिक्खों पर अत्याचार करके इन्हें समूल नष्ट कर देना चाहता था। वह श्री हरिमन्दिर साहिब से प्राप्त होने वाली दिव्य ऊर्जा को ही समाप्त कर देना चाहता था। उसने पावन सरोवर को ही बन्द करके, उसे मिट्टी से समतल बना डाला। इस कायरतापूर्ण कार्य के विरोध में सिक्खों में क्रोध की ज्वाला का भड़क जाना स्वाभाविक ही था। बाबा दीप सिंह जी ने यह खबर सुनते ही दमदमा साहिब में गुरू चरणों में अरदास की कि हे सच्चे पातशाह! मुगल तथा अफगान अत्याचारों की सारी सीमाओं को लाँघते हुए, आप जी के पन्थ के अस्तित्व को ही मिटा देने पर तुले हुए हैं। आप कृपा करो, इनका मुकाबिला करने के लिए तथा आप जी के पावन स्थानों हरिमन्दिर साहिब तथा पावन सरोवर की मान-मर्यादा को कायम करने की शक्ति प्रदान करो।

आप जी शहीदी दल के रूप में अरदास करके श्री अमृतसर की तरफ को चल पड़े -

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाए॥
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ॥
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥

की चुनौती देते हुए आप जी ने अमृतसर की तरफ कूच कर दिया। दल को अलग-अलग जत्थों में विभक्त कर किया गया। इधर जहानखान के द्वारा युद्ध की तैयारी की गई। पहली टक्कर अमृतसर के नजदीक गोहलवड़ नामक स्थान पर हुई। जयकारों का उद्घोष करते हुए सिक्ख आगे बढ़ते चले गए और दुश्मनों को भारी नुक्सान पहुँचाया गया। दूसरी टक्कर पुनः हुई जिसमें जहानखान स्वयं युद्ध में कूदा। बाबा दीप सिंह ने ललकार कर सिक्खों को हमले के लिए ललकार दी। जहान खान का सिक्खों ने कुछ ही मिनटों में काम तमाम कर डाला। दुश्मन की सेनाओं की मनोबल टूट गया। अब जमाल शाह बाबा जी के सामने आया। बाबा जी ने उसका यह प्रस्ताव मान लिया कि हम दोनों आमने-सामने होकर दो-दो हाथ करते हैं। बाबा जी ने जमाल शाह का वार अपने दोधारे खण्डे पर रोका और स्वयं खूब खण्डा चलाया, काफी देर तक दोनों शूरवीरों में मुकाबिला चलता रहा। अन्त में दोनों के सिर धड़ से अलग हो गए। लेकिन बाबा जी अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने शीश को अपनी हथेली पर रखकर हरिमन्दिर साहिब की तरफ चल पड़े। आपने यह प्रण किया हुआ था कि मैं हरि मन्दिर साहिब जाकर ही अपने प्राण त्यागूँगा। आप जी ने अपने बाएँ हाथ की हथेली पर अपने शीश को रखा तथा दाएँ हाथ से खण्डे को चलाते हुए आगे बढ़ने लगे। दुरानी की फौज भयभीत व हैरान थी कि यह सब कैसे हो रहा है? वे भयभीत होकर पीछे की तरफ दौड़ने लग पड़े। बाबा जी ने जाकर अपने शीश को हरिमन्दिर साहिब की परिक्रमा में रख दिया और धड़ धरती पर लेट गया। इस प्रकार से आपका शरीर शान्त हो गया। इस अलौकिक दृश्य को देखकर सबके मुँह से अनायास ही निकल रहा था कि धन्य गुरू! धन्य सिक्खी! धन्य बाबा दीप सिंह जी! यह शहादत सन् 1761 ई. में हुई। आज भी शहीदों की शहादतों की सार्थकता उसी प्रकार से बनी हुई है। वे अमर हैं और सृष्टि के अस्तित्व के अन्तिम पल तक प्रेरणा का श्रोत बने रहेंगे। वे जन साधारण के लिए शक्ति हैं, सहारा हैं, प्रेरणाश्रोत हैं तथा ध्येय हैं। आप जी ने उस पावन सिद्धान्त को पूर्णतः सत्य करके दिखला दिया कि -

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरू धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरू धरीजै ॥
सिरू दीजै काणि न कीजै ॥ *अंग - 1412*

गुरू जी अपनी कृपादृष्टि करें कि उनकी शहीदी को याद करके हमें भी सिक्खी सिदक, निष्ठा, भरोसा, प्यार व वैराग्य प्राप्त हो जाए। अमर शहीद बाबा दीप सिंह जी को कोटि-कोटि प्रणाम।

भक्त रविदास जी

रुपिन्दर कौर
कार्यकारी प्रिंसिपल
(बाबा जोरावर सिंह फतह सिंह खालसा कालेज, मोरिंडा)

भक्त रविदास जी, शिरोमणि सन्त, परमात्मा के सच्चे भक्त, कर्मयोगी, मानववादी तथा समाज-सुधारक थे। उनके समय में ब्रह्मणवाद, पुजारीवाद, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा, तथा जाति-पात का बोलबाला चरम सीमा पर था। एक तरफ तो विदेशी हमलावर, हमले कर रहे थे और दूसरी तरफ कर्मकाण्डी, पुजारी तथा पण्डित व मौलवी लोग भोली-भाली जनता को गुमराह करके दोनों हाथों से लूट रहे थे। भक्त रविदास जी का जन्म इन कुरूप सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक परिस्थितियों में हुआ जिस समय कि मानवीय व सामाजिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही थीं।

उस समय में जाति श्रेष्ठता को महत्व दिया जा रहा था तथा मेहनतकश वर्ग पीड़ित था। यहाँ तक कि इस वर्ग को ज्ञान तथा शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से भी वंचित रखा जा रहा था। पूजा व उपासना पर अन्य जातियों के लिए प्रतिबन्ध लगा हुआ तथा मनुवादी सोच सर्वत्र व्याप्त थी। ऊंच-नीच, जाति-पात तथा अस्पर्श्यता की संकीर्ण सीमाओं में समाज को बाँध दिया गया था। ऐसी परिस्थितियों में समाज पूर्णतः जड़ता का शिकार हो चुका था। इन विषम परिस्थितियों में भक्त रविदास जी ने धार्मिक रुढ़ियों व संकीर्ण विचारों का डटकर विरोध किया तथा आपने ज्ञान व भक्ति के साथ-साथ चेतना व नव-जागरण की लोक लहर का खूब प्रसार किया। उन्होंने शूद्रों, निम्न जातियों तथा उपेक्षित वर्ग के लोगों के लिए भक्ति का मार्ग खोला जो कि अपने आप में एक सामाजिक व लोक क्रान्ति की शुरूआत थी।

भक्त रविदास जी की वाणी की सारी रचना का केन्द्र बिन्दु निःशंक रूप से प्रभु-प्रेम, प्रभु के साथ साधारण की पीड़ा व दर्द का भी गहरा अहसास होता है। इस प्रकार से उनकी प्रगतिशील वाणी ने जड़ हो चुके समाज को गतिशील बना दिया। यही कारण है कि समय के बीतने के साथ-साथ इस वाणी की महानता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है तथा बढ़ती ही रहेगी।

भक्त रविदास जी इस बात पर जोर देते हैं कि अकाल पुरुष (परमात्मा) कण-कण में समाया हुआ है। सारी मानव जाति, ऊंच-नीच, ब्राह्मण, शूद्र, राजा-रंक, उस परमात्मा का ही तो रूप है तो फिर पारस्परिक भेदभाव क्यों? शूद्रों, दलितों व अछूतों का काम धन्धा तो निम्न दर्जे का हो सकता है लेकिन परमात्मा जब कृपादृष्टि करता है तो वह जाति-पात का ध्यान नहीं करता बल्कि वह तो भक्त की भावना को ही तरजीह देता है। रविदास जी को पूरा अहसास था कि चमार जाति को समाज का निचला दर्जा प्राप्त है लेकिन उन्होंने निधड़क होकर अपनी वाणी में 'कहि रविदास चमारा' वाक्यांश का बार-बार प्रयोग किया है। उन्होंने डंके की चोट से कहा कि परमात्मा की भक्ति का अधिकार सबको एक समान है।

जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥
अंग - 486

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत
फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा ॥ अंग - 1293

गरीब निवाज परमात्मा जब किसी पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाता है तो वह अपना स्वरूप दिखा देता है तथा उसके सिर पर ऐसा छतर रख देता है कि वह नीच जाति वाला भी पूज्यनीय हो जाता है तथा ऊँची जाति वाले राजे-महाराजे भी उसके आगे शीश झुकाते हैं। वह अपने भक्तों को रूहानी बादशाही प्रदान कर देता है, जिसके अधीनस्थ सारा संसार हो जाता है -

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छतु धरै ॥
अंग - 1406

दारिदु देखि सभ को हसै अैसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥
अंग - 858

भक्त जी ने एक अकालपुरुष के प्रति मृत हो चुकी चेतनता को पुनः जागृत किया। आपने इस सिद्धान्त का प्रसार

किया 'जियो और जीने दो' तथा 'न किसी से डरो और न किसी को डराओ' एवं मन की अवस्था को ऐसा बनाओ जो कि बेगम हो।

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ 1 ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥
उहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥
दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥
उहाँ गनी बसहि मामूर ॥ 2 ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥
महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥ अंग - 345

इस पावन शब्द को रविदास जी की वाणी की प्रचंड ज्वाला कहा जा सकता है जो कि समकालीन समाज, राजनीति तथा धर्म के अन्दर प्रचलित ऊंच-नीच, पराधीनता, हर्ष-विषाद, द्वैत-द्वैष आदि के विरुद्ध जोरदार आवाज को बुलन्द करके नवीन विचारों के बीज का आरोपण करता है। क्या यही सच्ची आजादी तथा धर्म निरपेक्ष राज्य की विशेषता नहीं है, जिन्हें कि स्वतन्त्रता का इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए चाहता है?

उनकी पावन व निर्मल वाणी में किसी का भी खण्डन तथा निन्दा नहीं की गई है और न ही उन्होंने किसी के लिए गँवार व पशुओं जैसे शब्दों का प्रयोग किया है बल्कि आपने तो निर्मल सत्य की पैरवी करते हुए स्नेह, सहयोग, भाईचारे व सहनशीलता का ही शान्तमयी व अमर सन्देश दिया। उन्होंने कहीं पर भी नारी की निन्दा नहीं की है बल्कि आपने तो प्रभु जी के प्रेम को स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों के माध्यम से बड़े ही खूबसूरत ढंग वर्णित किया है तथा गृहस्थ धर्म के जीवन की भरपूर प्रशंसा की है -

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥
तनु मनु देइ न अंतरू राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ अंग - 793

भक्त रविदास जी निर्गुण व सगुण भक्ति की बहस में न पड़कर दोनों के बीच सन्तुलन को स्थापित करने की सफल कोशिश की है तथा जन साधारण को इस द्वन्द्व में से निकालकर शुद्ध भक्ति की प्रमाणिकता स्थापित की है। उन्होंने अपने इष्ट के साथ सेवक-स्वामी, मित्र, प्रेमी, पति-पत्नी, माँ-पुत्र आदि सारे भक्ति को अनिन भक्ति कहा गया है। उन्होंने नाम-सिमरन, सत्संग, आत्म समर्पण तथा मन को प्रभु चरणों में लीन करने की प्रेरणा दी है। आपकी भक्ति की विलक्षणता यह है कि आप भक्ति को किसी विशेष पद्धति में बाँधकर नहीं देखना चाहते हैं। उनके अनुसार ऐसा प्रत्येक व्यक्ति भक्ति का अधिकारी हो सकता है, जिसमें अपने अहंभाव को मिटाकर तथा परमात्मा के सब्र-सन्तोष वाले जीवन को व्यतीत करने की भावना हो। भक्त जी राममयी जीवन जीने, नाम-खुमारी में मदमस्त तथा गृहस्थ में उदास जीवन व्यतीत करने में दृढ़ विश्वास रखते थे। उनकी प्रेमा-भक्ति की आधार परमतत्व को पहचानना तथा उसमें अभेद होना था। प्रेमातिरेक व दृढ़ निश्चय की झलक, उनकी वाणी के अन्दर से स्वतः ही ओवरफ्लो होती है -

जउ हम बाँधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥
अंग - 658

भक्त रविदास जी अपने इष्ट में ऐसे समाए हुए थे कि वे उसी का रूप हो चुके थे। वे बड़े ही उलाहने के रूप में प्रभु जी को कहते हैं कि हे सच्चे पातशाह! हे अनन्त प्रभु! यदि संसार में आकर मैं गल्तियाँ न करता और आप मुझे माफ नहीं करते तो फिर मुझे पापी और आपको पतित-पावन कौन कहता? यथा -

तोही मोही मोही तोही अंतरू कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ 1 ॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥ अंग - 93

इतना एकत्व प्राप्त हो जाने के वाबजूद भी उनमें पराकाष्ठा तक की विनम्रता थी। यही कारण था कि आप जगह-जगह पर प्रभु जी के आगे विनतियाँ करते हुए व गिड़गिड़ाते हुए सदैव क्षमायाचक बने हुए ही दिखाई पड़ते हैं-

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि
अब पतीआरू किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै
जन कउ पूरनु दीजै ॥ अंग - 694

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते उच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ 1 ॥
माधउ सतसंगति सरनि तुमारी ॥
हम अउगन तुम उपकारी ॥ अंग - 486

निर्मलता, विनम्रता तथा सहनशीलता तो आपके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। जिसका प्रमाण रानी झालाबाई की कथा से भली प्रकार प्रकट होता है। जब रानी झालाबाई ने लोक कल्याणार्थ भक्त रविदास जी तथा ब्राह्मणों को भोजन ग्रहण करवाने के लिए आमन्त्रित किया तो ब्राह्मणों ने भक्त जी के साथ बैठकर भोजन ग्रहण करने से मना कर दिया। भक्त जी के कहने पर रानी ने सबसे पहले भोजन ब्राह्मणों को परोस दिया लेकिन जब ब्राह्मण भोजन ग्रहण करने लगे तो प्रत्येक ब्राह्मण की थाली में से भक्त रविदास जी भोजन ग्रहण करते हुए दिखाई पड़ने लग पड़े। इस लीला को देखकर सारे ब्राह्मण भक्त रविदास जी के चरणों पर गिर पड़े। इस अवसर पर भक्त जी ने परमात्मा के प्रति अहोभाव में उच्चारण किया -

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छतु धरै ॥ रहाउ॥
.....
नीचह उच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
अंग - 1106

भक्त रविदास जी के अनुसार अन्य लोगों को दुखी करना, पीड़ा देना, पर-निन्दा, पर नारी गमन आदि से बढ़कर अन्य कोई नीच कार्य नहीं है। आपने नशों का जमकर विरोध किया। आपने कहा कि यदि शराब को गंगा-जल से भी तैयार कर लिया जाए तो भी वह पीने के योग्य नहीं हो सकती है-

सुरसरी सलल क्रित बारूनी रे
संत जन करत नही पानं॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे
सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ अंग - 1293

प्रभु प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम किसी ऐसे पूर्ण व समर्थ गुरू की संगत की जरूरत होती है जो कि रसिक-बैरागी, जागृत व रूहानियत का मर्मज्ञ हो। इसके साथ ही वह अहंभाव के दीर्घरोग से छुटकारा दिलवाने वाला भी होना चाहिए। सन्तजन हरियश व हरि कथा करते-करते हरि जाकर ही रूप बन जाते हैं तथा जिज्ञासुजनों को परम प्रकाशमयी परमात्मा के साथ मिलाने का महान कार्य करते हैं। उनकी कोई जाति-पात नहीं होती है। उनकी संगत में जाने से करोड़ों पापों का नाश हो जाता है लेकिन यह भी सत्य है कि परमात्मा की कृपा के बिना सच्चे सन्त की पहचान नहीं हो पाती है। आम सांसारिक जीव तो त्रिगुणी माया के मण्डल में ही विचरण करते हैं जबकि सन्तजन, परमात्मा की बन्दगी करके, ऊँची उड़ान भर लेते हैं, फलस्वरूप वे चतुर्थ पद में बिराजमान हो जाते हैं। संसार उनके रहस्यात्मक संसार को समझ नहीं पाता है और वे तो केवल उनकी परछाई के साथ ही झगड़ा करते रहते हैं। वे उनकी निन्दा भी करते हैं, जिसके कारण उनका स्वयं का ही नुक्सान हो जाता है क्योंकि प्रभु अपने प्यारे भक्तजनों की निन्दा करने वालों को कभी माफ नहीं करता है -

जे ओहु अठसिठ तीरथ नावै ॥
.....
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ 1 ॥
साध का निंदकु कैसे तरै ॥
सरपर जानहु नरक ही परै ॥
.....
निंदा कहा करहु संसारा ॥
निंदक का परगटि पाहारा ॥
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ अंग - 875

हम काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, निन्दा, बखीली आदि में इस प्रकार से खचित हो चुके हैं कि हमारी हालत कुएँ के उस मेंढक के सदृश्य हो चुकी है जो कि अपने सीमित ज्ञान को ही परमात्मा का ज्ञान या सब कुछ समझ बैठा है, लेकिन अपनी इस वास्तविक हालत को कोई विरला भक्त ही कबूल करता है तथा प्रभु जी के पास विनतियाँ करता है कि -

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ
कछु आरा पारू न सूझ॥
.....
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥
अंग - 346

हम उस प्रभु जी का प्रेम तभी हासिल कर सकेंगे यदि संकुचित दायरों से बाहर निकल कर गुरुमुख प्यारे प्रभु जी के सन्तजनों का सत्संग करेंगे जहाँ से कि हमें विवेक, बुद्धि की प्राप्ति होनी है। विवेक बुद्धि के द्वारा ही हमारे अन्दर सच्चा प्रेम स्थापित होना है और उस सच्चे परमात्मा का मिलाप होना है। गुरमति के विपरीत मनमति पर चलने वाला मनुष्य पशुतुल्य है, यही कारण है कि भक्त रविदास जी सत्संग की महिमा को बखान करते हुए कथन करते हैं कि -

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥
अंग - 486

नि:शंक रूप से हम लोग इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन हमारे अन्दर अभी भी यह दुविधा कायम

है कि आज का मनुष्य क्या सामाजिक, धार्मिक, आत्मिक व आर्थिक तौर पर सफल हो भी सकेगा अथवा नहीं? पदार्थवादी सोच के कारण आज सारा संसार विकारों की मार के नीचे दुखी हो रहा है। लोग भटक कर केवल शारीरिक सुखों के पीछे ही पागल हुए घूम रहे हैं। चारों तरफ काम, चाम व दाम का ही बोलबाला है। पश्चिम के लोग इन सुखों को भोग भोग के थक हार चुके हैं और वे लोग अब शान्ति के लिए तिलमिला रहे हैं अर्थात अब वे शाश्वत सुख की तलाश में हैं। यदि मनुष्य तनावरहित जीवन जीना चाहता है तो उसे अन्तर्मुखी होना ही पड़ेगा, भावार्थ उसे तन की अपेक्षा मन व आत्मा के सुख-साधन ढूँढ़ने ही पड़ेंगे। मनुष्य के लिए तन का विकास करने के साथ-साथ मन का विकास करना भी अत्यन्त आवश्यक है। मानव मन का विकास तभी सम्भव है यदि इस कार्य हेतु निर्धारित नियमों की पालना की जाए। इन नियमों की पालना न करने वाला मनुष्य प्रभु जी की कृपादृष्टि का पात्र नहीं बन पाता है तथा मानसिक तनाव के अधीन रहने के कारण वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कष्ट भोगता है। मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाना ही भक्त रविदास जी की वाणी का परम मनोरथ है। इसके लिए उन्होंने मनुष्य को इस मानव जीवन का सदुपयोग करते हुए रचानात्मक तथा अच्छे कार्य करने की सलाह दी है।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के अन्तर्गत भक्त रविदास जी की वाणी को अंकित करना इस बात का प्रमाण है कि उनकी वाणी गुरू साहिब की परख व कसौटी पर खरी उतरती है। यह वह आदि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी हैं जिसे सिक्ख धर्म में गुरू का दर्जा प्राप्त है।

यहाँ पर यह भी वर्णनीय है कि जहाँ पर केवल सिक्ख जगत ही नहीं अपितु सारा संसार ही श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी को नतमस्तक होता है, वहाँ पर भक्त रविदास जी के साथ-साथ सारे भारतवर्ष के पृथक प्रान्तों के अन्य अनेकों भक्तों तथा गुरू साहिबानों की वाणी को भी नमस्कार करके रूहानी मार्ग की दिशा प्राप्त करता है।

गुरू साहिब जी ने मध्यकालीन भारत के अछूत जाति के भक्त को अपने समान सम्मान देकर यह सिद्ध कर दिया कि गुरू घर में जाति-पात व ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं है। पक्की रूढ़ियों के विपरीत गुरू साहिब जी का यह एक अत्यन्त सराहनीय कदम था। उन्होंने भक्त रविदास जी की न केवल वाणी को ही श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में दर्ज किया बल्कि आपने अपनी तरफ से उनकी खूब उपमा भी की। जैसे कि श्री गुरू रामदास जी का फुरमान है कि -

नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥

.....

रविदासु चमारू उसतित करे
हरि कीरति निमख इक गाइ ॥
पतित जाति उतमु भइआ
चारि वरन पए पगि आइ ॥ *अंग - 733*

श्री गुरू अरजन देव महाराज जी भी भक्त रविदास जी भक्ति की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं -

रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ *अंग - 1192*

रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥
अंग - 487

भाई गुरदास जी ने अपनी दसवीं वार में रविदास जी के जीवन के कुछ अंश इस प्रकार से प्रकट किए हैं -

भगतु भगतु जगि वजिआ चहुं चका दे विचि चमिरेटा।
पाणहा गंढै राह विचि कूला धरम ढोइ ढेर समेटा।
जिउं करि मैले चीथड़ै हीरा लाल अमोल पलेटा।
चहुं वरना उपदेशदा गिआन धिआन करि भगत सहेटा।
नावणि आइआ संगु मिलि बानारस करि गंगा थेटा।
कढि कसीरा सउपिआ रविदासै गंगा दी भेटा।
लगा पुरबु अभीच दा डिठा चलितु अचरज अमेटा।
लइआ कसीरा हथि कढि सूत इकु जिउं ताणा पेटा।
भगत जना हरि माँ पिउ बेटा॥

भाई गुरदास जी, वार 10/7

इस प्रकार से श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की वाणी तथा भाई गुरदास जी की वारों में आए हुए ये संकेत भक्त रविदास जी के जीवन, उनकी विचारधारा तथा उनकी संसार के अन्दर फैली हुई स्तुति को समझने के लिए प्रमाणिक ऐतिहासिक श्रोत हैं।

भक्त रविदास जी के जीवन तथा विचारधारा के विश्लेषण के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि भक्त रविदास जी विश्व-व्यापी सन्त हुए हैं उन्होंने धार्मिक क्रान्ति तथा सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से जड़ हो चुकी चेतनता को झिंझोड़ते हुए नव समाज का सृजन किया है। अध्यात्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक पुनर्जागृति के माध्यम से आम जनता को एक झंडे के नीचे लाने का सफल प्रयास किया है। आपने सारी जनता को रुढ़िवादी विचारों, राजनैतिक व धार्मिक दबावों, हीन भावनाओं आदि का त्याग करवाकर 'बे-गम-पुरे' का निवासी बनाया है। यह उनका धार्मिक व सामाजिक इन्कलाब (क्रान्ति) था। इस प्रकार वे सम्पूर्ण भारत में भक्ति लहर के एक महान सामाजिक क्रान्तिकारी व तत्व-वेत्ता महापुरुष हुए हैं।

बड़ा घल्लूघारा
(सन् 1762)

भाई (डा.) सुखविन्दर सिंह

सन् 1761 ई. में सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया की कमान के नीचे सिक्खों ने लाहौर पर कब्जा कर लिया तथा अपना सिक्का चला दिया। उसके साथ ही दीवाली के अवसर पर 27 अक्टूबर सन् 1761 ई. को सरबत खालसे का इकट्ठ श्री अमृतसर साहिब में हुआ। वहाँ पर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि अमहदशाह अब्दाली के पक्षधरों के टिकानों को जीता जाए क्योंकि ये देश को विदेशी हुकूमतों के चंगुल से आजाद करवाने के मार्ग में सर्वाधिक रुकावटें खड़ी कर रहे थे।

विदेशी हुकूमत का सबसे नजदीकी हिमायती जंडियाला का आकलदास निरंजनी था। यह सदैव ही सिक्खों के दुश्मनों की हिमायत करता रहा था। सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया तथा सरदार जस्सा सिंह राम गढ़िया ने सरबत खालसे का यह फैसला आकलदास को बताया। उनका ख्याल था कि वह सीधा होकर पन्थ की शरण में आ जाएगा लेकिन उसने ऐसा नहीं किया बल्कि उसने तुरन्त ही अहमदशाह अब्दाली को चिट्ठी लिखी और सहायता के लिए विनती की।

अहमदशाह अब्दाली पहले ही हिन्दोस्तान पर आक्रमण करने के लिए सिर पर पाँव रखकर इधर ही आ रहा था। आकल दास के आदमी उसे रोहतास के स्थान पर जा मिले। वह मारो-मार करता हुआ जंडियाला आ पहुँचा। जब उसने आकर देखा तो सिक्ख जंडियाले का घेरा उठाकर सरहिन्द की तरफ को चले गए थे। कारण यह था कि वे चाहते थे कि वे अपने बाल-बच्चों और परिवारों को हमलावरों के रास्तों से दूर कहीं सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया जाए। उसके बाद ही उसके साथ दो-दो हाथ किए जाएँ। उनका एक इरादा और भी था। जैन खाँ, सूबा सरहिन्द ने कुछ समय पहले ही सरदार दयाल सिंह बराड़ को कत्ल करवाया था। सिक्ख, उससे भी बदला लेना चाहते थे। वे मलेरकोटले के पास के गाँवों में सेना को लेकर पहुँचे। मलेरकोटले के हाकिम भीखन खाँ ने जैन खाँ को मदद के लिए लिखा तथा साथ ही अहमदशाह को भी खबर कर दी।

अहमदशाह, जंडियाला आने के बाद पुनः अभी लाहौर पहुँचा ही था कि सिक्खों के मलेरकोटला के पास एकत्र होने की खबर पहुँचते ही वह 3 फरवरी सन् 1762 ई. का लाहौर से अपनी सेना लेकर चल पड़ा। बड़ी तेजी अपने रास्ते को तय करता हुआ वह पाँच फरवरी को मलेरकोटला के पास में गाँव कुप्प पहुँच गया। यहाँ पर लगभग तीस हजार सिक्ख अपने परिवारों व माल-असबाब सहित उतरे हुए थे। उसने पहले ही जैन खाँ को यह सन्देश पहुँचा दिया था कि वह अपनी सारी फौज को लेकर सिक्खों पर आगे की तरफ से टूट पड़े और मैं पिछली तरफ हमला बोलूँगा। अहमदशाह ने पहले ही अपनी फौज को यह हुक्म दिया हुआ था कि भारतीय वेशभूषा में जो भी व्यक्ति उन्हें दिखाई पड़े उसे तुरन्त ही मौत के घाट उतार दिया जाए। जैन खाँ की देशीय सेना को यह हुक्म दिया गया कि वे अपनी पहचान के तौर पर अपनी पगड़ियों में हरे पत्ते टाँग लें। यहाँ पर कई हजार सिक्ख, जिनमें महिलाएँ व बच्चे भी थे, शहीद कर दिए गए।

सिक्खों के ऊपर यह हमला अचानक हुआ था, जिस कारण से वे उनके गिरफ्त में आ गए लेकिन भयभीत होने वाले या दौड़ जाने वाले नहीं थे, इसलिए उन्होंने मिल कर यह निर्णय लिया कि वैरी का मुकाबिला डटकर व अन्तिम श्वासों तक किया जाए। जो बच्चे व महिलाएँ बच गए थे, उन्हें बीच में रखकर, सिक्ख आगे बढ़े। वे चलते-चलते लड़ते हुए, आगे बढ़ रहे थे। कभी-कभी वे ठहर कर पीछे वैरियों पर भी जाकर टूट पड़ते थे और उन्हें बड़ी मात्रा में नुक्सान पहुँचाते थे। सरदार शाम सिंह शुकरचकिक्या, खालसा दल का नेतृत्व कर रहे थे और अपने योद्धाओं को बचाकर लिए जा रहे थे। अहमदशाह तो चाहता था कि सिक्खों के साथ जमकर और डटकर लड़ाई करे लेकिन सिक्खों ने उसे ऐसा मौका ही नहीं दिया। वे लड़ते-लड़ते, गाँवों के बीच से होते हुए आगे चलते गए। कुतबे, बाहमणी, गहिल व अन्य अनेकों जितने भी स्थानों पर सिक्ख लड़ते-मरते पहुँचते थे तो वहाँ के लोग उन्हें पनाह देने से मना कर देते थे और बल्कि कई जगहों पर तो वे लोग आगे से हल्ला भी बोल देते थे तथा कई सिक्ख योद्धाओं को शहीद भी कर देते थे। सिक्ख लड़ते झगड़ते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। उनका इरादा बरनाला पहुँचने का था क्योंकि उन्हें बाबा आला सिंह जी से सहायता की उम्मीद थी। साथ ही उन्हें यह भी ख्याल था कि यदि

(शेष पृष्ठ 54 पर)

गुरबाणी अर्थ भण्डार

सन्त हरी सिंह जी रन्धावे वाले

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 56)

सिरीरागु महला 1

भरमे भाहि न विझवै;
जे भवै दिसंतर देसु॥

हे भाई! भ्रम रूपी भाहि = अग्नि, विझवै = बुझती नहीं है अथवा भरमे = भ्रमण करके भी तृष्णा रूपी भाहि = अग्नि नहीं बुझती भले ही देश देशान्तरों का भवै = भ्रमण कर ले।

अंतरि मैलु न उतरै;
धिगु जीवणु धिगु वेसु॥

इस जीव के मन के अन्दर जो विकारों रूपी या पापों रूपी या तृष्णा रूपी मैल लगी हुई है, वह कभी भी बुझती नहीं है, इसलिए उन मनमुखों के जीने को धिग = धिक्कार है तथा उनके भेष रूपी वेसु = वेष-भूषा को भी धिग = धिक्कार है।

होरू कितै भगति न होवई;
बिनु सतिगुर के उपदेस॥1॥

हे भाई! सतगुरु के द्वारा बताए हुए उपदेश किन्हीं साधनों के द्वारा अथवा अन्य किन्हीं देवी-देवताओं की उपासना में लगने से परमेश्वर की भक्ति = भक्ति न = नही होवई = हो सकती है।

मन रे; गुरमुखि अगनि निवारि॥

रे = ऐ मन! गुरुमुखजनों की संगत करके या गुरु के मुख द्वारा ज्ञान प्राप्त करके तृष्णा रूपी अग्नि या कामादिक विकारों की अग्नि का निवारि = निवारण करो।

गुर का कहिआ मनि वसै;
हउमै त्रिशना मारि॥1॥रहाउ॥

जिनके मनों में गुरू जी का कहा हुआ उपदेस वसै = बस गया है, उन जिज्ञासुओं ने अपने अन्दर से तृष्णा रूपी अग्नि को अथवा पाँचों प्रकार की आग को तथा हंगता को मार लिया है।

मनु माणकु निरमोलु है;
रामनामि पति पाइ॥

हे भाई! यह मन रूपी माणिक निरमोलु = अमूल्य है जो कि राम नाम जप कर ही पति = इज्जत अथवा पति को पाइ = प्राप्त कर सकता है अथवा जिनका मन माणिक की भांति बहुमूल्य है, वे राम = परमेश्वर के नाम को जप कर ही लोक तथा परलोक में पति = इज्जत को पाहि = प्राप्त कर पाते हैं।

मिलि सतसंगति हरि पाईऐ;
गुरमुखि हरि लिव लाइ॥

हे भाई! गुरू की सत्संग में मिलकर ही हरि = प्रभु को पाइऐ = प्राप्त किया जाता है तथा गुरमुखि = मुखी गुरुजनों के द्वारा ही हरि = परमेश्वर में लिव = वृत्ति को लाइ = लगाया जाता है।

आपु गइआ सुखु पाइआ;
मिलि सललै सलल समाइ॥2॥

फिर आपु = अहंभाव गइआ = चला जाता है और सुखु = आत्मिक सुख को पाइआ = प्राप्त किया जाता है। फिर ज्ञानी पुरुष अपने निज स्वरूप में इस प्रकार से समा जाता है जैसे कि सललै सलल = पानी के अन्दर पानी मिल जाता है। भावार्थ जिस प्रकार से नदियाँ वे नाले गंगा में मिलकर गंगा का रूप बन जाते हैं, उसी प्रकार से गंगा भी समुद्र में मिलकर समुद्र का रूप ही बन जाती है, ठीक इसी प्रकार से ज्ञानवान पुरुष भी प्रभु स्वरूप में अभेद हो जाते हैं।

जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ;
सु अउगुणि आवै जाइ॥

हे भाई! जिनि = जिन गुरमुखों ने हरि नामु = प्रभु जी के नाम को चेतिओ = याद नहीं किया सु = वे अउगुणि = वे अपने अवगुणों के कारण सदैव आते व जाते रहते हैं, भावार्थ वे कभी जन्म लेते और कभी मरते रहते हैं।

जिसु सतगुरू पुरखु न भेटिओ;
सु भउजलि पचै पचाइ॥

जिसे सतगुरू पुरुष ने भेटिओ = नहीं मिला है अथवा

जिसने सतगुरू पुरुष को कोई भेटिओ = भेंट नहीं दी है। जैसे कि कोई हारा हुआ राजा, झुक कर जीते हुए राजा के आगे भेंट (नजराना) रखता है। जो मनमुख इस प्रकार गुरु के आगे नहीं झुके सु = वे भउजलि = संसार समुद्र में स्वयं तो पचै = सड़ते ही हैं अथवा दुखी होते ही हैं साथ ही वे अन्य को भी पचाइ = दुखी करते हैं अथवा दुखों में धकेलते हैं भावार्थ वे लोक-परलोक में दुखी ही रहते हैं।

इहु माणकु जीउ निरमोलु है;
इउ कउडी बदलै जाइ॥

यह मनुष्य जीउ = जिन्दगी माणिक की भांति निरमोलु = अमूल्य भावार्थ बहुमूल्य है लेकिन इउ = यह माया अथवा पदार्थों रूपी कउडी = कौड़ियों के बदले व्यर्थ जाहि = जा रही है भावार्थ मनुष्य अपने कीमती समय को व्यर्थ ही गंवा रहा है।

जिंना सतगुरू रसि मिलै;
से पूरे पुरख सुजाण॥

जिन गुरमुखों ने कामादिक विकारों की निवृत्ति करके सतगुरू जी के द्वारा ब्रह्मानन्द रूपी रस को मिलै = प्राप्त कर लिया है से = वे ही पूरे = पूर्ण पुरुष व सुजाण = सयाने पुरुष कहलवाने के सच्चे हकदार हैं।

गुर मिलि भउजलु लंघीअै;
दरगह पति परवाणु॥

हे भाई! पूरे गुरू को मिलकर भउजलु = संसार सागर को लंघीअै = पार हुआ जाता है तथा प्रभु जी की सच्ची दरगाह में वे पति = सम्मानपूर्वक स्थान ग्रहण कर पाते हैं।

नानक ते मुख उजले;
धुनि उपजै सबदु नीसाणु॥4॥22

सतगुरू नानक देव जी फुरमान करते हैं कि उन गुरमुखों के मुख उज्ज्वल होते हैं भावार्थ सूर्य की भांति उनके जीवन में चमक होती हे जिनके हृदय में से या मुख में से नाम की धुन उपजै = उत्पन्न होती है तथा सबदु नीसाणु = प्रकट हुआ है अथवा जिनके हृदय में ज्ञान की धुनि = धुन प्रकट हुई है उन श्रेष्ठ पुरुषों के मुख लोक व परलोक में प्रभु जी का यशगान रूपी प्रकाश वाले होते हैं।

सिरीरागु महला 1
वणजु करहु वणजारिहो;
वखरू लेहु समालि॥

हे जीव रूपी व्यापारीजनो! = नाम रूपी सौदे कै वणज = व्यापार को करहु = करो तथा इस वखरु सौदे को गुरू जी के पास से श्रद्धा रूपी पूँजी देकर हृदय में समालि = सम्भाल लेहु = लो।

तैसी वसतु विसाहीअै;
जैसी निबहै नालि॥

तथा तैसी = इस प्रकार की वस्तु विसाहीअै = खरीदें जैसी = जो लोक-परलोक में जीवात्मा के साथ निबहै = निभ जाए क्योंकि इस प्रकार की साथ में जाने वाली वस्तु तो केवल नाम ही है।

अगै साहु सुजाणु है;
लैसी वसतु समालि॥1॥

आगे परलोक में अकाल पुरुष रूपी साहु = शाहूकार सुजाणु = सयाना या अन्तर्यामी है तथा वह साथ लाई गई वस्तु को संभाल लैसी = लेगा। भावार्थ जीव ने जो भी शुभ-अशुभ कर्म किए हैं परमात्मा उनका लेखा-जोखा करके ही जीव को उनका फल भुगताएगा। वहाँ पर नाम के बराबर कोई भी वस्तु सिद्ध नहीं हो सकेगी।

भाई रे; रामु कहु चितु लाइ॥

हे भाई! राम का नाम, चित्त की वृत्ति लाइ = लगाकर कहो या उसका उच्चारण करो। यहाँ पर शब्द के द्वारा ही सतगुरू जी मेरा-तेरा का भाव समाप्त करके सबके प्रति एकता की बात दृढ़ करवाते हैं।

हरि जसु वखरू लै चलहु;
सहु देखै पतीआइ॥1॥रहाउ॥

हरि जसु = प्रभु जी के यश रूपी वखरु = सौदे को हृदय रूपी पल्ले में बाँधकर परलोक को ले चलो वहाँ पर प्रभु रूपी सहु = पति पतीआइ = आजमा कर देखै = देखेगा कि ये क्या धन लेकर आए हैं? भावार्थ परलोक में नाम का धन ही काम आएगा।

जिना रासि न सचु है;
किउ तिना सुखु होइ॥

जिनके पल्ले में सच्चे नाम की रासि = पूँजी नहीं है, उन्हें आत्मिक सुख की प्राप्ति किउ = किस प्रकार से हो सकती है।

खोटै वणजि वणंजिअै;
मनु तनु खोटा होइ॥

खोटै = बुरे भावार्थ पाप कर्म रूपी वणजि = व्यापार वणंजिअै = खरीदने के कारण उन मनमुखों के मन वासनाओं

के कारण तता तनु = शारीरिक विकारों के कारण खोटे या बुरे हो जाते हैं।

फाही फाथे मिरग जिउ:
दूखु घणो नित रोइ॥2॥

जिस प्रकार से फाही या फन्दे में मिरग = मृग (हिरण) फँसा हुआ होता है उसी प्रकार से वे मौत की फाही में फाथे = फँसे रहते हैं। जन्म-मरण के दुखु घणो = भारी दुखों के कारण वे प्रतिदिन रोहि = रोते रहते हैं।

खोटे पोतै ना पवहि;
तिन हरि गुर दरसु न होइ॥

जिउ = जिस प्रकार से खोटे रुपइए, पोतै = खजाने में नहीं पवहि = डाले जाते हैं, उसी प्रकार से खोटे पुरुष भी ईश्वर की दरगाह में स्वीकार नहीं किए जाते हैं, भावार्थ वे ईश्वर की ज्योति में नहीं मिल पाते हैं। तिन = उन्हें न तो हरि = प्रभु जी के तथा न ही गुरू जी के दरशु = दर्शन प्राप्त होइ = हो पाते हैं।

खोटे, जाति न पति है;
खोटि न सीझसि कोइ॥

बुरे व्यक्ति की कोई जाति या पाति अथवा गोत्र नहीं समझा जाता क्योंकि बुरे कार्य करने वाला तो बुरा ही गिना जाता है, फिर चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र या वैश्य अर्थात कोई भी क्यों न हो या फिर वह हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या इसाई किसी भी धर्म से सम्बन्धित क्यों न हो। बुरे कार्यों को करने वाला कोई भी व्यक्ति मुक्त नहीं हो सकता है।

खोटे खोटु कमावणा;
आइ गइआ पति खोइ॥3॥

खोटे = बुरी नीयत वाले पुरुष खोटु = बुरे कर्मों को करते रहने के कारण अपने कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म धारण करके आइ = इस संसार में आए होते हैं और संसार में पुन: अपनी पति = इज्जत को गंवा कर परलोक को चले जाते हैं, भावार्थ वे मनुष्य जन्म का कोई भी लाभ प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

नानक मनु समझाईऐ;
गुर कै सबदि सालाह॥

सतगुरू जी फुरमान करते हैं कि हे भाई! आओ! अपने मन को गुरू जी की शिक्षा के माध्यम से समझाएँ कि गुरू साहिब के शब्द के द्वारा परमेश्वर की सालाह = स्तुति किया करो।

राम नाम रंगि रतिआ;
भारू न भरमु तिनाह॥

हे भाई! जो राम = परमेश्वर के नाम रंग में रंगे गए हैं, तिनाह = उनके सिर पर पापों का भार तथा स्वरूप का भ्रम नहीं होता है।

हरि जपि लाहा अगला;
निरभउ हरि मनमाह॥4॥23॥

उन गुरमुखों को हरि जपि = प्रभु जी का नाम जपकर अगला = बहुत सारा लाहा = लाभ प्राप्त हुआ है, जिन के मन माह = में निरभउ = भय रहित हरि = प्रभु बस गया है अथवा जो परमात्मा को मन में बसा कर निरभउ = निर्भीक हो गए हैं, उन्हें फिर काल आदि का भी कोई भय नहीं रहता है।

'चलता'

(पृष्ठ 51 का शेष)

उसने मदद न भी की तो भी वे आगे बठिंडे के जल रहित रेतीले इलाके में प्रवेश कर जाएँगे। लेकिन उनके बरनाला पहुँचने से पहले ही अफगान, सिक्खों की इस टुकड़ी के बाहरी रक्षक दल को चीर कर इस सारी सिक्ख टुकड़ी पर एकदम से टूट पड़े। सरदार चढ़त सिंह तथा जस्सा सिंह आहलूवालिया ने बड़ी ही शूरवीरता व मर्दानगी से वैरी दल का मुकाबिला किया तथा लहूलुहान हो जाने पर भी अपने लोगों को बचाने की पुरजोर कोशिश करते रहे लेकिन वैरी दल की संख्या असंख्य थी। इस हमले में अफगानों ने कम से कम दस हजार सिक्ख मर्द, औरतों और बच्चों का कत्ल कर दिया। यह कत्लेआम 5 फरवरी सन् 1762 ई. को हुआ। इस कत्लेआम को इतिहास में बड़ा घल्लूघारा कहा जाता है।

(श्रोत - सिक्ख इतिहास चुनी हुई साखियाँ)

नोट - बड़ा घल्लूघारा के महान शहीदों को प्रणाम करने के लिए कुप्प रहीड़ा (संगरूर) में पंजाब सरकार द्वारा 'कुप्प रहीड़ा शहीदी यादगार' को निर्मित किया गया है।

गुरू गोबिंद सिंह रचित - जफरनामा

सन्त निरंजन सिंह नूर

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 51)

मूल

67. कि अजबसत इनसाणे दीं परवरी।
कि हैफ असत सद हैफ ईं सरवरी।

अर्थ - अजबसत = अजीब है, दी परवारी = धर्म की रक्षा, हैफ = अफसोस, ई सखरी = यह बड़प्पन।

अनुवाद

तेरी दीनदारी टिकी कास ते?
तुअ्सब जहिर मुनसणँ वासते।

तुम्हारी बादशाहत पर सैकड़ों अफसोस हैं। तुम्हारे न्याय व धर्म या धर्मपरस्ती पर आश्चर्य है।

मूल

68. किह अजब असत अजब असत फतवा शुमा।
बजुज रासती सुखन जफतन जियाँ।

अर्थ - फतवा - जेहादी निर्णय, बजुज = सिवाए, रास्ती = सच्चाई, सुखन गुफतन = बात करनी, जिया = हानि।

अनुवाद

अजब तेरे फतवे, जुरम-जाप है।
ते सच बोलणा कुफर है, पाप है।

यह अत्यन्त हैरानी की बात है कि एक तरफ तो तुम यह मानते हो कि सच्चाई से बिना अन्य कोई भी बात करने में हानि ही हानि है और दूसरी तरफ तुम झूठे फतवे पर एक तरफा जेहादी निर्णय देकर न्याय को लहूलुहान कर रहे हो। तुम खड़े कहाँ पर हो? तुम्हारी वास्तविक स्थिति कहाँ पर टिकी हुई है?

मूल

69. मजन तेग बर खूनि कस बेदरेग।
तुरा नीज खूं चरख रेजद बतेग।

अर्थ - मजन = न चलाो, चरख = आकाश, दिव्य शक्ति, बेदरेग = बेदर्दी से, नीज = भी, रेजद = बहाना (रक्त आदि)।

अनुवाद

जे डोली गिआ बेगुनाह दा लहू।
तेरा खून वी तेग पी के रहू।

औरंगजेब! किसी का खून करने के लिए बेदर्द होकर तलवार न चलाओ अन्यथा दिव्य शक्ति तलवार के द्वारा तुम्हारा भी खून बहाएगी।

मूल

70. तूं गाफिल मशौ मरदि यजदाँ हिरास।
कि ओ बेनयाजसत उ बेसिपास।

अर्थ - गाफिल मशौ = गाफिल न बनो, हरास = डराना, बेसपास = खुशामद से ऊपर।

अनुवाद

गफलत ना कर, ना बंदे खुदा दे डरा,
बेप्रवाह खुशामद नहीं भालदा।

तुम गाफिल होकर ईश्वरीय लोगों को न डराओ क्योंकि परमात्मा बेपरवाह है और वह चापलूसी आदि से ऊपर है।

मूल

71. कि उ बेमुहाबसत शाहानि शाह।
जमीनो जमाँ रा सचाए पातशाह।

अर्थ - बेमहाब = निर्भय, जमीनो जमां = अर्श और फर्श।

अनुवाद

उह निरभै ना भुखा कि बे माण दा।
उह वाली दो आलम दा जग जाणदा।

वह निर्भय परमात्मा शाहों का शाह है। वह अर्श और फर्श का मालिक है और वही सच्चा बादशाह है।

मूल

72. खुदावंदि एजद जमीनो जमाँ।
कुनिंदसत हर कस मकीनो मकाँ।

अर्थ - ऐजद = खुदा, कुनिंदसत = किया है, मकां = जगह, मकीं = रहने वाला।

अनुवाद

उह मालक महाँ धरत आकाश दा।
जगा, जी जलौ उहदे प्रकाश दा।

वह परमात्मा धरती और आकाश का मालिक है और उसने ही प्रत्येक जगह और वहाँ रहने वालों की रचना की है।

मूल

73. हम अज पीर मोरो हमज पीलतन।
कि आजिज निवाजसतो गाफिल शिकन।

अर्थ - पीर = बूढ़ा, मेरो = चींटी पीलतन = हाथी आजिज निवाज = गरीबों का पक्षधर, गाफिल शिकन = अपने दायित्वों को भूल जाने वालों का मारने वाला।

अनुवाद

उह कीड़ी तों हाथी सभे पालदा।
उह गाफल नूं छाँगे, निमर नाल दा।

परमात्मा वृद्ध चींटी से लेकर हाथी तक का पालन पोषण करता है, वह गरीबों को सम्मान देने वाला है तथा अपने दायित्वों को भूल जाने वालों का नाश करने वाला है।

मूल

74. कि उ रा चु इसममसत आजिज निवाज।
कि उ बेसपास अस उ बेनिआज।

अर्थ - इसमें = नाम, बेसपास = खुशामद से ऊपर बेनिआज = कामना रहित।

अनुवाद

उहदा नाम है दीन-बंदू खुदा।
बेपरवाह खुशामद तों उँचा सदा।

परमात्मा का नाम ही गरीब निवाज है, वह बेपरवाह है तथा खुशामद आदि से ऊपर है।

75. कि उ बेनिगूं असत उ बेचगुं।
कि उ रहिनुमा असत उ रहिनमूं।

अर्थ - निगूँ = रंग, रूप व शक्ल, चगूँ = चिन्ह, रहिनमूँ = आगू।

अनुवाद

अदूती सतंतर ते रहिबर वी उह।
उह तसवीर जिसदा मुसवर वी उह।

परमात्मा का कोई भी रंग नहीं है और न ही उसका कोई चिन्ह है, वही मार्गदर्शक तथा वही मुखी है।

मूल

76. कि बर सर तुरा फरजि कसमि कुरआँ।
ब गुफतह शुमा कारि खूबी रसाँ।

अर्थ - बर सर तुरा = तुम्हारे सिर पर, गुफतम शुमा = तुम्हारा कथन, खूबी = अच्छी तरह, रसां = पहुँचाओ।

अनुवाद

जरा लाज रख कसम कुरआन दी।
किहा है ताँ कर, बाजी ला जान दी।

ऐ औरंगजेब! तुम्हारे ऊपर कुरान की कसम का फर्ज लागू है और अपने किए हुए वचनानुसार इसे अच्छी तरह से पूरा करो।

77. बबायद तू दानिश प्रसती कुनी।
बकारि शुमा चीरह दसती कुनी।

अर्थ - बबायद = तुम्हें यह चाहिए कि, दानिशपरस्ती = अक्लमन्दी, कुनी = तुम करो, शुभ = तू/तेरा, चीरह दसती = कठोरता का प्रयोग करना।

अनुवाद

जे दाना कहें आपणे आप नूं,
सिरड़ नाल कर अमल दे जाप नूं।

तुम्हें यह चाहिए कि तुम सयानप से काम लो तथा अपने काम पर दृढ़तापूर्वक हाथ डालो।

मूल

78. चिहा शुद कि चूं बचगाँ कुशतह चार।
कि बाकी बिमाँदसत पेचीदा मार।

अर्थ - चिहा शुद = क्या हुआ, चूँ = यदि बचगां = बच्चे, बिमांदसत = शेष है, पेचीदामार = कुण्डली वाला नाग (सर्प)।

अनुवाद

तूं मरवाए पुत चार की हो गिआ,
है बाकी कुंडलीआ भुझंग जलसा।

क्या हुआ यदि मेरे चार बच्चे मार गए हैं, अभी कुण्डली वाला नाग (खालसा) शेष है (जो तुमसे गिन गिन गिन कर बदले लेगा)।

'चलता'

नौवें रत्न - सन्त ईशर सिंह जी महाराज, राड़ा साहिब

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 60)

लन्दन द्वारा अन्तिम सफर की तैयारी

अफ्रीका में जो ज्योति रूप अमृत का प्रसार सन्त महाराज ने प्रदीप्त किया था, वह कहीं भी मिटाया या मद्धम नहीं हो सकता था। स्वाभाविक तौर पर जब योगान्डा तथा अन्य अफ्रीकी भागों के सिंघ, इगलैण्ड के शहरी होने के रिश्ते सारे ही नहीं, तब बहुत से जो कहीं भी अपने आपको बसाने के प्रयत्न न कर सके वे सभी इंगलैंड में प्रवेश कर गये। फिर जब वे कारोबारी तौर पर भी वहीं जम गये, तब कुदरती तौर पर अन्य पक्षों के साथ ही उन्हें धार्मिक महान हस्तियों का भी ध्यान हो उठा।

गुरू तेग बहादुर साहिब के 300 वर्षगाँठ के समय प्रिंसिपल सतबीर सिंघ ने एक सच्ची बात सिख धर्म के प्रचारकों तथा वक्ताओं तथा आगुओं को कही थी कि इगलैण्ड वाले जो ये समझते हैं कि पंजाब से सिख, सन्त, रागी, डाढ़ी हर कोई केवल पैसा कमाने के लालच से ही इगलैण्ड आता है। इन्हें गुरू मत और इससे सम्बधित लोगों की भावनाओं की कोई भी परवाह नहीं है। अत: हो सके उस समय गये हुए प्रचारकों को लोगों के अन्दर त्याग की मनोवृत्ति का प्रसार करना चाहिए ताकि लोगों के मनों में धर्म के लिए प्यार बढ़े। कुदरती सरदार मोहन सिंघ जी कोका कोला वालों के छोटे सुपुत्र चरणजीत सिंघ के साथ इगलैण्ड जाने का समय मिला। उनसे भी आम सिखों से प्रिंसिपल सतबीर सिंघ जी के विचारों की पुष्टि हुई थी। आम सिखों का इगलैण्ड में एक ही विचार है कि सिख सन्त-साध गृहस्थी काया त्यागी, रागी या फिर प्रचारक नेता, कोई भी माया से त्यागी रहकर विलायत नहीं पहुँचता। चरणजीत सिंघ वह सौभाग्यशाली तथा कर्मवीर नवयुवक है जिन्होंने माँ की गोदी से ही सन्त महाराज की महानता, प्रधानता तथा साधना से भरी बातें, आखों से देखी हैं फिर पिता तथा माता से हर समय ही भरपूर प्रशंसा ही नहीं बल्कि श्रद्धा भरी भावनाएं भी देखीं और उनके अन्दर जीवन को ढाला है। अत: इंगलैंड निवासी कई सुजान पुरुषों तथा उच्च कोटि के नेताओं से उन्होंने सलाह की कि सन्त महाराज जी को विलायत बुलाया जाये। पर वे सज्जन जिन्होंने सन्त जी का शाही ठाठ तथा जीवन देखा था, डरते थे। कई विरोधी तथा कट्टर पन्थी कुछ बढ़-चढ़ कर कठोर बातें भी करते हैं यह गुरू डम का प्रकटावा यहाँ नहीं चलेगा। पर चरणजीत सिंघ जी ने यह निश्चय किया कि वह सन्त महाराज को ले जाकर लोगों के संशय निवृत्त करके सत-शब्द को अवश्य प्रकट करेंगे।

अफ्रीका निवासियों ने एक बार में ही सन्त जी को अजमा कर देखा था, फिर अब और अज़मायश किस बात की करनी थी। उन्हें वह बात भूली नहीं थी, जब नैरोबी की संगतों ने सन्त जी महाराज को हाई स्कूल के लिये पैसे इकट्ठे करने की आज्ञा मांगी थी, तब आप जी ने कहा था, ''हमारी सम्प्रदाय का नियम है, मांगना नहीं, मोहताज नहीं होना, किसी से माँग नहीं रखनी सो जो माया हमारे जीवन को आतम देश के महान मण्डलों में प्रवेश करने से रोक दे, ऐसे रिज़क को सौ बार धिक्कार।

''ऐ ताइरे लाहूती उस रिज़क से मौत अच्छी।
जिस रिज़क से आती है परवाज़ में कोताही।''

1970 में पहली बार चरणजीत सिंघ जी ने विलायत जाने की बात चलाई। आखिर बात चलते-चलते जब उन्होंने कहा, ''महाराज! सत्संग की महानता सिखों के बड़प्पन तथा धर्म की धिर तो यह मांग करती है कि सन्त जी महाराज इगलैण्ड जाएं। ताकि जो लोगों के मनों में सतनाम की महानता प्रकट हो और धर्म के नाम पर चल रही आधियाँ, जो नकली निरंकारी तथा अन्य धर्म नाशक, धर्म के ठेकेदारों ने चला रखी हैं, वे तुरन्त ही भ्रम तथा धुन्ध के बादलों की तरह काफूर हो जाये। आखिर सन्त महाराज ने भी किसी महान समय की प्रतीक्षा में, 1974 में जाने की आज्ञा दे दी। 14 जून को सक्रान्ति का रात के समय का दीवान था। सदा की तरह कीर्तन समाप्त किया। फिर संगतों को हमेशा की तरह पूर्णमाशी के होने वालो दीवानों पर दूसरे नगरों को भी कोई प्रोग्राम न दिया। बल्कि अगले प्रोग्राम फिर समाप्त हों, संगत की भेंट किये जाने का वायदा था। पर यह बात सारी संगत जानती थी कि सन्त महाराज 9 माघ 2021 जनवरी को सन्त महाराज बाबा अतर सिंघ जी के ज्योति जोत समाने की रात को आयेंगे। इस दीवान की हाज़िरी तो वह अति बीमारी के समय भी नहीं भूले थे, फिर विलायत से वापिसी कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी। आप जी के साथ जत्थेदार महेन्द्र सिंघ जी, निजी सेवक नरेन्द्र सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई अमरीक सिंघ कीर्तनिए, भाई भुपिन्द्र सिंघ, भाई निरंजन

सिंघ, लाऊडस्पीकर वाला भाई कुलदीप सिंघ ढोलकिया नम्बर 2, भाई शेर सिंघ जी, सन्त जी महाराज का लांगरी, विशेष साथी थे।

एक रात दबलान रहकर अगले दिन दिल्ली, कोका कोला वालों की कोठी में विश्राम करके फिर 23 तारीख को हवाई जहाज़ द्वारा उड़ान भरी। जहाज रास्ते में कई स्थानों पर उतरा और अन्त में भारतीय समय के अनुसार दिन के तीन बजे तथा इगलैण्ड की घड़ियों के अनुसार 11 बजे दिन में इंगलैंड की राजधानी जा पहुँचे।

इस यात्रा की अन्य लोगों पर विशेष रूप से स्टाफ पर प्रभाव डालने वाली बात यह थी कि सन्त महाराज जी तथा आप जी के किसी भी साथी ने, सफर में, कोई भी चीज़ जिस पर उनका अधिकार भी था और जिसकी रकम भी टिकट अन्दर ही ली जाती है, ग्रहण नहीं की क्योंकि आप जी को वैष्णव भोजन का ही नहीं बल्कि यह भी ध्यान था कि बैरा हर समय जूठन आदि का प्रयोग करते हैं। इसलिये उनके द्वारा साफ की गई चीज़ें, साफ तथा पवित्र नहीं मानी जा सकतीं। फिर भी जब जहाज पहले बैरूत उतरा, तब सभी यात्री बाहर खाने पीने के लिये निकले, पर सन्त जी महाराज तथा उनकी संगत बैठी रही। सो अफसरों को चिन्ता हुई कि कोई शिकायत न हो। पर सन्त जी महाराज ने बताया कि हमें तुम्हारी किसी भी वस्तु से अपने जीवन के लिये आहार की अधिक चिन्ता है। सन्त महाराज का सेवक खास कोका कोला तथा दो बोलतें दूध ले गया था जो कि एक स्थान पर प्रयोग कर लिया गया। बाकी सेवक भी अपने प्रयोग के लिये थर्मस बोतलें ले गये थे। उन्हीं से ही अपनी जरूरतें पूरी करते रहे, पर जहाज वालों से कोई भी चीज़ लेकर न खाई। शायद जहाज वालों के अचम्भे तथा हैरानी की इससे बढ़कर और कोई भी बात नहीं थी कि उनकी कोई भी चीज़ ग्रहण न की गई हो, फिर उनके खिलाफ कोई गिला शिकवा भी न हो।

हवाई अड्डे पर स्वागत करने के लिये सन्त सेवा सिंघ जी जो आनन्दपुर की सेवा करवाया करते थे, ज्ञानी कुलदीप सिंघ जी, रागी बचितर सिंघ जी और गुरूद्वारा कमेटी साऊथहाल के कई मुखिया सेवक भी पहुँचे हुए थे। इन्होंने सन्त जी महाराज का शानदार स्वागत किया और सेहरों से आप जी को लाद दिया। इंगलैण्ड के कस्टम स्टाफ हमसे कुछ अलग ही किस्म के हैं उन्हें कमेटी के प्रबन्धकों ने बता दिया था कि तुम्हारे लाट-पादरी के रूतबे से भी अधिक महान हस्ती यहाँ पहुँच रही हैं, अतः उन्होंने सन्त महाराज पर कोई बहुत अधिक कार्यवाही न की, सामान बाहर भेज दिया था। सन्त महाराज चरणजीत सिंघ सहित मरसीडज़ में बैठ गये तथा बाकी संगत की अगवानी के लिये अन्य कारें थीं। लगभग दिन के 12 बजे जब हमारे देश में चार बजे होंगे, साऊथहाल गुरूद्वारे में पहुँच गये। भोजन सरदार मोहन सिंघ आहलूवालिया की कोठी पर किया। रिहायश का प्रबन्ध 46 एथीनियम फिनले नार्थ 20 में था। सो सन्त महाराज उस स्थान पर पहुँच गये। यह स. तारा सिंघ, अफ्रीका से आये हुए सज्जन का घर था। जो पहले गोबिन्दगढ़ निवासी था। सन्त महाराज यहाँ पर कई दिनों तक ठहरे। पर न ही घर के मालिक ने सन्त महाराज की निकटता प्राप्त की, न ही कोई धार्मिक गुण हासिल करने का यत्न किया।

दीवान आरम्भ

जिस दिन पहुँचे, अगले ही दिन से दीवान लगने आरम्भ हो गये। पता नहीं घर से दूर होने के या फिर कुदरती ही सिख बच्चों को धर्म से अधिक लगाव है। श्री सन्त जी महाराज के दीवान में पहले दिन सिख महिलाओं की संख्या काफी थी। श्री सन्त जी महाराज ने स्त्री जाति के बारे में ही बताया था। गुरू नानक महाराज ने स्त्री जाति को जो स्थान दिया उस समय तक समाज के किसी भी अंग में, उसे प्राप्त नहीं था। दुनियाँ के धार्मिक नेताओं ने कभी भी, स्त्री को पुरुष के समान दर्ज़ा नहीं दिया। हिन्दू मत अनुसार औरत, मनुष्य का भ्रम है, माया है और भूल-भुलैया में डालकर मनुष्य को वास्तविकता जानने से रोकती है। वह कभी भी विद्या, धर्म तथा आत्म ज्ञान की हकदार नहीं हो सकती।

इस्लाम वालों ने औरत को जमात में खड़े होकर सांझी सफ में नमाज़ पढ़ने का अधिकार नहीं दिया। फिर गवाही में भी औरत को मनुष्य के अधीन ही माना है। साथ ही कतेबी धर्मों का यह कहना है कि स्त्री को मनुष्य की बाबा आदम को बरगलान के लिये अनाज खाने के लिये कहा और वह बहशत से नीचे धकेल दिया था। इस प्रकार औरत की कमियों, गलतियों और एबों का कारण बन गई। ईसाई मत ने औरतों को कुछ स्थान दिया है पर वह भी इसे कोई बड़ा रुतबा (पद) न दे सका। पर गुरू नानक को यह मान प्राप्त है कि उनकी सबसे पहली सेविका सिख ही बेबे नानकी थी जो उनकी बड़ी बहन भी थी। पर गुरू परमेश्वर का रूप समझकर उसने गुरू नानक को माना है।

गुरू नानक के मतानुसार मनुष्य गाड़ी के दो पहिये एक स्त्री और दूसरा पुरुष, दोनों के बिना मनुष्य की उपज, उन्नति तथा उपासना ही सम्भव नहीं है। फिर यदि जननी ही बुरी है फिर उससे पैदा हुई वस्तु कैसे अच्छी हो सकती है? कड़वी

बेल को मीठे, फल कैसे लग सकता है? सो सिखी को यह गौरव है कि अमृतपान करते समय दोनों जीव एक ही सफ में एक ही मन्त्र के हकदार तथा एक जैसी ही रहत रखने के अधिकारी हैं।

चुम्बकीय प्रभावी महात्मा

अफ्रीका से आने वाले परिवारों तथा सन्त सेवकों में से सरदार ईशर सिंघ जी कलसी, खास प्रेमियों में से थे। हमने पहले भी बताया था कि सन्त जी महाराज के पहुँचने पर साऊथहाल सिंघ सभा के प्रबन्धों तथा प्रचार का माहौल कट्टरपन्थी लोगों के हाथों में था। सरदार ईशर सिंघ जी रोजाना ही सत्संग करते थे और साथ ही साथ कुर्सी पर भी हाजिरी भर दिया करते थे। इनके एक बहुत घनिष्ठ मित्र थे। वह एक नास्तिक सिख था। वह रोज़ कहा करता था कि क्या लाभ हुआ मुझे?

सरदार ईशर सिंघ जी कहा करते थे तू जिस दुकान पर जाते ही नहीं, उसके सौदे के बारे में क्या बता सकता हो? एक बार वह मान गया कि चलता हूँ, पर मैं चरणों में शीश नहीं झुकऊँगा। सो वह केवल साथ ही चलने के लिये पहुँच गया था।

सन्त जी महाराज कुर्सी पर बैठ कर वार्तालाप कर रहे थे। वह पहुँचा और चरणों में सिर झुका दिया, पर उठे ही ना। सन्त महाराज जी ने शाबाशी देकर उठाया। इसे उठने की इच्छा ही नहीं रही थी। दीवान के समय तो ऐसी झरनाहट तथा समाधि लगी कि देश काल की सुध ही भूल गया। पूछा तो इसने बताया कि उसे तो समय का ध्यान ही नहीं था कि क्या हुआ पर एक शिकवा जरूर था कि आपने यही बात पहले ही क्यों न बताई? जो समय खाली बीत गया, उसके लिये वह पश्चाताप करता रहता था। वह तेरह दिन के दीवानों के पश्चात जब आखिरी दिन अमृत प्रचार हुआ तब 87 व्यक्ति और थे। यह पहला सफ में अमृत अभिलाषी था। इसके अतिरिक्त अन्य कई ताज़े ही केश धारण करके, गुरू की शरण में पहुँचे थे। बाद में बर्निंग ईस्ट लन्दन में 17 दिन दीवान सजे और उपस्थिति पहले से अधिक होती चली गई।

इसके पश्चात पाँच दिन दीवान हिचन टाऊन में सजाये। रिहायश रायपुर के परम सेवक सरदार करनैल सिंघ गरेवाल के सुपुत्र सरदार जगदेव सिंघ तथा परमजीत सिंघ के गृह में रखी हुई थी। इस स्थान पर भी अन्तिम दिन अमृत संचार हुआ। 25 सिंघों ने गुरू गोबिन्द सिंघ जी के साथ गाँठ जोड़ी। दो दिन दीवान बैडफोर्ड हाल में सजाये गये थे। इस स्थान पर लोगों में शबद सुरत की बातों का बहुत प्रभाव पड़ा था, ऐसा बताते हैं। जब सन्त महाराज ने बताया कि हमारा मार्ग भक्ति सहज वेदान्त और फिर शबद सुरत का मार्ग है। इस मत को दुनियां में सबसे पहले गुरू नानक महाराज ने ही फैलाया और इसकी महिमा की कीर्ति चारों ओर फैली थी। जो लोग इसे अपना मार्ग बताते हैं, वे गुरमत से अनजान हैं।

बरमिंघम

विलायत के दो मशहूर स्थान हैं एक बरमिंघम तथा दूसरा बकिंघम। एक उसकी नब्ज़ है तो दूसरा दिमाग। सत्ता जो राज दरबार को चलाती है वह बकिंघम में बैठकर कानून बनाती है जो कि किसी समय संसार में अपना राज्य भी करती थी, पर अब सिमट कर अपने ही घर में ही राज्य की मालिक रह गई है। बरमिंघम तथा बकिंघम की हस्ती तथा शक्ति से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। अग्रेज़ों को देश में से निकले हुए 33 वर्ष हो चुके हैं। पर आज भी रेलवे के खम्बे तथा गाडियाँ पुरानी लकीरों पर और लोहे का छोटा मोटा पुराना सामान भी तुम्हें बरमिंघम से बने हुए होने की गवाही देता है। बेशक बाहर से आया हुआ सामान अब काफी हद तक बढ़ गया है। जापानी कारें अब सस्ती मिल जाने के कारण अधिक बिकती हैं। पर बरमिंघम की मोहर, छाप में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। लेखक के पुराने जानकर सरदार दलीप सिंघ माठा जिन्होंने बहुत ही अल्पायु में मुझे राड़े की ढक्की जाने को कहा था, भी बरमिंघम ही रहते हैं। इनकी प्रेरणा के कारण ही दीवान सजाये गये। सन्त जी महाराज की रिहायश सरदार सौदागर सिंघ जी की कोठी थी जो इस स्थान से 16 मील दूर थी। दीवान की समाप्ति पर 56 प्राणी अमृत पान करके गुरू के जहाज पर चढ़े थे। इस नगर में भाई भतीजावाद काफी था। रामगडिये, रविदासिये, टांक खत्री तथा फिर प्रजापति सभी ने ही अलग-अलग तथा भाईचारे के आधार पर गुरू स्थान भी बनवा रखे थे। मज़े की बात यह थी कि इन्होंने रागी तथा ग्रन्थी भी अपने ही भाईचारे में से रखे हुए थे। पर सन्त जी महाराज ने कहा, ''मेरा भाईचारा और जाति केवल सिक्खी है। अत: समूचे सर्व सांझे स्थानों पर दीवान सजाये थे। पर अन्तिम दिन, अमृत प्रचार के लिये सिख टैम्पल ही चुना गया और सन्त महाराज जी भी पहुँचे थे।''

लोह टोप तथा सिख

मोटर साईकल की सवारी करते समय चोट खाकर गिरने वाला, सिर के बल यदि सड़क पर गिरता है तो आम तौर पर सिर पर चोट लगने के कारण मर जाता है। यही कानून आजकल भारत वर्ष में चालू हैं, बेशक इसका प्रयोग

बड़ी सख्ती से नहीं हो रहा, पर कानून तो कानून ही होता है। यह बचाव का भी साधन है। बर्तानिया की सरकार ने 1973 में एक कानून पास करके, मोटर साईकल सवारों के लिये लोह-टोप पहनना जरूरी इकरार कर दिया और विरोध करने वालों को सख्त सजा तज़वीज की। इससे पहले 1939 के विश्व युद्ध के समय भी बर्तानवी गौस-मास्क तथा लोह-टोप पहनना फौजों के लिये जरूरी करार कर दिया था। कई बड़े-बड़े सिख आगुओं ने टोप पहन कर फोटो भी खिंचवाये थे। सिख फौजियों ने किसी की कोई राय तथा फोटो खिंचवाने के सन्देश की कोई परवाह नहीं की थी। अन्त में भारत के फौजियों को सिखों से इस टोप से मुक्त इकरार कर दिया था।

परन्तु जब सन्त महाराज 1974 में गुरूद्वारा साऊथहाल में थे, तब यह बात उनके भी ध्यान में लाई गई। महापुरुषों ने कहा था, ''सिखी में दस्तार की अपनी महानता है। सिख दस्तार के उतर जाने को अपनी पत (इज्ज़त) उतर जाने के समान मानता है और यदि अपमानित होकर वह जीता है तो उसका जीना बेकार है।'' सिख ने उस समय भी दस्तार नहीं उतारी और गायब नहीं होने दी जब कि उसके सिर का मूल्य उस समय 80 रूपये होता था। अब आजकल एक छोटे से कपड़े के चार किनारों का ताना बनाकर जो बान्धे जाते हैं, ये कोई दस्तार नहीं है।

यह ठीक है कि भारत के अन्दर अनेक कौमें पगड़ी पहनती हैं। परन्तु वे उसकी महानता तथा गौरव को कम ही जानते हैं। उस समय राज दरबार से आज्ञा लेकर कोई सरदार कहलवा सकता और दस्तार सजा सकता था। कलगीधर महाराज ने सिंघ को, दस्तार सहित साबत सूरत होने के बाद सिंघ होने के हकदार बनाया था।

सिंघ की दस्तार सिर की रक्षा करने के लिये हर तरह से समरथ है। अन्त में बर्तानवी सरकार झुक गई और सिख सफल हो गये। सन्त जी महाराज ने फ़रमान किया था। हम पंजाब से बाहर गुरू गोबिन्द सिंघ जी के पैगम्बर हैं। हमारे कार्य, व्यवहार, रहन-सहन से किसी ने हमारी तथा हमारे गुरुदेव ने कौम के बारे में कोई राय कायम नहीं करनी है। सो फैसला करो कि घर से बाहर आते समय कन्घा करके, दस्तार पोच कर, सफाई से बान्धो। यही सिखी मर्यादा है। यह गुरू की आज्ञा भी है।

(गिआनी मेहर जी सिंह जी की पुस्तक
नौं रत्न में से धन्यवाद सहित)

(पृष्ठ 43 का शेष)

गुरू घर में संगत एक विस्वा और गुरू बीस विसवे है, जब गुर संगत हो तो फिर इक्कीस विस्वे हो जाती है। ये गुरू का आसरा लेकर चलते हैं। जहाँ पर नाम-वाणी का प्रचार होता है तो वहाँ पर फिर उन्नति होती ही चली जाती है। आज के युग में मीडिए को स्थापित करके, उसे बुलन्दावस्था में ले जाना बहुत बड़ी बात है। जिस संस्था का लीडर रूहानियत से ओत प्रोत हो और उसकी अगुवाई में सारी टीम चले तो वह ट्रस्ट, संस्था, आर्गनाइजेशन या कोई सभा-सोसाइटी बहुत ही नियमित ढंग से चला करती है।

इस प्रकार जो भाई साहिब भाई महिन्दर सिंह जी हैं, ये बहुत ही सम्माननीय हस्ती हैं, महापुरुष जब भी रतवाड़ा साहिब से यहाँ इग्लैंड की धरती पर आया करते थे तो यहाँ पर पाँच-पाँच दिन के सत्संग समागम होते थे। इसलिए इनके साथ महापुरुषों का बहुत प्यार है। अतः सारी संगत को यही विनती है कि संगत के साथ मिलकर किया हुआ कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहा करता है। इस प्रकार यह संगत टी.वी. चैनल है, इसलिए इसकी सदैव बुलन्दावस्था ही रहेगी। हमारी भी यह अरदास है कि गुरू महाराज जी संगत टी.वी. को सदैव बुलन्दावस्था में रखे।

वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतहि।

बाबा जी! आपका बहुत बहुत धन्यवाद, आप हमारी विनती को स्वीकार करके इस टी.वी. के स्टूडियो में आए और संगत के साथ अपनी विचारें सांझी कीं। सतगुरू जी कृपा करें, जल्दी पुनः ऐसा समय बने कि हम लोग पुनः आपके प्रवचन सुन सकें। फिर जब बड़े स्तर पर बात करेंगे तो फिर किसी विशेष विषय के साथ बात करेंगे ताकि हम लोग आपसे कुछ ज्यादा लाभ प्राप्त कर सकें। एक बार पुनः आपका हार्दिक धन्यवाद और उस संगत का भी बहुत-बहुत धन्यवाद जो कि इस समय टैलीविजन के माध्यम से आपके प्रवचन सुन रही थी। आप लोग सदैव इसी प्रकार से जुड़े रहना और इसी प्रकार से मिलजुल कर हम लोगों ने उज्ज्वल भविष्य की, उज्ज्वल पन्थ की और सबके भले की बात करनी है। जिसके द्वारा गुरू नानक का सन्देश घर-घर जा सके। एक बार पुनः क्षमायाचना करते हुए फतह सांझी करते हैं -

वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतहि।

स्वामी राम जी के प्रेरणात्मक विचार
(Inspired Thoughts of Swami Ram)

डा. स्वामी राम जी

अनुवादिका - डा. तेजिन्दर मल्होत्रा

(श्रृंखला जोड़ने के लिए देखें, अंक जनवरी, पृष्ठ - 62)

पतंजलि जी बताते हैं कि हम अपनी अज्ञानता के कारण ही अपने लिए समस्याएँ खड़ी कर लेते हैं। ज्ञान व अज्ञान क्या है, इस सम्बन्ध में वे बताते हैं कि हम प्राय: अन्धेरे के बारे में बहुत सी बातें करते हैं जबकि अन्धेरा तो कुछ भी नहीं है। अन्धेरे का तात्पर्य है कि प्रकाश का अभाव। सूर्य को पूछो कि क्या तुमने कभी अन्धेरा देखा है? सूर्य तुम्हें जवाब देगा कि अन्धेरे जैसी कोई चीज तो होती ही नहीं है। ठीक इसी प्रकार से अज्ञान नाम की कोई चीज होती ही नहीं है। अज्ञान का तात्पर्य है कि ज्ञान की कमी, चेतना की कमी। यदि तुम प्रत्येक समय चेतन्य हो तो फिर तुम अल्पज्ञ कैसे हो? प्रत्येक समय चेतन रहना सच्चाई के बारे में जानना, सत्य का ज्ञान रखना हो तो फिर तुम तनिक सा भी डरोगे नहीं।

यदि तुम डरते हो तो इसका तात्पर्य है कि तुम प्रत्येक समय अवास्तविकता के साथ माया के साथ जुड़े हुए हो। तुम अपने दैनिक जीवन में जिस शब्द का प्रयोग करते हो वह है - मैं। मैं ही शरीर के साथ जुड़ा हुआ है। तुम यह सोचते हो कि तुम शरीर हो, मैं शरीर हूँ। लेकिन पतंजलि कहते हैं कि यदि तुम स्वयं को निर्बल चीज के साथ जोड़ोगे तो फिर तुम निर्बल हो जाओगे, कमजोर हो जाओगे। ऐसा मत करो तुम सत्य को समझने की कोशिश करो, अपने अन्दर के सत्य को समझने की कोशिश करो, प्रत्येक समय उस सत्य के साथ रहने की कोशिश करो। उस सत्य के साथ रहते हुए ही संसार में विचरण करो लेकिन यह तभी सम्भव हो पाएगा जबकि तुम स्वयं को संसार की वस्तुओं के साथ जोड़ना बन्द कर दोगे और अपने अन्दर के सत्य के साथ प्रत्येक समय जुड़े रहोगे। क्या तुम इसे प्रयोगात्मक तौर पर अपने जीवन में उतार सकते हो? पतंजलि जी इसे बहुत ही सरल तरीके से बताते हैं। उनकी शर्त यह है कि सबसे पहले तुम यह मानो कि तुमने अपने आपको आदेश नहीं देना है बल्कि आत्म-सुधार करना है और स्वयं को अनुशासन में लाना है। जो भी करो, पूरे ध्यान से करो, ऐसा करके तुम उन चीजों में से आनन्द उठा सकोगे और तुम्हारा जीवन आनन्दमयी हो जाएगा। जब तुम पूरा-पूरा ध्यान नहीं देते हो या अधूरे मन व अधूरे ध्यान से कुछ भी करते हो तो फिर तुम उसमें से आनन्द नहीं उठा सकते हो। उदाहरण के तौर पर तुम छुट्टी जाना चाहते हो और पर्वत पर जाना चाहते हो लेकिन जब तुम वहाँ पर पहुँच जाते हो तो फिर तुम घर के बारे में ही सोचते रहते हो। वहाँ पर तुम यह सोचते रहते हो कि घर जाकर ही आनन्द उठाएँगे, भावार्थ तुम जहाँ पर भी हो उसका आनन्द नहीं उठा पाते हो इसलिए स्वयं का शोधन करने में देर मत करो। सारा आनन्द जिस बात पर निर्भर है वह है - अनुशासन, स्वयं को सुधारना।

अत: सबसे पहले पतंजलि तुम्हें इस बात के बारे में चेतन करवाते हैं कि तुम स्वयं को सांसारिक वस्तुओं के साथ जोड़ते हो और यही तुम्हारे दुख का कारण है। जब तुम आत्म सुधार करने लग पड़ते हो तो फिर तुम्हें सत्य का पता लगने लग जाता है फिर तुम्हें उस सत्य की अनुभूति होने लगती है जो कि तुम्हारे अन्दर है। यह एक अवस्था है जहाँ पर कि तुम सभी दुखों व संतापों से मुक्त हो जाते हो। यह चेतना का चौथा पड़ाव है, यह सर्वोपरि है। जब तुम इस अवस्था पर पहुँच जाते हो तो तुम्हें आनन्दमयी अवस्था की प्राप्ति हो जाती है यानि कि तुम्हारी समाधि लग जाती है। फिर तुम सभी दुखों, संतापों से मुक्त हो जाते हो और प्रश्न व उत्तर समाप्त हो जाते हैं, सारी समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। फिर तुम शान्त व आनन्दित हो जाते हो। पतंजलि जी बतलाते हैं कि हम इस अवस्था को इसी जीवन में प्राप्त कर सकते हैं। बस आवश्यकता है अपने आपको शोधन करने की, पूरा-पूरा ध्याने देने की, ताकि तुम प्रत्येक चीज को ठीक ढंग से, अच्छे ढंग से देख सको।

मैडिटेशन - एक चिकित्सा

संसार में फिलासफी के दो रूप हैं। एक है - पूरब की फिलासफी और दूसरी है पश्चिम की फिलासफी। पश्चिमी दर्शन (फिलासफी) पूर्ण सच्चाई को लेता है जबकि पूरबी दर्शन पूर्ण सच्चाई से सूक्ष्म रूप की तरफ जाता है, यानि कि मनुष्य के सूक्ष्म रूप को लेता है। यही एक अन्तर है। भले ही हम लोग पूरब और पश्चिम का दर्शन कहते हैं लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पूरब के लोग कुछ पृथक प्रकार के हैं और पश्चिम के कुछ अलग प्रकार के हैं। लोग तो प्रत्येक जगह के एक समान ही हैं, उनके संवेग और स्वभाव भी एक समान ही हैं। बस, उनके सांझे स्वभावों को पूरी तरह से समझने की आवश्यकता है।

इस चुनौती को पूरा करने के लिए हमारे पास मैडिटेशन से ऊपर का कोई यन्त्र नहीं है। मैडिटेशन वह यन्त्र है जिसके माध्यम से तुम स्वयं के स्तरों को जान लेते हो, उन्हें पहचान लेते हो। बचपन से ही हमें बाह्य संसार को जानने के लिए पढ़ाया जाता है लेकिन कोई भी हमें यह नहीं सिखाता है कि स्वयं को किस प्रकार से जानना है? हमें कोई उदाहरण भी इस प्रकार का प्राप्त नहीं हो पाता है कि जिसके माध्यम से हम सीख सकें। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा एक रट्टा बन कर रह गई है और हम एक दबाव या खिंचाव के नीचे जी रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम स्वयं को जानते ही नहीं हैं। फिर भी हम दूसरों के साथ ज्ञान का संचार करते हैं, बातचीत करते हैं, लेकिन हमारे रिश्ते कोई बहुत अधिक सफल नहीं हैं, अच्छे नहीं हैं। दरअस्ल हमारे जीवन का एक बहुत बड़ा भाग ध्यानरहित ही है।

यदि तुम समाज पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालोगे तो तुम्हें इस बात का पता चलेगा कि जिन लोगों ने संसार में बहुत सारी प्रप्तियाँ की हैं, वे आन्तरिक तौर पर शान्त नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर एक बार मैंने एक बहुत बड़े वैज्ञानिक की पत्नी को पूछा कि जब से तुम्हारे पति ने काफी प्राप्तियाँ कर ली हैं, उन्होंने बहुत नाम कमा लिया है, तब से तुम्हें कैसा महसूस होता है कि उनमें क्या बदलाव आया है? वह बताने लगी कि तब से उन्हें ऐसा लगता है कि उन्होंने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है। यहाँ पर हमें यह समझना पड़ेगा कि हमें शान्ति की अवस्था क्यों नहीं प्राप्त होती है, इसका कारण यह है कि हमने स्थिर होना तो सीखा ही नहीं है। मैडिटेशन हमें यह सिखा सकती है। बहुत सारे इसाई कहते हैं कि बाइबिल में मैडिटेशन है ही नहीं, लेकिन मैं तो इसाई सन्तजनों के पास रहा हूँ और उनसे शिक्षा ग्रहण की है। वे बतलाते हैं कि प्राचीन इसाई धर्म में मैडिटेशन के बारे में सब कुछ बतलाया गया है। बाइबिल में बतलाया गया है कि स्थिर हो जाओ। सोचो कि मैं भगवान हूँ। यह कितने अच्छे ढंग से बतलाया गया है कि यदि तुम स्थिर होना सीख लो तो फिर तुम्हें परमात्मा को ढूंढ़ने की जरूरत ही नहीं है क्योंकि परमात्मा तो तुम्हारे अन्दर ही है, बस स्थिर हो जाने से परमात्मा की शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं।

मैडिटेशन तो तुम्हारे निजी जीवन में भी लाभप्रद है क्योंकि जब हम स्थिर होना सीख लेते हैं तो हमारी मांसपेशियों की अकड़ ढीली पड़ जाती है। आज के समय में मांसपेशियों की अकड़न एक बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि इस कारण से हृदय रोग, नाड़ी तन्तु रोग, आदि उत्पन्न हो सकते हैं तथा अल्सर, रक्तचाप, बदहज्मी आदि रोगों के उठ खड़े होने की भी पूरी-पूरी सम्भावना बनी रहती है। यह तो हमें पता ही है कि आज की जीवन शैली बिल्कुल भी सही नहीं कही जा सकती है लेकिन हम लोग प्रायः दूसरों के दोषों को ही देखने में लगे रहते हैं। पत्नी कहेगी कि मेरे पति का व्यवहार ठीक नहीं है, मैं इसीलिए बीमार हूँ। पति कहेगा कि मेरी पत्नी ठीक प्रकार से कार्य नहीं करती है, मैं इसीलिए बीमार हूँ। आज के समय में सारे लोग ही अकेले हैं। हम लोग तब तक अकेले रहेंगे जब तक कि हम स्वयं को खोज नहीं लेते हैं।

हमें यह बात भली प्रकार से जान लेनी चाहिए कि हम अकेले क्यों हैं? हमें अकेलापन कौन देता है? यदि हम अपने अन्दर की गहराई में जाकर देखें तो हमें समझ आएगी कि हम अकेले क्यों हैं? सच्चाई तो यह है कि जो हमें प्यार करते हैं और जिन्हें हम प्यार करते हैं, उनकी वजह से ही हम अकेले हैं। वही हमें अकेलापन देते हैं, हमारे रिश्ते ही हमें अकेलापन देते हैं। हमारे रिश्तों में ही कोई कमी है, न्यूनता है। वास्तविकता तो यही है कि तुम जीवन को रिश्तों से पृथक कर ही नहीं सकते हो और ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम बात को आन्तरिक तौर पर समझ जाएँ तो फिर हमें किसी अस्पताल वगैरह की तो जरूरत ही नहीं रह जाएगी और हम अकेले-अकेले होने के बावजूद भी इकट्ठे ही होंगे तथा हम कभी भी अकेलापन महसूस नहीं करेंगे। यह समचेतनता तभी आ पाएगी जबकि हम स्वयं को सारे स्तरों पर अच्छी तरह से समझ जाएंगे।

'चलता'

रतवाड़ा साहिब में महापुरुषों के प्रवचनों का कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार रतवाड़ा साहिब

(12.00 बजे से 4.00 बजे तक)

(रात्रि 12.00 बजे से प्रातः 4.00 बजे तक)

संक्रान्ति - फाल्गुन, 12 फरवरी, दिन सोमवार।

(प्रातः 5.30 बजे से 8.00 बजे तक)

अमृत संचार - महीने के प्रथम रविवार को गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहिब में सुबह 11.00 बजे होता है।

INTERNET MEDIA AND LIVE TELECAST

Website : www.ratwarasahib.in

Website : www.ratwarasahib.org

Instagram : RATWARA SAHIB (https://instagram.com/ratwara.sahib/)

You Tube : https://www.youtube.com/user/babalakhbirsingh

Facebook : https://www.facebook.com/ratwarasahib1

Twitter : https://mobile.twitter.com/ratwarasahib13

Live Audio Link 1 - https://www.awdio.com/Ratwara Sahib

Live Audio Link 2 - https://mixlr.com/ratwara-sahib

E-mail :- sratwarasahib.in@gmail.com

Contact - 9569455861, 9417912900, 9814612900

आवश्यक निवेदन

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल या दसवंद पंजाब एंड सिंध बैंक की किसी भी शाखा द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में भेजी जा सकती है।

भारत (INDIA)

आत्म मार्ग मैगज़ीन की मैंबरशिप/रिन्यिूवल भेजने के लिए -

VGRMCT / Atam Marg Magajine
S/B A/C No. 12861000000003 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

दसवंद भेजने के लिए -

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
SB A/C No. 12861100000005 RTGS/IFSC Code - PSIB0021286
Branch Code - C1286

विदेश (ABROAD)

Vishav Gurmat Roohani Mission Charitable Trust
Punjab National Bank SB A/C No. 0779000100179603
RTGS/IFSC Code - PUNB0077900 Branch Code - 077900

यदि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा राशि भेजनी हो तो ऊपरलिखित खातों अनुसार **Gurdwara Ishar Parkash Ratwara Sahib, P.O. Mullanpur Garibdas. Distt S.A.S. Nagar (Mohali) - 140901** पर भेजने की कृपा करें। यदि **Online** राशि भेजनी हो तो राशि की जानकारी देते समय अपना नाम व पूरा पता मोबाइल नं. +91-98889-10777 पर **SMS** भेजें जी।

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि आपने अभी तक आत्म मार्ग मासिक पत्रिका की सदस्यता ग्रहण नहीं की है तो आप कृप्या अधोलिखित प्रारूप पत्र को भरकर सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। यदि आप पहले से ही सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं, तो पुनर्नवीनीकरण हेतु इस प्रारूप पत्र के साथ आवश्यक चैक/ड्राफ्ट "VGRMCT/ATAM MARG MAGAJINE" के नाम पर प्रेषित करने की कृपा करें।

Subscription form ✓ ☐ नई सदस्यता ☐ पुनर्नवीनीकरण ☐ आजीवन सदस्यता

within India

Subscription Period	By Ordinary Post/Cheque	By Registered Post/Cheque
1 Year	Rs. 300/320	
3 Year	Rs. 750/770	
5 Year	Rs. 1200/1220	
Life	Rs 3000/3020	

	Annual	Life
U.S.A.	60 US$	600 US$
U.K.	40 £	400 $
Europ	50 Euro	500 Euro
Australia	80 Aus $	800 Aus $

जनवरी ☐ फरवरी ☐ मार्च ☐ अप्रैल ☐ मई ☐ जून ☐ जुलाई ☐ अगस्त ☐ सितम्बर ☐ अक्तूबर ☐ नवम्बर ☐ दिसम्बर ☐

नाम/Name पता/Address.....

.....

.....Pin Code..... Phone ..... E-mail :.....

सन्त वरियाम सिंह चैरिटेबल अस्पताल, रतवाड़ा साहिब

समय - सुबह 9.30 बजे से 2.00 बजे तक (रविवार से शुक्रवार)

डाक्टरों का समय - सुबह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक

दूरभाष नं. 98786-95178, 92176-93845

डा. का नाम	विशेषज्ञ	दिन
1. डा. जसबीर कौर	जनरल मैडिसन	सोमवार
2. डा. श्वेता	फिजियोथेरेपिस्ट	सोमवार से शुक्रवार
3. डा. हरबंस सिंह	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	मंगलवार
4. डा. तेजिंदर सिंह	जनरल मैडिसन	मंगलवार
5. जे.पी.आई. अस्पताल मोहाली के डाक्टर	आँखों के विशेषज्ञ	मंगलवार
6. श्री माइकल जी	एक्स-रे विशेषज्ञ	मंगलवार तथा वीरवार
7. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	बुद्धवार
8. डा. जे. एस. गुजराल	जनरल मैडिसन/शिशु रोग विशेषज्ञ	बुद्धवार
9. डा. आर. एस. संधू	अस्थि रोग तथा जनरल मैडिसन	वीरवार
10. डा. संतोष अनेजा	जनरल मैडिसन	वीरवार
11. डा. एस. के. बांसल	जनरल मैडिसन	शुक्रवार
12. डा. बरिन्दर सिंह	जनरल मैडिसन तथा त्वचा रोग विशेषज्ञ, एअरो स्पेस मैडिसन	शुक्रवार
13. डा. भगत सिंह मक्कड़	जनरल मैडिसन/ई.एन.टी./ब्लॅड शूगर आदि	रविवार
14. डा. जिंदल, डा. गर्ग	जनरल मैडिसन	रविवार
15. डा. गुरप्रीत कौर गिल	होम्योपैथिक	बुद्धवार

-: लैबोरेटरी टैस्ट तथा अन्य सुविधाएँ :-

1. खून टैस्ट, 2. सारे खून सैल काउंट टैस्ट 3. ब्लड शुगर टैस्ट, 4, किडनी टैस्ट, 5. लीवर टैस्ट, 6. लिपिड परोफाइल टैस्ट, 7. थायराइड टैस्ट, 8. हिमोग्लोबिन टैस्ट, 9. पेशाब टैस्ट, 10. स्टूल टैस्ट, 11. ई.सी.जी., 12. एक्स-रे (क्ष-किरण)

सारे लैबोरेटरी टैस्ट आधे शुल्क पर किये जाते हैं तथा मरीज को दवाई मुफ्त दी जाती है।

जरूरी सूचना

प्रत्येक रविवार को अस्पताल खुला रहेगा। समय 11.00 से 1.00 बजे तक। प्रत्येक शनिवार को अस्पताल बन्द रहेगा।

विश्व गुरमत रूहानी मिशन चैरिटेबल ट्रस्ट

के मुख्य संस्थापक प्यारे महापुरुष सन्त बाबा वरियाम सिंह जी द्वारा लिखित व प्रकाशित पुस्तकें

यह पुस्तकें श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी के गूढ़ सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करके जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इनकी विषय वस्तु के रूप में नाम, सेवा व स्मरण की विधियों को प्रस्तुत करते हुए जन साधारण की भाषा का अत्यन्त सरल, मार्मिक व हृदयस्पर्शी प्रयोग किया गया है। यह दुर्लभ पुस्तकें, प्रत्येक जिज्ञासु व साधक के लिए एक अमूल्य निधि के रूप में हैं। अध्यात्मिक सुख व शान्ति प्राप्त करने हेतु आप इन्हें प्राप्त करके स्वयं पढ़ें तथा अन्य श्रद्धालुजनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। यह सभी पुस्तकें गुरुद्वारा ईशर प्रकाश रतवाड़ा साहब में आपकी सेवार्थ उपलब्ध हैं -

हिन्दी	
1. सुरति शबद मार्ग	70/-
2. किव कुड़ै तुटै पालि	35/-
3. बात अगंम की - सात भागों में	400/-
4. किव सचिआरा होइए - भाग पहला	35/-
5. किव सचिआरा होइए - भाग दूसरा	65/-
6. किव सचिआरा होइए - भाग तीसरा	100/-
7. होवै आनन्द घणा	30/-
8. बाबाणियाँ कहानियाँ	50/-
9. सुरतिआं उपजै चाउ	40/-
10. सर्व प्रिय गुरू गोबिंद सिंह जी	10/-
11. भक्त प्रहलाद	10/-
12. अमृत फुहार	10/-
13. अगम अगोचर का मार्ग	70/-
14. जपुजी साहिब सटीक	15/-
15. अमर ज्योतियाँ	15/-
16. अमर गाथा	100/-
17. वैशाखी	10/-
18. साजन चले प्यारिआ	10/-
19. अविनाशी ज्योति - भाग 1	90/-
20. रूहानी गुलदस्ता	70/-
21. चउथै पहरि सबाह कै	60/-

English Version	Price
1. Baisakhi	Rs. 5/-
2. How Rend The Veil of Untruth	Rs. 70/-
C. Discourses on the Beyond -1	Rs 50/-
4. Discourses on the Beyond -2	Rs. 50/-
5. Discourses on the Beyond -3	Rs. 50/-
6. Discourses on the Beyond -4	Rs. 60/-
7. Discourses on the Beyond -5	Rs. 60/-
8. The way to the imperceptible	Rs. 80/-
9. The Lights Immortal	Rs. 20/-
10. Transcendental Bliss	Rs. 70/-
11. How to Know Thy Real Self-(Vol-1)	Rs. 80/-
12. How to Know Thy Real Self-(Vol-2)	Rs. 80/-
13. How to Know Thy Real Self-(Vol-3)	Rs. 110/-
14. The Dawn of Khalsa Ideals	Rs. 10/-
15. A Glimpse of His Holiness - Baba ji	Rs. 5/-
16. Divine Word Contemplation Path	Rs. 150/-
17. The Story of Immortality	Rs. 260/-
18. Why not Contemplate the Lord	Rs. 200/-

ऊपरलिखित पुस्तकें आप जी मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा रतवाड़ा साहिब से मंगवा सकते हैं या ट्रस्ट के अकाउंट में राशि जमां करवा कर मोबाइल नं. 9417214391, 9592009106, 9417214379 पर सूचित कर सकते हैं। **Bank Name : Pb & Sind Bank, A/c Name. VGRMCT/Atam Marg Magajine, S/B A/C No. 12861000000003, RTGS/IFSC Code - PSIB0021286, Branch Code - C1286**